प्रकाशन
वैद्य चन्द्र प्रकाश कैंसर रिसर्च फाउन्डेशन, देहरादून।

विज्ञापन एवं मुद्रित सिक्का अक्सेसरीज प्रेस, देहरादून। फोन नं० 0135-2715748

चन्द्र स्मृति



स्व. वैद्य चन्द्र प्रकाश

चन्द्र स्मृति



स्व. वैद्य चन्द्र प्रकाश



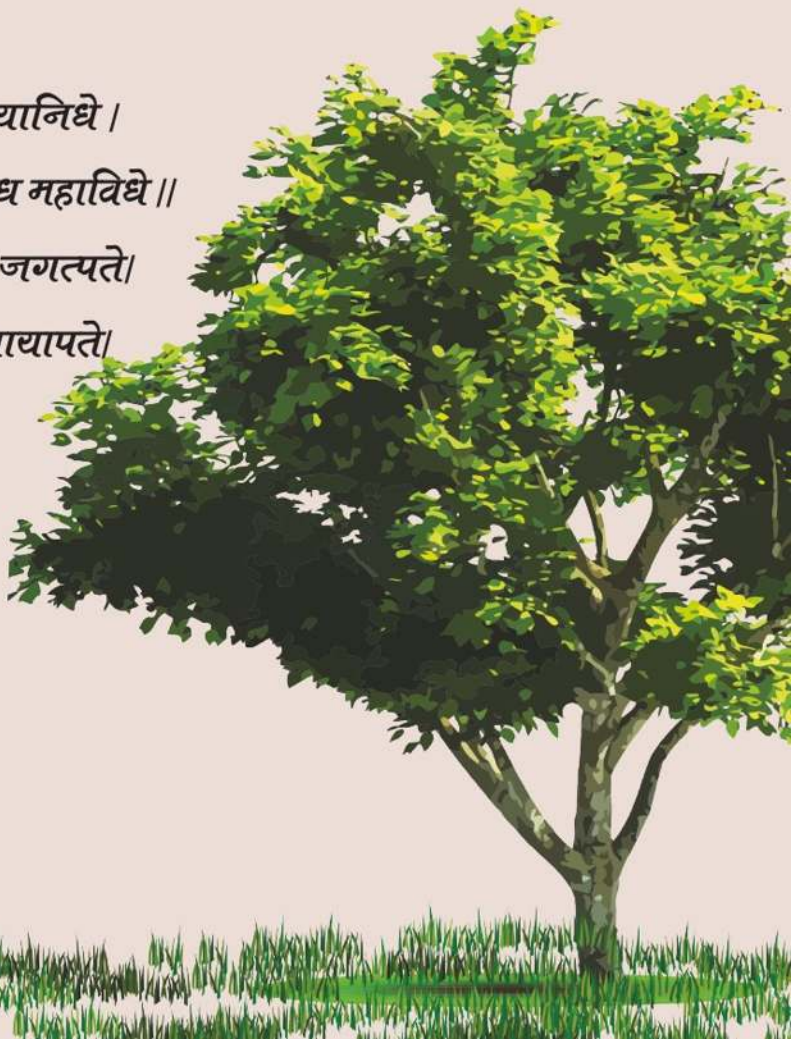
स्वर्गीय वैद्य
श्री चन्द्र प्रकाश

१९१९-१९८४



हे ईश, बहु उपकार, तुमने सर्वदा हम पर किये
उपहार प्रत्युपकार में, क्या दें, तुम्हें इसके लिए ॥
है क्या हमारा सृष्टि में सब कुछ तुम्हीं से है बनी
सतत ऋणी हैं, हम तुम्हारे, तुम हमारे हो धनी ॥

जय दीन बंधो, सौख्य सिन्धो, देव देव दयानिधे।
जय जन्म मृत्यु, विहीन शाश्वत, विश्व बन्ध महाविधे ॥
जय पूर्ण पुरूषोत्तम जनार्दन, जगन्नाथ जगत्पते।
जय जय विभो, अच्युत हरे , मंगल मते, मायापते।
त्राहि माम् त्राहि माम् त्राहि माम् ॥



दो शब्द.....

दादी ने कहा था...

मेरा जन्म अक्टूबर 1985 में हुआ था। ठीक एक वर्ष पूर्व 13 दिसंबर 1984 को दादाजी ने अपना शरीर छोड़ दिया था। मैंने कभी दादाजी को नहीं देखा, पर दादी ने उनके प्रत्यक्ष रूप को अपनी कहानियों के माध्यम से साझा किया। जिस व्यक्ति को कभी न देखा, सुना, महसूस किया उसके बारे में लिखना कठिन है, पर मुझे ऐसा लगता नहीं जैसे दादाजी मेरे लिए अनजान थे, क्यूंकि दादी की कहानियों में मेरे दादाजी हमेशा जीवंत थे। दादी कहती थी - तुम्हारे दादाजी बहुत सुन्दर थे - ये गोरे चिट्टे, लम्बे, सुडौल व्यक्तित्व था उनका। खादी का धोती-कुर्ता पहनते थे। सर्दियों में गर्म चादर उन्हें ओढ़ना पसंद था। खाने के शौकीन थे। इसी वजह से रसोईघर में हमेशा कुछ न कुछ बनता ही रहता था। दूध, दही, माखन, छाछ बेहद पसंद था उन्हें। घर पर हमेशा गाय रही। सुबह उठकर सानी से लेकर दूध निकालना, सारा काम खुद ही करती। दादाजी को पीतल के बड़े गिलास में झागवाला दूध शक्कर के साथ पीना बहुत पसंद था। हमेशा से ही सेहत को लेकर सचेत रहते थे। खूब जमकर व्यायाम करते। कसरत करना, दण्ड पेलना और तेज़ चलना उनका नियम था। खूब ठहाके लगाकर हँसते थे। मज़ाक करना उनकी आदत थी, लोगों का मन लगाए रखते थे।

एक दिन मैंने दादी से पूछा, आपकी दादाजी से शादी कैसे हुई? आप तो बिहार में थे और दादाजी मेरठ जिले के गाँव छबड़िया के रहने वाले थे। दादी ने फिर छोटी सी कहानी सुनाई, तुम्हारे दादाजी मेरे पिताजी के एक कार्यक्रम में शामिल हुए थे। सभा के बाद बातचीत में पता चला उन्होंने 14 वर्ष की आयु में घर छोड़ दिया था क्योंकि गाँव के लड़कों के साथ मदिरापान व धूम्रपान की खबर उनकी माताजी को मिली। जिसे सुनकर वह आग बबूला हो गयी। माँ ने गुस्से में आकर उनसे यह कह दिया कि अगर मेरा बेटा है तो मुझे कभी अपनी शक़्ल नहीं दिखायेगा। उसी समय उन्होंने घर छोड़ दिया था और फिर वापिस नहीं गए।

दादाजी का जहाँ ज़िक्र छिड़ता, पूजनीय गुरु महाराज जी को भी दादी याद करतीं। महाराज जी का दादा जी के जीवन में विशेष योगदान और महत्व रहा। गुरु-शिष्य की एक अनोखी जुगलबन्दी देखी थी उन्होंने। दोनों गुरु-चेला पत्रों के माध्यम से बात करते। दवाई तैयार करने से लेकर, रोगियों के रोगों के बारे में विमर्श करना, परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य सम्बन्धी, सभी कुछ महाराज जी से पत्रचार या साक्षात् रूप में भेंट करके जानते थे। एक अच्छे गुरु की तरह अपने शिष्य का मनोबल बढ़ाया। एक बार जब तुम्हारी पूनम बुआ को अचानक दिखना बन्द हो गया, तब महाराज जी की बहुत साल पहले दी हुई औषधि ने चमत्कार दिखाया। इसी तरह जब मुझे चेचक ने चपेट में लिया, तब भी महाराज जी के सुझाई औषधि ने मुझे जीवनदान दिया। उस समय तुम्हारे दादा जी ने मेरी सेवा की - सुबह एक छोटी बाल्टी में गाय का ताजा दूध, एक सेर घी अपने सामने पिलाते थे।

दादी बताती थीं कि दादाजी अपनी छोटी-बड़ी बात डायरी में लिखते थे, जैसे खर्च का हिसाब, दिनचर्या, भाव, और रोगियों का रिकॉर्ड, दवाइयों के नुस्खे आदि। एक डायरी से उनके पशु-प्रेम के बारे में वृत्तांत मिला। दादाजी को गाय से बहुत लगाव था। इस बात का उनकी डायरी में भी उल्लेख है। लिखते हैं--700 रूपए नकद देकर गाय ले आया। आज गाय की खोर बनाई, उसकी तराई की। समय मिलने पर गाय को नौचंदी घुमाने ले गया। एक जगह गाय की बीमारी का वर्णन है। लिखा है-गाय उदास है। गाय को ज्वर हुआ। गाय की दशा पूर्ववत् है, ज्वर $106^0/107^0$ के मध्य है। स्वास की गति पूर्व की भाँति है। कुछ खाया नहीं, जुगाली भी नहीं की। इसी तरह कुछ दिन तक गाय की तबियत के बारे में लिखते रहे। 5 अगस्त 1975 को शाम 07:30 बजे गाय का देहांत! लगभग 08:30 बजे रात्रि साँवली सलोनी सूरत घर से सदा के लिए विदा। हरी इच्छा बलवती है! गाय जाने से मन उदास है। घर सूना हो गया है।

उनके देहवासन के 35 सालों बाद भी वह हमारे बीच हैं। अपने कार्य, स्वभाव व व्यक्तित्व से उन्होंने कहीं न कहीं हम सभी को प्रभावित किया है। आशा है, इस पुस्तिका के माध्यम से आप सभी उनके इस अनूठे व्यक्तित्व से साझा हो सकेंगे।

मेघा प्रकाश
(पौत्री)

वैद्य चन्द्र प्रकाश : जीवनी

भारतवर्ष के उत्तरीय प्रदेश में, राजधानी दिल्ली से 90 कि.मी. उत्तर पश्चिम में सरधना कस्बांतर्गत ग्राम छबड़िया में सन् 1919 में लाला नंदलाल के घर, जब उनकी छठी संतान ने जन्म लिया, तब किसको ज्ञात था कि यह बालक किन-किन विचित्र परिस्थितियों से निकलता, जूझता आने वाली पीढ़ी के लिए चिकित्सा एवं रसशास्त्र के क्षेत्र में अनुसंधान का एक व्यापक व बहुआयामी अध्याय खोल जाएगा।

ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति भारतीय जनमानस में विद्रोह के स्वर शनैः-शनैः मुखर हो रहे थे। भारतवर्ष के ग्रामों में जमींदारी प्रथा मौजूद थी। जमीदार अर्थात् ब्रिटिश शासकों का कृपापात्र बन एक बड़ी सी भूमि का मालिक। उसी कड़ी में था स्वर्गीय वैद्य चंद्र प्रकाश के पितामह का परिवार।

बचपन को याद करते हुए कई बार जमींदारी शान-शौकत का वर्णन उनके मुंह से सुना, जिसमें सेवकों से भरा आँगन, तराजू में तुलती गिन्नीयाँ, गांव के लोगों का दरबार तथा रईसी के अनेक ठाट-बाट शामिल थे। उसी रईसी का एक शौक है-सट्टा अर्थात् जुआ। देखते ही देखते बालक चंद्रप्रकाश को अपनी आकर्षक मुखाकृति के कारण चाँद के नाम से जाना जाने लगा। होश संभले, इससे पूर्व ही अचानक अपने पिता द्वारा सट्टा में गँवाई पूंजी के कारण उनका गरीबी के वातावरण में बड़ा होना शुरू हुआ।

एक दृष्टांत और-शिशु चाँद को लेकर माँ खेत में काम करते समय पेड़ की छाया में लिटा छोड़ती है। दोपहर के निस्तब्ध व नीरव वातावरण में अचानक कोई चिल्लाता है, "देखो-देखो भेड़िया एक बच्चे को लेकर भागा जा रहा है।" खेत में काम करती औरत अपने बच्चे की तरफ लपकी और एक माँ की दुःख भरी चीख निकली, "अरे मेरा चाँद! मेरे कलेजे का टुकड़ा! अरे कोई है, बचाओ!" चारों तरफ से आवाजें, भगदड़ और ईश्वर की इच्छा के आगे भूखा भेड़िया अपने शिकार से वंचित हो, बालक चाँद को हानि रहित खेत में छोड़ भाग खड़ा हुआ। "जाको राखे साँइयां मार सके ना कोय"। विधि का विधान तो कुछ और ही तय था।

बालक चाँद के पितामह सन्यासी बन बैठे। दूर-दूर से साधुओं को बुलाना, उनकी सेवा करना उनका धर्म एवम् शौक बन गया। घुमंतू साधुओं को रात्रि विश्राम हेतु उन्होंने एक गोशाला, विश्राम शाला कपसाड ग्राम में निर्मित की। वहां एक दिन उनसे आ टकराई वर्तमान के मेरु रज्जू अर्थात् 'महाराज जी'। पौत्र चंद्र प्रकाश का सन्यासी बने पितामह ने ब्रह्मचारी महाराज जी से परिचय कराया। प्रथम दृष्टवा मुलाकात और ब्रह्मचारी जी का सीधा आग्रह कि इस बालक को हमें दे दो, हम इसे वैद्यक का ज्ञान देना चाहेंगे। अंकित हो गई यह पंक्तियां नन्हे चंद्र प्रकाश के मस्तिष्क पटल पर।

ब्रह्मचारी जी कपसाड आते-जाते रहे। नौजवानी की उम्र, अथक परिश्रम, दिन-रात योग साधना, औषधि निर्माण तथा बचे समय में रोगियों की निःशुल्क सेवा-सुश्रुषा ने ब्रह्मचारी जी को रहस्यमयी एवं चमत्कारी बना दिया। बालक चंद्र प्रकाश के मन पर गहरी होती गई। ब्रह्मचारी जी की छाप और बढ़ता गया; वैद्यक के प्रति एक अनचाहा आकर्षण।

गाँव का स्वच्छंद वातावरण, अल्हड़ किशोरवय और किंचित उत्सुकता से वशीभूत होकर चंद्र प्रकाश द्वारा अन्य साथियों के साथ एक बार मद्यपान कर लिया गया। मद्य का

असर हुआ मस्तिष्क पर, जो होश खो बैठा। इसी बेसुधी की हालत में किसी ने यह कह सुनाया चाँद बाबू के घर पर कि चाँद (चंद्र प्रकाश) शराब पीकर बेहोश पड़ा हुआ है। खानदान की गरिमा को ठेस लगी। चाँद की माँ आत्मग्लानि से भर उठी। होश में आते ही व्यथित व क्रोधित माँ ने सवाल दागा कि क्या तूने शराब पी? सत्य के पुजारी ने निर्भीक हो जवाब दिया, "हाँ मां! पर गलती हो गई, माफ कर दे"। माँ होनी के हाथों मजबूर थी। अपनी ममता को छोड़ उसे तो वही करना था जो नियति ने उसके व किशोर के भाग्य में लिखा था। वह क्रोधित हो उठी, बोली अगर तुमने सचमुच मेरी कोख से जन्म लिया है और अपनी माँ का दूध पिया है तो चला जा मेरी आँखों से दूर और मेरे जीते जी अपना मुँह ना दिखाना। भयभीत चंद्र प्रकाश ने काफी प्रयत्न किया माँ को समझाने का, डिगाने का परंतु ना जाने कैसे उस घड़ी में माँ निर्मोही हो उठी थी। विधाता मुस्कुरा रहा था अपने विधान पर और फिर उठा किशोर चंद्र प्रकाश के मन में आत्म गौरव, निज स्वाभिमान, माँ के वचनों का लाज और माँ के वजूद के लिए वह चल पड़ा अपनी माँ से, घर से, परिवार से मुँह मोड़कर एक अनजान भविष्य की ओर। ना दिशा थी, ना साथी और ना ही साधन।

नन्हे कदम, किंतु स्वाभिमान से परिपूर्ण, शनैः-शनैः घर से दूर करते गए। बाल्यकाल की स्मृतियां एवं दबी-दबी सिसकियो के बीच, भूखे व थके शरीर को अपने कदमों से घसीटता हुआ वो कब अपने भाग्य विधाता के पास कैसे पहुँचा यह ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

इस घटना से ब्रह्मचारी जी का योगिक ज्ञान पूर्व परिचित है। थके किशोर को अपने पैरों से उठाकर वक्षस्थल से लगाते हुए अचानक



आयुर्वेदाचार्य श्री कृष्णदेव जी चैतन्य पाराशर
"यायावर ऋषि"

उसके मुख से शब्द निकलते हैं, "अरे तू चंद्रप्रकाश नहीं है, तू तो रामचरण है। तेरे हाथों में मेरी डोर बँधी है, जैसा चाहे नचा ले, मुझे करना ही पड़ेगा, जैसे पूर्व जन्म के संस्काराधीन योगी महाराज अपने ऋणों या कर्तव्यों से मुक्त होना चाहते हों। इस प्रकार दो-तीन दिन ब्रह्मचारी जी के सानिध्य में रहकर एक दिन संध्याकाल में योग साधना की समाप्ति के पश्चात् चंद्रप्रकाश ब्रह्मचारी से अपनी सुषुप्त इच्छा प्रकट करता है कि मुझे अपना शिष्य बना ले और मैं वैद्य बनना चाहता हूँ। ब्रह्मचारी जी हँसे, बोले "अरे हमारे पास ना घर है, ना साधन। अभी तुम्हारी आयु ही क्या है? प्रारंभिक शिक्षा व आयुर्वेद का विधिवत् विद्यालय से अध्ययन कर हमारे पास आओ तो हम तुम्हें अपना अनुभव प्रदान कर सकते हैं"। फिर अपने शिष्य के दृढ़निश्चय को एवं भविष्य को जानते हुए भी ब्रह्मचारी ने कहा कि बेहतर

होगा, घर वापस चले जाओ। किशोर चंद्र प्रकाश का चेहरा तमतमा उठा, मुख से कठोर वाणी प्रस्फुटित हुई, "महाराज जी, क्षमा करें! चंद्रप्रकाश केवल एक बार निश्चय करता है, परिणाम कुछ भी हो, मुझे ज्ञान एवं गुरु दीक्षा की अपेक्षा है, पलायन के उपदेश की नहीं"। और मन ही मन मुस्कुराते गुरु महाराज अपने अनूठे शिष्य की मुखाकृति को देख भाव -विभोर हो उठे। किशोर चंद्र प्रकाश ब्रह्मचारी महाराज के विधिवत् शिष्य बन बैठे।

भारतीय परंपरानुसार, शिष्य के लिए आवश्यक है गुरु की सेवा, गुरु के वचनों का अक्षरत: पालन, गुरु-दक्षिणा, गुरु से बड़ा न कोई की भावना का अंत: व बर्हिमन में सतत प्रवाह। गुरु का आदेश था "जाओ शिक्षा अर्जन करो"। गुरु की जीविका निर्भर थी भिक्षा पर। नाथ संप्रदाय के गुरु अपने अतिरिक्त किसी के लिए भिक्षा नहीं लेते। दिन मे एक बार भिक्षावृत्ति के लिए जाना, जो भी प्रथम द्वार से मिल गया उसी को एक बार लेकर शरीर का पालन करना और यदि किसी द्व ार से ना हुई तो उसके द्वार पर दोबारा ना जाना। अत: चंद्र प्रकाश को इस अवस्था में भोजन का प्रबंध स्वयं ही करना था। गुरु महाराज का आवास निश्चित ना था, कुछ साल पचैंडा ग्राम (जिला मुजफ्फरनगर) के मंदिर में, कभी कोटा स्थित अपनी कुटिया, कभी ग्राम राजपुरा स्थित किसी भद्र द्वारा प्रदत्त कुटिया में निवास और कभी हिमालय की कंदराओं में अज्ञातवास। महाराज जी योग साधना हेतु कठोर तप कर रहे थे। पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन - इसमें स्त्री विचार, स्त्री भाषज्, स्त्री दर्शन एवं स्त्री स्मरण ही वर्जित है। कर्मेंद्रिय, ज्ञानेंद्रिय एवं उभेयन्द्रिय को वशीभूत करना योग का प्रथम चरण है। हठ योग, योगासन, प्राणायाम, समाधि सदृश विभिन्न क्रियाओं के द्वारा योगी मन की गति को निष्क्रिय करते हैं।

शरीर में किसी भी प्रकार की वासना या इच्छा का होना, योगी की पराजय है। इसका दंड मिलता है शरीर को। इसीलिए कभी ब्रह्मचारी अपने शरीर को शुद्ध करने हेतु गर्मी भरी दोपहरी में मीलों दौड़ते, कभी महीनों निर्जल उपवास या मौन व्रत करते। स्त्री की छाया भी ना दिखे इसलिए उसकी उपस्थिति ज्ञात होते ही पीठ फेर लेना तथा प्रात: सांय यज्ञ एवं योगासनों के मध्य ईश्वर की साधना। बड़ी विचित्र एवं विकट थी ब्रह्मचारी की साधना।

चंद्र प्रकाश मंत्रमुग्ध था, सम्मोहित हो उठा था, अपने गुरु के व्यक्तित्व से। साधारणतया साधु केवल ईश्वरीय साधना में लीन रहकर मोक्ष प्राप्ति हेतु अर्थात् जीवन-मरण के दुष्चक्र को समाप्त करने हेतु उपाय करते हैं। मोक्ष अवस्था किसी भी जीवात्मा का परम पद है। एक ऐसी अवस्था जब जीवात्मा परमात्मा के साथ लीन हो जाती है। जैसे एक पानी की बूंद (जीवात्मा), सागर (परमात्मा) मे लीन होकर अपना अस्तित्व सदैव के लिए खो देती है।

फिर शुरू होती है चंद्र प्रकाश की जीवन यात्रा। ईश्वरीय प्रेरणा, अदम्य साहस, कुछ करने की दृढ़ इच्छा एवं स्वाभिमान उनकी पूंजी है। गुरु का आदेश पालन उनका कर्तव्य। बड़ी विचित्र एवं विकट परिस्थिति है। ठीक ही तो है "श्रेयान्सि बहुनानि विघ्नानि"।

ब्रह्मचारी जी की मान्यता थी कि संपूर्ण साधना से मोक्ष केवल उन्हीं को प्राप्त होगा। फिर मनुष्य जीवन से क्या लाभ? अपने लिए तो पशु भी जीते हैं। फिर अपनी साधना हेतु भिक्षावृत्ति लेना, दूसरों पर अनावश्यक बोझ

बनना है। सन्यास एवं गृहस्थ के मध्य एक मार्ग निकाला गुरु महाराज ने जन-जन की सेवा-सुश्रुषा। महाराज जी प्रातः सांय समाधि धारण करते और कर्म योग धारण कर नई-नई औषधि बनाते। औषधि की सामग्री कभी कोई शिष्य या आतुर लाता। महाराज जी अपनी बुद्धि व बल का प्रयोग कर उसे आने वाले रोगियों को देते। असाध्य एवं मृतप्राय रोगियों को जीवन देकर महाराज ऋण मुक्त होते थे उन भेटों के प्रति जो मात्र उनके उदर की क्षुधा पूर्ति हेतु भद्रगण मीलों दूर से श्रद्धावश लाते थे। बड़ा विचित्र था ब्रह्मचारी का भोजन, गौ का फीका दूध एवं पका केला। आने वाले को प्रसाद के रूप में मिलती थी शेष बची सामग्री। गांव के बच्चे महाराज से पका केला लेकर झूम उठते थे। स्वावलंबी व आत्म सम्मानी गुरु जिसने मोक्ष साधना के साथ आतुर जनों की सेवा का व्रत भी ले रखा था। चंद्र प्रकाश का भविष्यदृष्टा, विधाता के विधान को पूर्ण करने हेतु कटीबद्ध था। गुरु का आदेश हुआ कि चंद्रप्रकाश अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करो। तुम साधक हो पुरुषार्थ, दृढ़इच्छाशक्ति, ईमानदारी एवं धैर्य रूपी पूंजी को लेकर इस विश्व में तुम्हें निज गौरव प्राप्त करना है। तुम्हें हमसे अनुभव व व्यवहारिक ज्ञान प्रदान होगा। जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं के लिए तुम्हें स्वयं ही प्रयास करना होगा, अतः जाओ बहादुर चंद प्रकाश हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

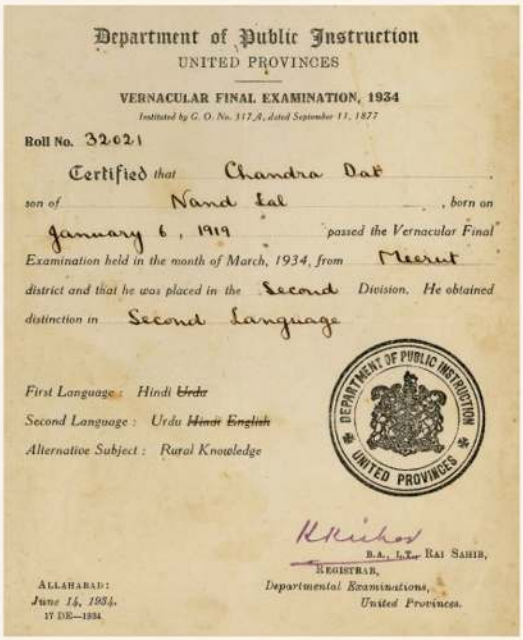
जिस प्रकार बाढ़ की विभीषिका में बहता जीव अपनी रक्षा हेतु तिनके का सहारा लेता है, उसी प्रकार मायावी संसार में बेसहारा चंद्र प्रकाश ने अपने स्वप्नों व अस्तित्व की रक्षा हेतु बेबस मन, व्याकुल आत्मा के साथ अपने बड़े भाई स्वर्गीय बाबू राम के साले डॉक्टर मंगल देव, खुर्जा निवासी के घर शरण ली। डॉक्टर साहब समस्त घटना से परिचित थे। सहृदय किंतु सख्त मिजाज तथा अनुशासन प्रिय थे। चंद्र प्रकाश से उन्हें स्नेह था। खुर्जा स्थित संस्कृत विद्यालय में चाँद बाबू की मैट्रिक की पढ़ाई प्रारंभ हुई। दो वर्षो तक खुर्जा में डॉक्टर मंगल देव के साथ घर में रहकर अव्वल दर्जे के साथ मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की।

स्वावलंबन का अध्ययन चल ही रहा था कि 1934 में जन्मदात्री माननीया मां के देहावसान का समाचार मिला। माँ दमा रोग से पीड़ित तो थी ही, बेटे के विद्रोह से और टूट चुकी थी। अपनी प्रतिज्ञावश वह अपने ही बालक को दर-दर भटकने के लिए मजबूर कर बैठी थी; आखिर कब तक जीतीं। माँ की मीठी यादों को संजोए किशोर चंद्र प्रकाश अपनी जन्मस्थली पर पहुँच लिपट-लिपट रो पड़ा उन स्थानों पर जहां माँ बैठती थी, घूमती थी। माँ जी बहुत दूर जा चुकी थी, अपनी कोख से जन्मे इस लाडले की दशा देखकर संभवतः रोई भी होंगी और गौरवान्वित भी हुई होंगी। रोई तो इसलिए कि बेटा तड़प रहा था और गौरवान्वित इसलिए कि कोख की लाज रखी तो इसी बेटे ने।

माँ का निधन भी अब चंद्र प्रकाश की प्रतिज्ञा को डिगा ना सका। खुर्जा के पढ़ाई के पश्चात् वह पुनः ब्रह्मचारी जी के सम्मुख उपस्थित हुए। महाराज जी ने इंटर करने का आदेश दिया। आदेश शिरोधार्य था। दो वर्ष रिश्तेदारी में रहकर सहारा तो चंद प्रकाश को अवश्य मिला था, लेकिन स्वाभिमानी चंद्र प्रकाश के हृदय में कुछ चुभ भी रहा था। अतः मन ही मन ठाना कि बेशक भिक्षावृत्ति क्यों न करनी पड़े, मैं अपनी जिंदगी स्वयं ही जीऊँगा। इसी प्रवाह में अगला किनारा था सहारनपुर।

ठहरने के लिए एक मंदिर में जीने के नीचे जगह मयस्सर हुई, जो कि सड़क पर लगी

रोशनी से प्रकाशमान रहती थी। जिसका नाम ही चंद्र प्रकाश अर्थात् चाँद की रोशनी, उसके लिए बल्ब का प्रकाश पर्याप्त था शिक्षा ग्रहण करने हेतु। ईश्वर ने दृढ़ संकल्प देखा तो सहारा भी दिया। कहा भी गया है "God helps those who help themselves". सहारनपुर के एक सेठ ने उनकी विद्वत्ता व लगन से प्रभावित होकर अपनी लड़की के टयूशन का भार उनको सौंपा और साथ-साथ एक समय के भोजन की व्यवस्था भी अपने घर पर ही की। चंद्र प्रकाश पर अपने गुरु की दिनचर्या का गहरा प्रभाव था। साधनों की कमी व आर्थिक अभावों ने उन्हें और मुखरता दी थी। इसी कड़ी में उन्होंने एक



Department of Public Instruction
UNITED PROVINCES

VERNACULAR FINAL EXAMINATION, 1934
Instituted by G. O. No. 317/A, dated September 11, 1877

Roll No. 32021

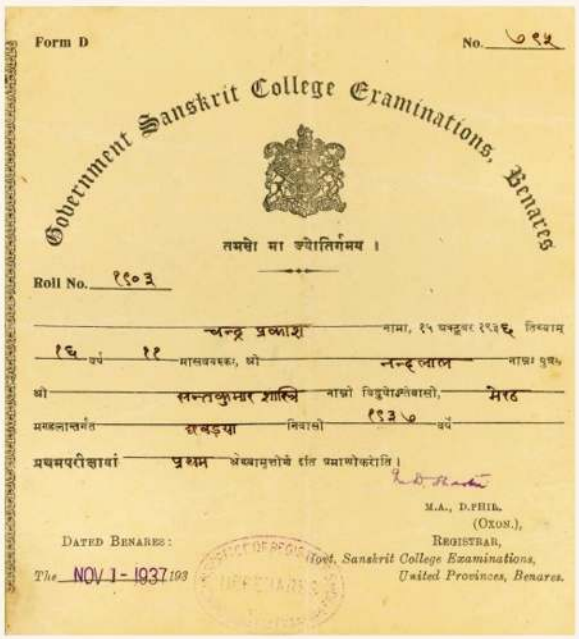
Certified that Chandra Dat
son of Nand Lal, born on
January 6, 1919 passed the Vernacular Final
Examination held in the month of March, 1934, from Meerut
district and that he was placed in the Second Division. He obtained
distinction in Second Language

First Language : Hindi ~~Urdu~~
Second Language : Urdu ~~Hindi English~~
Alternative Subject : Rural Knowledge

DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION * UNITED PROVINCES *

B.A., L.T. Rai Sahib,
Registrar,
Departmental Examinations,
United Provinces.

Allahabad:
June 14, 1934.
17 DE—1934



Form D No. ७९५

Government Sanskrit College Examinations, Benares

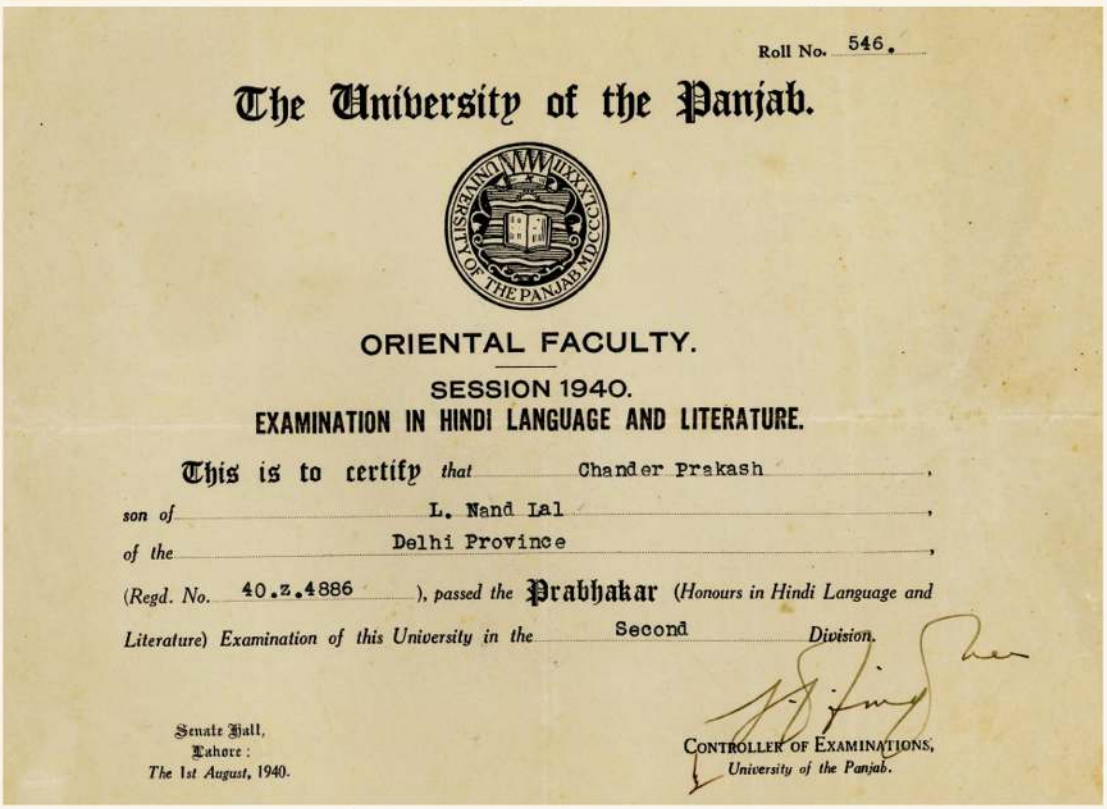
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

Roll No. १९०३

चन्द्र प्रकाश नामा, १५ अक्टूबर १९३६ निष्पाम्
१६ वर्ष ११ मासवयस्कः, श्री नन्दलाल नाम्नः पुत्रः
श्री सन्तकुमार शास्त्रि नाम्नो विद्यार्थिनिवासी, मेरठ
मण्डलान्तर्गत राबड़या निवासी १९३७ वर्षे
प्रथमपरीक्षायां प्रथम श्रेण्यामुत्तीर्णे इति प्रमाणीकरोमि ।

M.A., D.PHIL. (OXON.),
Registrar,
Govt. Sanskrit College Examinations,
United Provinces, Benares.

Dated Benares:
The NOV 1 - 1937 193



Roll No. 546.

The University of the Panjab.

ORIENTAL FACULTY.

SESSION 1940.
EXAMINATION IN HINDI LANGUAGE AND LITERATURE.

This is to certify that Chander Prakash,
son of L. Nand Lal,
of the Delhi Province,
(Regd. No. 40.2.4886), passed the Prabhakar (Honours in Hindi Language and Literature) Examination of this University in the Second Division.

Senate Hall,
Lahore:
The 1st August, 1940.

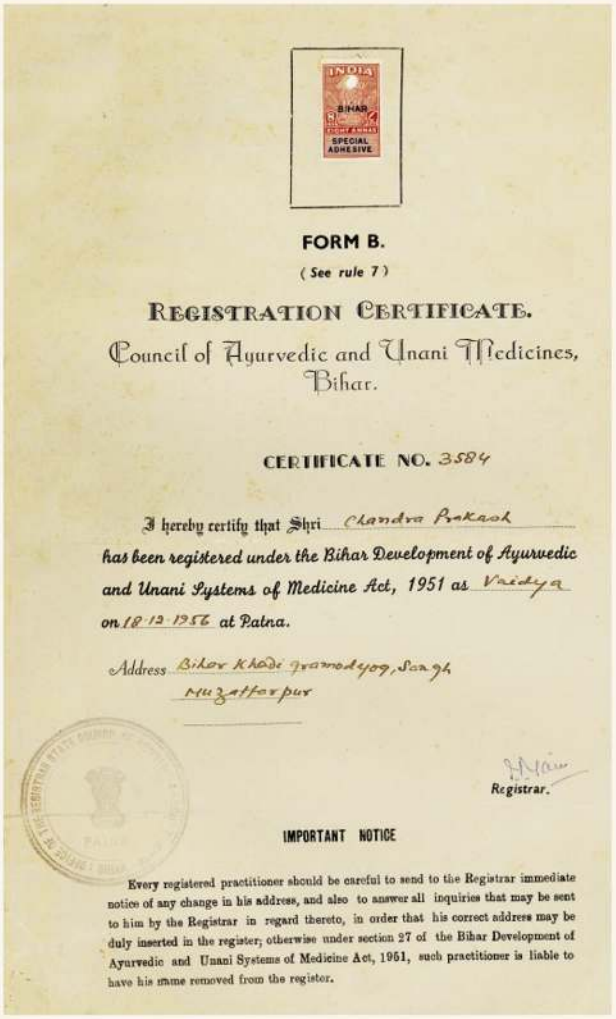
Controller of Examinations,
University of the Panjab.

वैद्य चन्द्र प्रकाश जी के प्रमाण पत्र

काल भोजन लेने की परंपरा डाल ली थी । इस आयु में ऐसी विचित्रता देखकर एक दिन सेठ ने पूछ ही लिया, "अरे मास्टर! एक ही समय क्यों खाते हो?" स्पष्ट उत्तर मिला कि "जब अन्न एक ही समय मिलता है शेष समय मिलना निश्चित नहीं होता तो क्यों ना मैं ही अन्न का त्याग कर दूं"। सेठ मुस्कुरा भर रह गया।

इस प्रकार मंदिर में साधु मंडली, विद्यालय में सहपाठियों के बीच कठिन श्रम एवं कठोर ब्रह्मचर्य को धारण करते हुए चंद्रप्रकाश ने साधनों का नितांत अभाव होते हुए भी, अथक पुरुषार्थ एवं सच्ची लगन से इंटर की दो परीक्षा एक साथ उत्तीर्ण की - हिंदी प्रभाकर और इंग्लिश विषय के साथ।

अब क्या करें! गुरु जी की वाणी कानों में गूँज उठी। बड़ा होनहार बालक है। पुनः मुखदर्शन की इच्छा बलवती हो उठी, गुरु की प्रेरणा जो ठहरी। भद्र की परीक्षा की घड़ी थी। शिष्य चंद्र प्रकाश पैसा रहित था। कहीं से कोई दमड़ी ना मिली। प्रबल इच्छा के वशीभूत सहारनपुर से मुजफ्फरनगर और फिर पचैंडा ग्राम तक पैदल ही जाने की ठानी। नौजवान होते चंद्रप्रकाश के कदम बढ़ते गए, सपनों का ताना-बाना बुनने। कल्पनाशील मन ने विचार किया कि रात्रि में किसी रिश्तेदार के यहाँ भोजन व विश्राम कर कल पुनः यात्रा प्रारंभ करूँगा। परंतु, वाह रे मानव! रिश्तेदारों ने खाना तो दूर, रात्रि विश्राम से भी किनारा कर दिया। रात्रि एक मंदिर के चबूतरे पर बिताकर किसी प्रकार भूख से ऐंठती अपनी अंतड़ियों के साथ, पैर में छाले लिए जब क्लांत चंद्रप्रकाश अपने गुरु के चरणों में जा गिरा तो ब्रह्मचारी भी उसे पहचान न पाए। चंद्रप्रकाश का गला भर आया रुँधे गले से बेवस आवाज निकली - "बुरे वक्त में आपने



INDIA BIHAR SPECIAL ADHESIVE

FORM B.

(See rule 7)

REGISTRATION CERTIFICATE.

Council of Ayurvedic and Unani Medicines, Bihar.

CERTIFICATE NO. 3584

I hereby certify that Shri Chandra Prakash has been registered under the Bihar Development of Ayurvedic and Unani Systems of Medicine Act, 1951 as Vaidya on 18-12-1956 at Patna.

Address Bihar Khadi Gramodyog, Sangh Muzaffarpur

Registrar.

IMPORTANT NOTICE

Every registered practitioner should be careful to send to the Registrar immediate notice of any change in his address, and also to answer all inquiries that may be sent to him by the Registrar in regard thereto, in order that his correct address may be duly inserted in the register; otherwise under section 27 of the Bihar Development of Ayurvedic and Unani Systems of Medicine Act, 1951, such practitioner is liable to have his name removed from the register.

भी मुझे भुला दिया।" महाराज जी चौंके और बोले - अरे चंद्ररू! और उठाकर अपने गले लगा लिया। गुरु शिष्य का मिलन अद्‌भुत था। दोनों एक दूसरे के पूरक हो उठे थे, अश्रुओं का मिलन हो रहा था।

थके चंद्रप्रकाश को अपनी आत्मा का संदेश देकर महाराज ने अपने शिष्य का कटोरे भर दूध से आवभगत किया। कुछ सफर की थकान, भूख की व्याकुलता तथा महाराज जी का आत्मीय स्पर्श सब ने मिलकर नौजवान चाँद को बेसुध कर दिया। आँख खुली तो शरीर तप रहा था, तीव्र ज्वर का प्रकोप हुआ था। महाराज जी ने अपने पौधे की सेवा-सुश्रुषा प्रारंभ की। दिव्य स्पर्श, अद्‌भुत् औषधि एवं सतत परिचर्या ने चंद दिनों में स्वास्थ्य लाभ दिया।

पुन: महाराज जी का आदेश हुआ, "जाओ, कहीं से वैद्यक की डिग्री लेकर आओ।" गंभीर समस्या थी। पराधीन भारत में अंग्रेज अपनी चिकित्सा पद्धति का प्रचार कर रहे थे। वैद्यक कुछ बड़े शहरों तक सीमित थी। उत्तर भारत में लाहौर ही निकटतम स्थान था। गुरु जी द्वारा आर्थिक सहयोग लेकर चंद्रप्रकाश लाहौर पहुंचे। पुन: वज्रपात हुआ। आयुर्वेदिक विद्यालय के प्राचार्य ने प्रवेश देने से मना कर दिया। भयंकर आर्थिक अभाव था।

ब्रिटिश साम्राज्य में आयुर्वेदिक शिक्षा अध्ययन का तरीका निराला था। छात्र को गुरु के द्वारा सुनी हुई विद्या को आत्मसात् कर परीक्षा देनी होती थी, जो प्राय: मौखिक ही होती थी। कक्षा में जाना आवश्यक था। दृढ़ निश्चयी एवं गुरु आज्ञापालक चंद्रप्रकाश ने प्रधानाध्यापक से विनय-याचना की कि मैं अपने गुरु आदेश के वशीभूत वैद्यक पढ़ने आया हूँ। या तो आप अपनी अनुमति दें, अन्यथा मैं कक्षा के दरवाजे पर खड़ा होकर ही शिक्षा ग्रहण कर परीक्षा दूँगा।

आखिर सच्ची लगन की जीत हुई। चंद्रप्रकाश को कक्षा में जाने की अनुमति प्राप्त हुई। कुछ पाठ्य पुस्तकों का प्रबंध भी विद्यालय से हुआ। चंद्रप्रकाश की आयुर्वेद में निष्ठा तथा लगन देखकर शीघ्र ही विद्यालय में निवास तथा प्राचार्य के घर पर भोजन की विशेष व्यवस्था की गई। इस प्रकार ईश्वरीय प्रेरणावश प्राप्त हुए सहयोग द्वारा चंद्र प्रकाश ने वैद्यक की सबसे छोटी डिग्री गुरु के आदेशानुसार प्राप्त कर पुन: गुरुस्थली की ओर प्रस्थान किया।

गुरु महाराज अपनी योजना को फलीभूत होते देख गदगद थे। आखिरकार गुरुजी को विधाता के विधानुरूप विद्या का स्थानांतरण जो करना था। एक खरल व एक मूसली चंद्र प्रकाश के हाथों में पकड़ाकर महाराज जी ने कुछ नुस्खे भी दिए यथा-संजीवनी वटी, गोदंती भस्म, हरित्क्यादि चूर्ण आदि। पुरुषार्थी शिष्य ने महाराज के सानिध्य में तीव्र गति से औषधि निर्माण प्रारंभ किया।

महाराज प्रात:कालीन योगसाधना कर उठे थे। शिष्य चंद्रप्रकाश श्रमवश आए पसीने को सुखाने के लिए किंचित थकानयुक्त अर्ध निद्रा युक्त थे। महाराज का वात्सल्य उमड़ आया। योगी की वाणी प्रस्फुटित हुई, जैसे दूर आकाश से कोई संदेश आ रहा था। "अरे चंद्र प्रकाश! वैद्य की उपाधि लेने के पश्चात् तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ है" (आयुर्वेद शास्त्रों में वैद्य को द्वीज कहा गया है, अर्थात् जो दोबारा जन्मा हो। एक गरीब कन्या से तुम्हारा विवाह होगा। पांच-सात होनहार बालक होंगे, अपनी गौशाला होगी, अपना अस्पताल होगा, अपनी रसायनशाला होगी, लोग कहेंगे कि चलो चलो भाई, वैद्य चंद्र प्रकाश के पास चलो। तुम सदा प्रसन्न व स्वस्थ रहोगे। लंबी, बहुत लंबी आयु तुम्हें प्राप्त होगी।" संक्षेप में महाराज जी ने संपूर्ण जीवन वृतांत चंद्रप्रकाश को कह सुनाया।

मन कल्पनामय हो उठा। वस्तुत:, साधनहीन चंद्रप्रकाश के लिए उपरोक्त समस्त कथन एक मधुर स्वप्न की भाँति ही तो थे। चंद्र प्रकाश की आयु 25 वर्ष हो चली थी। समस्त भाइयों एवं बहनों का विवाह हो चुका था। किंतु जाति से वैश्य चंद्रप्रकाश की उजड़ी आर्थिक व सामाजिक स्थिति को देखते हुए कोई भी पुरुष अपना दामाद/बहनोई बनाने को तैयार न था। गुरु की वाणी से भविष्य का संदेश लेकर वैद्य चंद्र प्रकाश ने अपने चिकित्सीय जीवन की शुरुआत 1942 में निलोहा ग्राम, तहसील मवाना, मेरठ जिले से की।

शनैः-शनैः आसपास के क्षेत्र के रोगियों ने वैद्य चंद्र प्रकाश की चिकित्सा से लाभान्वित होना प्रारंभ किया। प्रसिद्धि के साथ लक्ष्मी का भी आगमन हुआ। स्वभाव से दयालु, भावुक एवं प्रकृति प्रेमी चंद्र प्रकाश ने प्रथम अपने पिताश्री एवं बंधुओं हेतु ग्राम छबड़िया में घर के बाहर एक कुँए का निर्माण करवाया तथा उसके चारों ओर जामुन व शहतूत के पेड़ लगवाए, जिससे राह गुजरते पथिक ठंडी छाया में विश्राम कर सके। गुलाम भारतवर्ष में स्थिति तेजी से बदल रही थी। गाँधी जी का 'अंग्रेजों भारत छोड़ो', 'करो या मरो' का नारा बच्चे-बच्चे की जुबान पर था। युगपुरुष महात्मा गाँधी का दर्शन व सानिध्य हर युवक व युवती की लालसा थी। देशप्रेम व बलिदान की भावना भरपूर थी।

वैद्य चंद्र प्रकाश भी इस घटनाक्रम व वातावरण से अछूते नहीं थे। क्रांतिकारियों के साथ कार्य करना उन्हें बहुत भाता था। स्वतंत्रता संग्राम हेतु धन एकत्र करना इन क्रांतिकारियों का ध्येय था। चंद्र प्रकाश के एक मित्र थे धर्मपाल भाई। बड़े विकट जीव, कहीं से धन का स्रोत ना दिखा तो, अपना धन लक्ष्य पूर्ण करने हेतु उन्होंने अपनी सगी बहन के पुत्र का अपहरण कर डाला और फिरौती की रकम मिलने पर ही छोड़ा। ठाकुर टीकम सिंह, धर्मपाल भाई, महाशय जी, आदि नौजवानों की टोली हिलते ब्रिटिश साम्राज्य की नींवों को और खोखला करने मे मशगूल थी। इसी संदर्भ में गाँधी जी का संदेश लेकर गाँव-गाँव में घूमने वाला एक व्यक्ति जिसका नाम शिक्षार्थी था, निलोहा ग्राम में पहुंचा। गाँधी जी जैसी वेशभूषा, गाँधी जी के सेवाग्राम की कहानियाँ-किस्से आदि समस्त ग्रामवासियों के लिए कौतुहल के विषय थे। शाम ढली, शिक्षार्थी का विश्रामकाल था। वैद्य चंद्र प्रकाश ने शिक्षार्थी को अपने कमरे पर निवास हेतु आग्रह किया। गरीब शिक्षार्थी दूसरों की आवभगत पर निर्भर था। निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया। जब रात की स्तबधता थी, ऐसे समय में अवसर देखकर वैद्य चंद्र प्रकाश ने मौन को तोड़ते हुए गांधी जी के एवं उनके आश्रम दर्शन की अपनी तीव्र अभिलाषा शिक्षार्थी सम्मुख प्रकट की। शिक्षार्थी का यही तो कार्य था। गाँव-गाँव में घूमकर नवयुवकों में गाँधी-दर्शन की लालसा पैदा करना तथा उसके पश्चात पुनः गाँधी सेना का एक सच्चा सिपाही बनाना। शिक्षार्थी से स्वीकृति मिलते ही चंद्र प्रकाश आह्लादित हो उठे। शिक्षार्थी के सदाचरण एवं जीवनचर्या से प्रभावित हो उठे वैद्य चंद्र प्रकाश ने एक ओर तो वर्धा स्थित सेवाग्राम जाने का प्रबंध किया। वहीं प्रसन्न होकर अत्यंत निर्धन शिक्षार्थी को 40/- रुपये, कंबल तथा वस्त्र आदि देकर विदा किया ।

कौन जानता था कि शिक्षार्थी वैद्य चंद्रप्रकाश की नयी जिन्दगी का सूत्रधार बन निलोहा आया था। चंद्र प्रकाश का भाग्य प्रतीक्षा कर रहा था। वैद्य चंद्र प्रकाश अपने दो अन्य साथियों के साथ गृहस्थी का छुट-पुट सामान तथा तवा-परात लेकर सेवाग्राम पहुँचे। शीघ्र ही गाँधी दर्शन हुए। एक अभिलाषा पूर्ण हुई, वह अभिलाषा जो विश्व के जनमानस की सुषुप्त अभिलाषा थी। गाँधी के आश्रम में तरह-तरह के व्यक्तित्व उपस्थित थे। चंद्र प्रकाश को भय था कि सभी विभूतियों में संभवतः कोई स्थान मिले न मिले, तो वह विचित्र बाबू (मंत्री, गांधी आश्रम, उ0 प्र0) का सिफारिशी पत्र लेकर गए थे। लेकिन ओजस्वी एवं प्रभावकारी व्यक्तित्व के चलते उन्हें निज स्थान स्वयं बनाने में लेशमात्र भी अवरोध ना मिला। आश्रम की दिनचर्या थी -

चरखा कातना व रचनात्मक कार्य में परस्पर सहयोग।

आश्रम में ही आए हुए थे, श्री रामचरण मित्र जो कि लक्ष्मी नारायण अग्रवाल (लक्ष्मी बाबू) के मित्र थे। श्री लक्ष्मी बाबू बिहार खादी ग्राम उद्योग संघ के मंत्री थे। भारतवर्ष की स्वतंत्रता की लड़ाई में जूझते सेनानियों की अग्रिम पंक्ति के नायकों के एक नायक, जो कि स्वयं महात्मा गाँधी द्वारा बिहारी गाँधी की उपाधि प्राप्त किए हुए थे।

उन्हीं लक्ष्मी बाबू की थी एक विचित्र इच्छा। वह अपनी लाडली व एकमात्र पुत्री शशि मुखी का विवाह एक ऐसे युवक से करना चाहते थे, जो कि ओजस्वी व्यक्तित्व, स्वस्थ शरीर, उच्च एवं दृढ़ विचार, पुरुषार्थी, नि:स्वार्थी, स्वाभिमानी, चरित्रवान, सेवाभावी तथा फक्कड़ मिजाज का हो, जो खादी पहनता हो। सभी गुण चंद्र प्रकाश में मौजूद थे, मात्र आर्थिक सुरक्षा को छोड़कर। रामचरण मित्र ने चंद्र प्रकाश को लक्ष्मी बाबू के जामाता रूप में बिल्कुल उपयुक्त पाया। संयोग से चरखा संघ का राष्ट्रीय सम्मेलन था, लक्ष्मी बाबू का आना निश्चित था। रामचरण मित्र ने चंद्र प्रकाश से अपना मन्तव्य स्पष्ट कर लक्ष्मी बाबू की प्रतीक्षा करने का आग्रह किया। स्वभाव से अक्खड़ व घोर स्वाभिमानी वैद्य चंद्र प्रकाश ने कहा कि यदि उन्हें अपनी बेटी का वर तलाशना है तो लक्ष्मी बाबू स्वयं संपर्क करें। मैं उनकी प्रतीक्षा में अपना समय नष्ट नहीं कर सकता। यह कहकर वह अपनी गाँधी दर्शन की इच्छा पूर्ण कर निलोहा ग्राम लौट चले।

भारतवर्ष की स्वतंत्रता के उदय सदृश वैद्य चंद्र प्रकाश के भाग्य का उदय भी संभवत: गाँधी के आश्रम से ही होना था। रामचरण



स्व. श्री लक्ष्मीनारायण बाबू

मित्र से इस युवक का वृतान्त सुनकर लक्ष्मी बाबू ने बिना देखे ही मन ही मन संकल्प किया कि अपनी बेटी का विवाह अब वो इसी युवक से करेंगे। उन्होंने अपने सूत्रों द्वारा चंद्र प्रकाश के पैतृक निवास स्थान छबड़िया की जानकारी ली। गरीबी की पराकाष्ठा थी, सभी लोग फटेहाल और भुखमरी के कगार पर थे। जमीन कर्जे में फँसी थी। किसी प्रकार मेहनत-मजदूरी करके जीवन चल रहा था। घर-द्वार टूटा फूटा था। हाँ, एक बात जरूर थी कि लोग सच्चे थे। लक्ष्मी बाबू ने निलोहा पत्र लिखकर चंद्रप्रकाश को बुलावा भेजा। दोनों का प्रथम मिलन हुआ और विवाह की तिथि पक्की हुई।

लक्ष्मी बाबू की एकमात्र पुत्री का विवाह वैद्य चंद्र प्रकाश से तय जानकर स्वयं चंद्र प्रकाश तथा जानकार लोग आश्चर्यचकित रह गए। हर व्यक्ति के जुबान पर यही वाक्य था कि "लक्ष्मी बाबू ने एक फकीर से अपनी बेटी की शादी तय की है"। लक्ष्मी बाबू मुस्कुरा



स्व. वैद्य चन्द्र प्रकाश एवं शशिमुखी

भर उठते, वाकई विचित्र था लक्ष्मी बाबू का व्यक्तित्व। बिहार में एक सम्भ्रान्त व कुलीन अग्रवाल घराने से सम्बन्धित, लक्ष्मी बाबू एम. एस. सी. (रसायन शास्त्र) के अन्तिम वर्ष की शिक्षा को गाँधी के आव्हान पर छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे। आजीवन खादी, स्वदेशी व गौ व्रत धारण किए, लक्ष्मीनारायण दरिद्र नारायण की सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते थे। कहने वाले कहते थे कि लक्ष्मी बाबू का कहा उनके करने से ज्यादा सच्चा होता है। उसी विचित्र व्यक्तित्व ने एक अनोखी परंपरा का प्रारंभ किया। जिसके अनुसार विवाह हेतु लड़का अपनी होने वाली दुल्हन के वस्त्र के हेतु सूत कातेगा तथा लड़की अपने दूल्हे के लिए सूत कातकर वस्त्र निर्माण करेगी। धन्य थी लक्ष्मी बाबू की खादी एवं स्वदेशी वस्तुओं के प्रति समर्पण की भावना। जैसी कथनी वैसी करनी।

वैद्य चंद्र प्रकाश को सभी कुछ मंजूर था । लक्ष्मी बाबू जैसे व्यक्तित्व का दामाद बनना आखिर किसे रोमांचित ना करता। गुरु महाराज की वाणी सिद्ध हो रही थी। लक्ष्मी बाबू अति समृद्धि परिवार के होते हुए भी दरिद्र जीवन का अभ्यास स्वयं तथा अपने बच्चों को दे रहे थे। चंद्र प्रकाश निलोहे पहुँचे तथा फिर अपने गुरु से मिलकर संपूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। गुरुजी सर्वज्ञ थे। बोले! हरि इच्छा बलवती यह तुम्हारा प्रारब्ध था ।

इस प्रकार 21 मई 1945 को एक अत्यन्त सादगीपूर्ण समारोह में हजारों लोगों की उपस्थिति तथा देश के कोने-कोने से आए बधाई संदेशो के बीच वैद्य चंद्र प्रकाश तथा शशि मुखी परिणय सूत्र में बँधे। चंद्र प्रकाश के गुरु महाराज, पिता नंदलाल एवं तीन क्रांतिकारी मिल बारात में शामिल हुए। विवाह के पश्चात् बाराती निज स्थान लौट गए। किंतु चंद्र प्रकाश मुजफफरपुर ही रुक गए। समय से पूर्व कोई कार्य नहीं होता, मनुष्य की बुद्धि समय पर उसके नियत प्रारब्धानुसार सोचती व कर्म करती है।

विवाह के पश्चात लगभग दो वर्ष तक चंद्र प्रकाश बेरोजगार रहे। ससुर ने उनको गाँधी के रचनात्मक कार्यों में लगाना चाहा, परंतु उनका मन कहीं नहीं लगा। घुमन्तु साधु की तरह वो अपनी पत्नी के साथ गृहस्थी को नए-नए स्थानों पर बसाते व उजाड़ते रहे। पहली झोपड़ी चंपारण, वहां से सिमरी, सिमरी से अलोलिया, फिर झूमर पहुंचे। झूमर पहुंचते-पहुंचते पत्नी गर्भवती हुई। गृहस्थी ठहरी, तो कार्य की भी चिंता हुई और चंद्र प्रकाश ने प्राकृतिक चिकित्सा प्रारम्भ की। अकेले होने के कारण अन्तोत्वगत्वा चंद्र प्रकाश ने पत्नी के प्रसवकाल के समय स्वयं ससुराल मुजफ्फरपुर में आ बसने का फैसला लिया। वैद्य चंद्र प्रकाश को स्वतंत्र भारत में प्रथम पुत्री रत्ना की प्राप्ति 5 सितंबर 1947 को हुई। प्रसवोपरान्त उनकी पत्नी प्रायः बीमार रहने लगी। सेवा सुश्रुषा चल ही रही थी कि बिहार में चेचक का भयंकर प्रकोप हुआ।

गौव्रत धारण किए लक्ष्मी बाबू ने चेचक के टीके में गौ का प्रयोग हुआ जानकर सब कुछ

जानते-बुझते किसी को चेचक का टीका ना लगाने दिया। शशि मुखी का शरीर अशक्त था, चेचक के भयंकर रूप ने आ दबोचा। पुत्री रत्ना भी नौ माह की थी। पति व पिता ने अथक श्रम किया। चेचक से बचने का प्रयास चल ही रहा था कि पत्नी को टी.बी. का प्रकोप भी हो गया। पेनिसिलिन का प्रवेश भारत में हो चुका था। पटना के डॉक्टरों द्वारा भरपूर प्रयास किए जाने के बावजूद शशि मुखी की हालत खराब होती जा रही थी। एक आँख समाप्त हो चुकी थी, दूसरी भी बाहर आने को थी। ऐसे में एक दिन स्वप्न में चंद्र प्रकाश को गुरु महाराज दिखाई पड़े, संदेश देकर बुलाते हुए।

पत्नी को अधमरी हालत में छोड़, ससुराल में सभी की लान्छना को दरकिनार करते चंद्र प्रकाश दौड़ पड़े गुरु चरणों की ओर। संभवत: महाराज जी अपने शिष्य की पीड़ा से अवगत थे, तभी तो योग द्वारा शशि मुखी की पीड़ा को वो स्वयं के शरीर पर बाँट चुके थे। अपने गुरु की दशा देखकर चंद्र प्रकाश पत्नी की पीड़ा भूल गए । इस प्रकार 10-12 दिन यूं ही गुरु की सेवा में व्यतीत हो गये। महाराज अपने शिष्य के धैर्य एवं भक्ति की परीक्षा ले चुके थे। आखिर महाराज ने स्वयं ही चंद्र प्रकाश से अचानक आने का मंतव्य पूछा। चंद्र प्रकाश ने व्यथित हृदय से पत्नी की मृत्युप्राय: दशा का वर्णन महाराज से किया। महाराज जी ने डाँटते हुए उन्हें तुरन्त लौटने को कहा और साथ में **"वलिपाणि"** नामक औषधि दी, संपूर्ण सेवनविधि के साथ। पत्नी की दशा उत्तरोतर बिगड़ रही थी। जब चंद्रप्रकाश वापस पहुँचे तो डॉक्टरों ने उन्हें मृतप्राय: घोषित कर दिया था। गुरु जी की शक्ति पर अपरिमित विश्वास व परमात्मा में अटूट आस्था वाले चंद्र प्रकाश ने औषधि को गुरु का आदेश व प्रसाद समझते हुए शशि मुखी को देना प्रारंभ किया और जैसे चिकित्सा शास्त्र के पन्नो में एक नया किस्सा लिखना शुरू हुआ हो। शशि को आयुर्वेदिक औषधि से चमत्कारी लाभ हुआ। जीर्ण व जर्जर हुई काया **वलिपाणि** के कारण एक पाव घी, 3 लीटर दूध, एक दर्जन केला प्रतिदिन हजम करने लगी। पाश्चात्य चिकित्सक शशि मुखी के प्रतिदिन 250 ग्राम बढ़ते वजन से आश्चर्यचकित थे। मात्र 40 दिन की औषधि से शशि मुखी पूर्ण रूप से रोग मुक्त हुई।

चंद्र प्रकाश की आस्था व श्रद्धा आयुर्वेद व महाराज में और बढ़ गई। साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधि की चमत्कारी चिकित्सा का व्यवहारिक व प्रत्यक्ष ज्ञान भी उन्हें गुरु से प्रथम बार हुआ। इस तरह समय और व्यतीत हुआ। बिटिया डेढ़ वर्ष की हो गई थी। निष्क्रिय जीवन व्यतीत करने के कारण चंद्र प्रकाश को ससुराल में प्राय: उपेक्षा भाव मिलता, हालांकि ससुर साहब के वो अति प्रिय थे।

आखिरकार वैद्य चंद्र प्रकाश ने महाराज जी के निकट ही आ बसने का फैसला किया। तय हुआ कि वह अपने पैतृक निवास छबड़िया में सपरिवार रहेंगे। दीर्घकालोपरान्त चंद्र प्रकाश 1948 में छबड़िया पहुँचे और पति-पत्नी ने मिलकर अपने हाथों से मिट्टी-गारे की एक झोपड़ी तैयार की।

गुरु महाराज के एक साधन संपन्न शिष्य थे चौ. हरनाम सिंह, ग्राम नगला बड़ी, तहसील बागपत, जिला मेरठ के निवासी। महाराज जी ने चंद्र प्रकाश को दिव्य औषधि **नवबल रसायन** (तत्कालीन नाम नवजीवन) (स्वर्ण रहित) बनाने की विधि विधान समझाते हुए उसे चौ. हरनाम सिंह के सहयोग से निर्माण करने का निर्देश दिया। औषधि निर्मित होकर तैयार ही हुई थी कि वैद्य चंद्रप्रकाश के

ससुराल से समाचार आया कि उनके एकमात्र साले श्री हर्षवर्धन की तबियत बहुत खराब है। तुरंत चले आओ। वैद्य चंद्र प्रकाश अपने गुरु के हर आदेश का तात्पर्य खूब समझते थे। नयी औषधि अवश्य ही हर्ष बाबू के लिए बनवाई गई है, ऐसा निश्चय कर इस औषधि एवं परिवार सहित ससुराल पहुँचे।

ससुराल में बुरा आलम था। हर्षबाबू को डेढ़ पाव खून मल से रोज आता था। प्राय: अर्धमूर्छित अवस्था में वह पड़े रहते थे। बिहार के प्रसिद्ध एवं अनुभवी डॉक्टरों ने हर्ष बाबू के जीने की आशा छोड़ दी थी। ऐसे में चंद्र प्रकाश द्वारा बड़े आत्मविश्वास से नई औषधि के विषय में वार्तालाप करना सभी को नागवरा गुजरा। जितने मुंह उतनी बातें। परिवार में किसी ने कहा कि चंद्र प्रकाश ससुर की समस्त संपत्ति को हथियाने वास्ते अपने साले के प्राण लेना चाहते हैं। चंद्रप्रकाश तनिक भी विचलित ना हुए और आखिरकार लक्ष्मी बाबू ने निर्णय लिया कि चंद्र प्रकाश को चिकित्सा प्रारंभ करने दी जाए। बेहोशी की दशा में **"नवबल"** की प्रथम पुड़िया जीभ के नीचे शहद में मिलाकर डाली गई। अद्‌भुत दृश्य उपस्थित हुआ! दस मिनट में ही हर्ष बाबू को होश आ गया। तीन पुड़िया खाते-खाते खून आना बंद हो गया। तीन दिन पश्चात् सामान्य शौच की प्रवृत्ति हुई। पाश्चात्य चिकित्सा विपरीत गरिष्ठ भोजन आयुर्वेदिक रसायन के साथ देना शुरू किया गया, यथा -दूध, छुहारा, बादाम, अंडा आदि। ससुराल में उपेक्षित वैद्य चंद्रप्रकाश का इस अनायास चमत्कारी चिकित्सा के कारण प्रसिद्धि का सिक्का फैल गया। चंद्रप्रकाश कृतज्ञ था, अपने गुरु के प्रति, जिन्होंने साले की जीवन रक्षा के साथ चंद्रप्रकाश के सम्मान एवं गरिमा को स्थापित किया था।

ससुराल में चंद्रप्रकाश के प्रति अब एक नया एवं प्रशंसायुक्त भाव था। सभी का अत्यंत आग्रह हुआ, फिर भी भावी चंद्रप्रकाश ने ससुराल में पुन: रहने का प्रस्ताव पूर्णत: ठुकरा दिया। आखिरकार निर्णय हुआ कि चंद्र प्रकाश ससुराल में न रहेंगे, परंतु मुज़फ्फरपुर भी नहीं छोड़ेंगे। लक्ष्मीबाबू के आदेश पर बिहार खादी समिति के प्रांगण में वैद्य चंद्रप्रकाश एवं उनके परिवार हेतु निवास आदि की व्यवस्था कर दी गई।

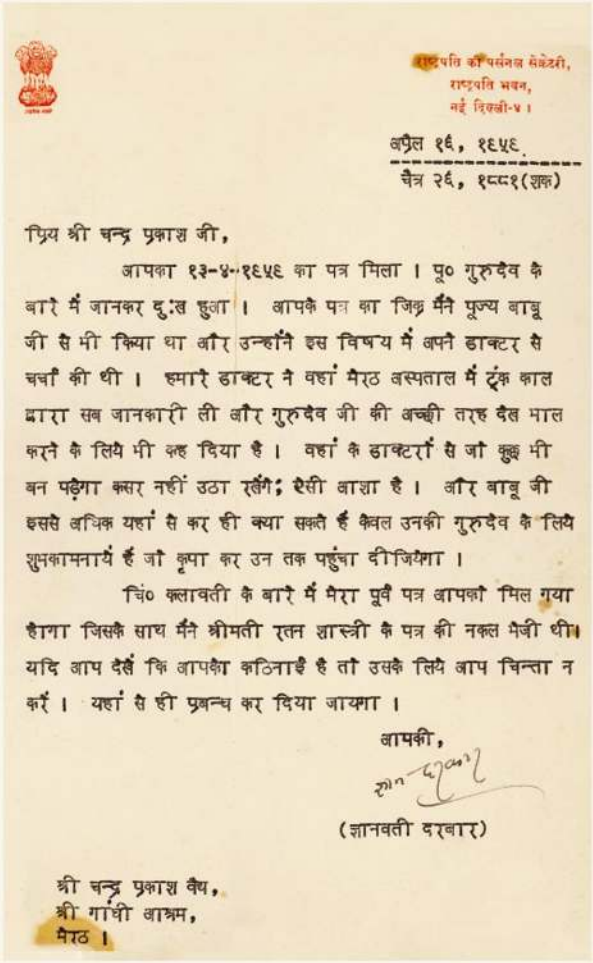
महाराज जी के नुस्खों, चंद्रप्रकाश के श्रम एवं बुद्धि कौशल से रोगियों की संख्या में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होती चली गई। साथ-साथ बढ़ी चंद्र प्रकाश की यश एवं कीर्ति भी। समय तेजी से बीता। 1953 आते-आते चंद्र प्रकाश के घर पूर्णिमा और किरन दो अन्य कन्याओं ने जन्म ले लिया था। वैद्य चंद्र प्रकाश को पुत्र की बड़ी लालसा थी। भारतीय पुराणों व वेदों में पुत्र की प्राप्ति बिना मनुष्य जीवन निरर्थक कहा गया है। व्यथित व अभिलाषी वैद्य चंद्रप्रकाश ने अपनी दबी इच्छा सर्वज्ञ महाराज को जा सुनाया। महाराज बोले, "अरे, लोहा बनाओ" और फिर महाराज के निर्देशानुसार वैद्य चंद्रप्रकाश ने लौह धातु का शोधन करना विधिपूर्वक प्रारंभ किया। महाराज जी का कहना था, "अरे! पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन कर इस औषधि का तीन माह सेवन करें, अब तुम्हें लड़की नहीं हो सकेगी।" और यही हुआ! 1956 में वैद्य चंद्रप्रकाश के घर प्रथम पुत्र हिमांशु का जन्म हुआ।

बिहार में रहते हुए हालांकि चंद्र प्रकाश को नाना तरह की सुविधाएं सहज सुलभ थी, परंतु वो स्वयं को महाराज से बहुत दूर पाते थे। तत्कालीन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद लक्ष्मी बाबू के सखा थे। वो चंद्र प्रकाश को उसी भावनावश अपने दामाद का

दर्जा देते थे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद भी महाराज जी के व्यक्तित्व एवं सादगी से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने चंद्रप्रकाश को सलाह दी थी कि तुम्हारे व्यक्तित्व एवं व्यवसाय के लिए महाराज जी के आसपास ठहरना ही उचित है। उनके सहयोग से मेरठ के गांधी आश्रम में वैद्य चंद्रप्रकाश को चिकित्सा करने का स्थान एवं रहने की व्यवस्था दी गई। मेरठ गांधी आश्रम में एक मैनेजर थे, दीपराज भाई, भयंकर रूप से चर्म रोग से पीड़ित। महाराज जी की चमत्कारिक चिकित्सा से वो पूर्णरूप से रोग मुक्त हुए और इसी कारण चंद्रप्रकाश उनके गुरु भाई भी बन गए। दीपराज सिंह ने बड़े भाई की तरह अपनी मृत्युपर्यन्त चंद्रप्रकाश का बखूबी साथ दिया।

वैद्य चंद्र प्रकाश की जिंदगी में एक अजीब विचित्रता थी। जब भी उन्होंने कुछ नया कार्य प्रारंभ किया, कभी परिवार, कभी समाज ने कहीं ना कहीं कोई ऐसी कथनी अथवा कार्य अवश्य किया, जिससे उनके स्वाभिमान पर गहरी ठेस लगी। मेरठ के गांधी आश्रम में भी यही हुआ - लोगों ने कहा कि राष्ट्रपति व अपने ससुर के कारण गाँधी आश्रम पर वैद्य चंद्र प्रकाश एवं उनका परिवार बोझ है।

स्थान परिवर्तन में विशेषज्ञ एवं अपने स्वाभिमान एवं दृढ़ निश्चय के लिए प्रसिद्ध चंद्र प्रकाश के लिए यह कथन असहनीय था। चार बच्चों, पत्नी, गृहस्थी व औषधालय के सामान के साथ उन्होंने तुरंत गांधी आश्रम से बाहर रहने का फैसला लिया और मेरठ शहर में गढ़ रोड स्थित कैलाशपुरी में प्रथम मंजिल पर दो कमरे के मकान में उन्होंने अपना औषधालय व घर दोनों 1958 से प्रारंभ किया। शनैः-शनैः अनुभव एवं रोजगार बढ़ता गया। पत्नी का औषधि-निर्माण व गृहस्थी में सहयोग बेजोड़ था। कार्य के साथ-साथ



राष्ट्रपति के पर्सनल सेक्रेटरी,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-४।

अप्रैल १६, १९५९
चैत्र २६, १८८१(शक)

प्रिय श्री चन्द्र प्रकाश जी,

आपका १३-४-१९५९ का पत्र मिला। पू० गुरुदेव के बारे में जानकर दुःख हुआ। आपके पत्र का जिक्र मैंने पूज्य बाबू जी से भी किया था और उन्होंने इस विषय में अपने डाक्टर से चर्चा की थी। हमारे डाक्टर ने वहां मेरठ अस्पताल में ट्रंक काल द्वारा सब जानकारी ली और गुरुदेव जी की अच्छी तरह देख भाल करने के लिये भी कह दिया है। वहां के डाक्टरों से जो कुछ भी बन पड़ेगा कसर नहीं उठा रखेंगे; ऐसी आशा है। और बाबू जी इससे अधिक यहां से कर ही क्या सकते हैं केवल उनकी गुरुदेव के लिये शुभकामनायें हैं जो कृपा कर उन तक पहुंचा दीजियेगा।

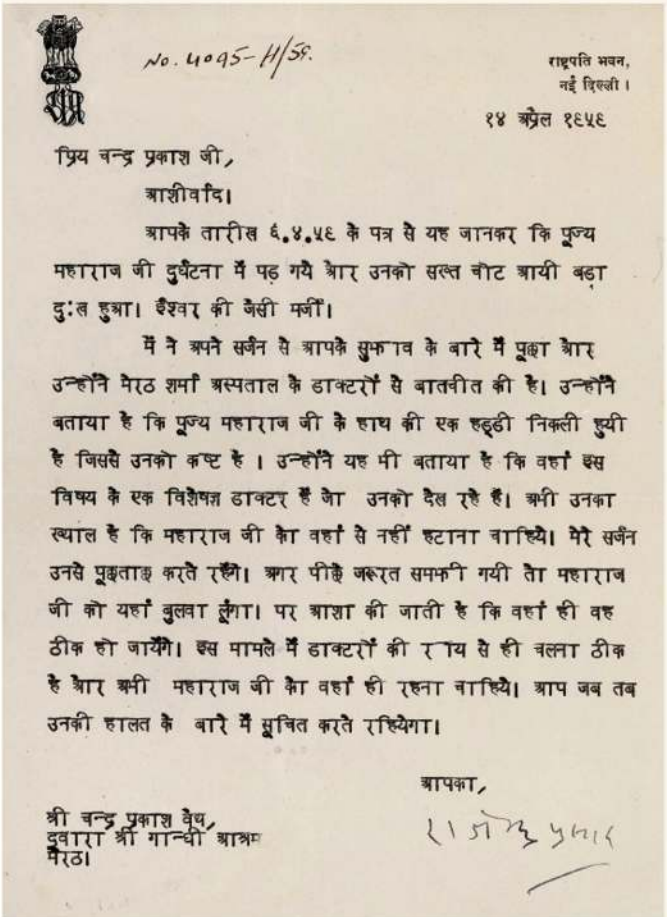
चिं० कलावती के बारे में मेरा पूर्व पत्र आपको मिल गया होगा जिसके साथ मैंने श्रीमती रतन शास्त्री के पत्र की नकल भेजी थी। यदि आप देखें कि आपको कठिनाई है तो उसके लिये आप चिन्ता न करें। यहां से ही प्रबन्ध कर दिया जायगा।

आपकी,
ज्ञान दुलारी
(ज्ञानवती दरबार)

श्री चन्द्र प्रकाश वैद्य,
श्री गांधी आश्रम,
मेरठ।

गृहस्थी व गुरु महाराज तथा परिवार जनों की जिम्मेदारी दोनों बड़ी खूबी से संभाल रहे थे। अचानक 1958, मई में लक्ष्मी बाबू का भूदान हेतु पदयात्रा करते समय देहावसान हो गया। वैद्य चंद्रप्रकाश एवं परिवार हेतु यह असहनीय स्थिति थी।

अपूरणीय क्षति एवं व्यथित हृदय से पति पत्नी बिहार से वापस लौटे। इसी समय में उनकी पत्नी ने पाँचवी बार गर्भधारण किया। सभी कुछ सामान्य चल रहा था कि 11 मार्च 1959 को गुरु महाराज जी की एक दुर्घटना में दाएं हाथ की कलाई की हड्डी टूट गई तथा अग्र भाग की कुछ हड्डियाँ चकनाचूर भी हो गई। डॉ. राजेंद्र प्रसाद की सिफारिश पर वैद्य चंद्र प्रकाश एवं अन्य शिष्य उनको लेकर दिल्ली के सफदरगंज अस्पताल गए। जहां डाक्टर डोरायस्वामी ने ऑपरेशन करके



No. 4095-H/59.

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।
१४ अप्रैल १९५९

प्रिय चन्द्र प्रकाश जी,

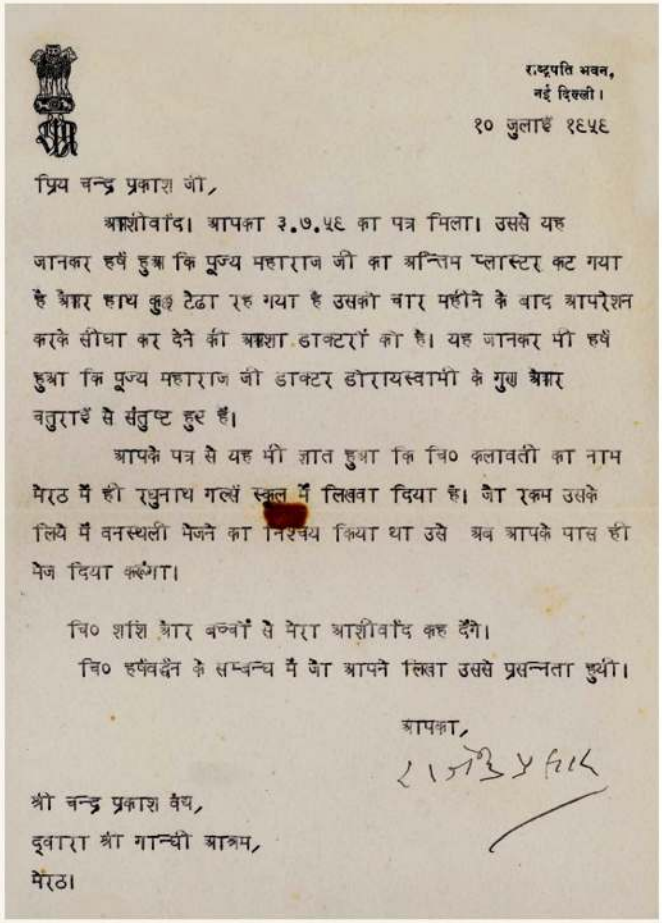
आशीर्वाद।

आपके तारीख ६.४.५९ के पत्र से यह जानकर कि पूज्य महाराज जी दुर्घटना में पड़ गये और उनको सख्त चोट आयी बड़ा दुःख हुआ। ईश्वर की जैसी मर्जी।

मैं ने अपने सर्जन से आपके सुझाव के बारे में पूछा और उन्होंने मेरठ शर्मा अस्पताल के डाक्टरों से बातचीत की है। उन्होंने बताया है कि पूज्य महाराज जी के हाथ की एक हड्डी निकली हुयी है जिससे उनको कष्ट है। उन्होंने यह भी बताया है कि वहां इस विषय के एक विशेषज्ञ डाक्टर हैं जो उनको देख रहे हैं। अभी उनका ख्याल है कि महाराज जी को वहां से नहीं हटाना चाहिये। मेरे सर्जन उनसे पूछताछ करते रहेंगे। और पीछे जरूरत समझी गयी तो महाराज जी को यहां बुलवा लेंगा। पर आशा की जाती है कि वहां ही वह ठीक हो जायेंगे। इस मामले में डाक्टरों की राय से ही चलना ठीक है और अभी महाराज जी को वहां ही रहना चाहिये। आप जब तब उनकी हालत के बारे में सूचित करते रहियेगा।

आपका,

श्री चन्द्र प्रकाश वैद्य,
द्वारा श्री गान्धी आश्रम
मेरठ।



राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।
१० जुलाई १९५९

प्रिय चन्द्र प्रकाश जी,

आशीर्वाद। आपका ३.७.५९ का पत्र मिला। उससे यह जानकर हर्ष हुआ कि पूज्य महाराज जी का अन्तिम प्लास्टर कट गया है और हाथ कुछ टेढा रह गया है उसको चार महीने के बाद आपरेशन करके सीधा कर देने की आशा डाक्टरों को है। यह जानकर भी हर्ष हुआ कि पूज्य महाराज जी डाक्टर डोरायस्वामी के गुण और बतुराई से संतुष्ट हुए हैं।

आपके पत्र से यह भी ज्ञात हुआ कि चि० कलावती का नाम मेरठ में ही रघुनाथ गर्ल्स स्कूल में लिखवा दिया है। जो रकम उसके लिये मैं वनस्थली भेजने का निश्चय किया था उसे अब आपके पास ही भेज दिया करूंगा।

चि० शशि और बच्चों से मेरा आशीर्वाद कह देंगे।

चि० हर्षवर्द्धन के सम्बन्ध में जो आपने लिखा उससे प्रसन्नता हुयी।

आपका,

श्री चन्द्र प्रकाश वैद्य,
द्वारा श्री गान्धी आश्रम,
मेरठ।

हड्डी का खराब भाग निकाल कर प्लास्टर चढ़ा दिया।

पत्नी का प्रसवकाल था, लेकिन गुरु की दशा को देखते हुए चंद्रप्रकाश ने उनकी सेवा में दिल्ली रहना ही ठीक समझा। इधर मेरठ में उनकी पत्नी ने 14 मार्च 1959 को पांचवी संतान एवं द्वितीय पुत्र को जन्म दिया। जब यह समाचार वैद्य चंद्रप्रकाश के पास दिल्ली अस्पताल में पहुँचा तो महाराज ने अर्धमूर्छित अवस्था में बोला, "अरे चंद्रप्रकाश! हमारे दाएं हाथ ने तुम्हारे घर जन्म लिया है। अरे! बड़ा होकर यह बालक ही तुम्हारे शेष कार्य पूर्ण करेगा।" महाराज की वाणी के आगे सभी नतमस्तक थे।

डॉक्टर डोरायस्वामी महाराज जी के हाथ में अन्य हड्डी प्रत्यारोपित करना चाहते थे। जिसके लिए महाराज जी योग साधना की कुछ क्रियाओं के कारण बिल्कुल तैयार ना थे। सपरिवार उनके आग्रह तथा राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण डॉक्टर डोराय स्वामी ने अपना इरादा बदल कर प्लास्टर ही चढ़ा रहने दिया।

महाराज जी ने चंद्रप्रकाश से अपनी औषधि की पोटली से एक शीशी मँगवाई जो कि काली गोलियों से भरी हुई थी। उनके निर्देशानुसार वैद्य चंद्रप्रकाश ने उन्हें दो-दो गोली प्रातः सायं दूध से देना प्रारंभ किया। साथ मे दूध, केला, घी, बादाम आदि का पथ्य चलता रहा। इसी प्रकार तीन माह बीत गए। तब डॉक्टर डोरायस्वामी ने हड्डी की स्थिति देखने हेतु एक्स-रे लिया, जिसे देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने तुरंत प्लास्टर काटा तथा हाथ के विभिन्न कोनों से अनेक एक्स-रे लिए। परंतु वाह रे महाराज! सबको

विस्मित करती उनके हाथ की हड्डी छियासी वर्ष की आयु में तीन इंच स्वयं बढ़कर ठीक हो चुकी थी। हतप्रभ डॉक्टर ने समस्त डॉक्टर शिक्षार्थियों एवं सहयोगियों को इस चमत्कारी घटना का प्रत्यक्ष कराया और उनका निष्कर्ष था कि योगी के योग का चमत्कार है। स्वयं राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने घटना को जानकर घोर आश्चर्य प्रकट किया।

जिज्ञासु एवं सत्यान्वेषी वैद्य चंद्र प्रकाश ने इसे काली गोलियों का औषधि प्रभाव माना। महाराज के आदेश पर वही गोलियां वैद्य चंद्र प्रकाश ने अपने औषधालय के लिए रख ली। परंतु उनका मन बार-बार इस औषधि के प्रयोग हेतु व्याकुल हो रहा था।

वैद्य चंद्र प्रकाश इसे जीर्ण आंत्रीय ज्वर की सफल चिकित्सा हेतु विशेष मन बना चुके थे। महाराज जी द्वारा प्रदत्त प्रथम नुस्ख़ा (नवबल) बेहद लाभकारी सिद्ध हो रहा था। इसी क्रम में एक दिवस सदर बाजार में रोगी देखने गए वैद्य चंद्र प्रकाश का उनके एक रोगी द्वारा एक अन्य रोगी से परिचय कराया गया जो कि सतत् एवं तीव्र ज्वर से पीड़ित था।

वैद्य जी ने उस मरीज की अपने मानकों के आधार पर जाँच की और कहा कि इस रोगी को आंत्रीय ज्वर नहीं बल्कि मज्जा का ज्वर है। उसके लिए उन्होंने 5 दिन की औषधि व्यवस्था बनाई। उनके तार्किक मन ने कहा कि जो औषधि हड्डी को जोड़ सकती है, वह अस्थिगत मज्जा के बुखार में फायदा कर सकेगी। उनका अनुमान सही निकला। जिस मरीज का बुखार 104^0 पर हफ्तों से अटका हुआ था, उसकी अवस्था तेजी से सामान्य की ओर जाने लगी और बुखार कम होने लगा। वैद्य जी ने उसकी दवा चालू रखी। लगभग 40 दिन के इलाज के बाद यह रोगी पूर्णतया ज्वर मुक्त हो गया।

एक सायंकाल वैद्य जी के घर के सामने एक गाड़ी आकर रुकी और उसमें बैठे व्यक्ति ने वैद्य चंद्र प्रकाश जी के बारे में पूछताछ की। उन दिनों पुरानी गलियों-मोहल्लों में गाड़ी का आना एक बड़ी बात होती थी। पूछने पर उन व्यक्ति ने अपना परिचय डॉ एम. प्रकाश बताया, जो कि मेरठ के प्रतिष्ठित पैथोलॉजिस्ट थे। उन्होंने वैद्य जी से कहा कि आपने श्री मन्दार दास जैन की जो चमत्कारिक चिकित्सा की है, मैं उसके बारे में आपसे बातचीत करने आया हूं। प्रारंभ में वैद्य जी थोड़ा सकपकाए, क्योंकि प्रतिष्ठित डाक्टर से मिलने का यह उनका पहला मौका था। डॉ एम. प्रकाश ने वैद्य जी के मनोभावों को भाँपते हुए कहा कि उक्त मरीज़ को हौजकिंस लिम्फोमा (एक तरह का रक्त कैंसर) की चतुर्थ स्थिति थी और बिमारी मज्जा में फैल चुकी थी। उस दिशा में उनको अलीगढ़ के डॉक्टर द्वारा मुंबई ले जाने की सलाह दी गई थी। आपकी चिकित्सा से वह मरीज़ पूर्णत: रोग मुक्त हो गया है। ऐसा उन्होंने अपनी लैब में देखा। अत: वह जिज्ञासावश इस विषय में जानने और बधाई देने के लिए वैद्य जी से मिलने आए हैं। वैद्य चंद्र प्रकाश जी के लिए यह एक अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक अनुभव था। इस घटना के बाद वैद्य जी और डॉ एम. प्रकाश में घनिष्ठ मित्रता हुई।

जहां डॉ. एम. प्रकाश वैद्य जी को उन्हीं की भाषा में रक्त कैंसर की शिक्षा दे रहे थे, वहीं उन्होंने दो अन्य रक्त कैंसर के मरीजों को आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए भेजा। उन दोनों मरीजों को भी उक्त औषधि से लाभ हुआ जिस के बाबत तत्कालीन अखबारों ने प्रमुखता

से प्रकाशित किया। तत्संबंध में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रोफेसर वी. रामलिंगास्वामी एवं वैद्य भगवान दास की दो सदस्यीय तथ्य अन्वेषक समिति को वैद्य जी के द्वारा लाभ प्राप्त मरीजों की सफल चिकित्सा की जानकारी लेने भेजा गया।

उक्त समिति ने रक्त कैंसर के मरीजों में लाभ होने की पुष्टि की, परंतु यह लाभ आयुर्वेदिक चिकित्सा से हुआ है यह कहने में असमर्थता जताई। समिति ने यह भी जानने की कोशिश नहीं की कि यह लाभ कैसे हुआ और इस संबंध में कोई कार्यवाही ना करते हुए मामले को दबा दिया। खिन्नचित्त वैद्य प्रकाश जोकि अपने गुरु द्वारा दी गई दवा को रक्त कैंसर के रोगियों में चमत्कारिक प्रभाव करते देख चुके थे, क्षणिक निराशा को विराम देते हुए पुन: जोश के साथ इस औषधि के निर्माण में लग गए। परंतु गुरु एवं चेले के विभिन्न प्रयासों के बाद भी उक्त औषधि का देखे गए प्रभाव के अनुरूप निर्माण ना हो सका। पर उनका प्रयास जारी रहा और उनके द्वारा बनाई गई औषधि से मरीज साल भर से लेकर दस वर्षो तक उतार-चढ़ाव के साथ जिंदा तो रह पाए परंतु पूर्णत: ठीक ना हो पाए। एक ओर वैद्य जी की हताशा चरम सीमा पर थी दूसरी ओर उनका उत्साही, निडर एवं पुरुषार्थी स्वभाव उनको प्रेरित कर रहा था।

सत्तर के दशक में उन्होंने एक अभिनव प्रयोग प्रारंभ किया, जिसमें उन्होंने तांबा, पारद, गंधक और अपराजिता, देवदाली को नींबू स्वरस में भावित कर गंधक जारणा की प्रक्रिया के साथ नलिका-डमरू यंत्र में निर्मित किया। उनके गुरुजी ने इस औषधि के निर्माण की कल्पना हेतु उनको शाबाशी देते हुए कहा कि यह औषधि विलक्षण प्रभाव वाली होगी और मृत्युपर्यंत रोगियों के लिए "अमर" प्रभाव छोड़ेगी। लगभग ढाई साल तक प्रक्रिया के पूर्ण होने के बाद उक्त औषधि को संयोगवश एक मृतप्राय: युवा सरदार को पैनक्रियास कैंसर की अंतिम अवस्था में दिया गया। **"यथा नाम, तथा गुण"** को चरितार्थ करने वाली **अमर** से उस नौजवान को कैंसर से पूर्णत: मुक्त कर दिया और यह मरीज़ लगभग 40 वर्षों से भी अधिक समय से रोग मुक्त है।

धीरे-धीरे वैद्य जी की ख्याति कैंसर रोग की चिकित्सा में बढ़ती गयी। इसी मध्य उनकी पुत्रियों ने डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की तथा स्नातकोत्तर महाविद्यालयों से प्रवक्ताओं के पद पर कार्यरत हुई। जातपात, छुआछूत, दान-दहेज एवं धार्मिक अनुष्ठानों से दूर, वैद्य चंद्रप्रकाश गायत्री-मंत्र और कर्म के उपासक थे। कभी-कभार वह अपने गुरु जी के आगमन तथा अन्य पर्वों पर स्वयं ही यज्ञ किया करते थे। इसी समय उन्होंने अपनी द्वितीय पुत्री का विजातीय वर से विवाह कर घर परिवार में एक नई मिसाल कायम की। अस्सी के दशक में बड़े पुत्र के विवाह के पश्चात् उनको पक्षाघात का दौरा पड़ा। दृढ़ इच्छाशक्ति तथा पुरुषार्थ के बल पर उन्होंने इस रोग पर विजय प्राप्त किया। इस समय तक उनका द्वितीय पुत्र बालेंदु वैद्य की शिक्षा के साथ औषधि निर्माण में उनका सहयोग करने लगा था। पिता पुत्र की जुगलबंदी से मरीजों को उत्तरोत्तर लाभ हुआ। फलस्वरुप, वैद्य चंद्र प्रकाश ने 1982 के मध्य में चांदी भस्म, जद्वार, जवाहर मोहरा, गुलाब, चंदन, गाजवाँ तथा लता कस्तूरी के अर्क में भावित कर **'नवजीवन'** नामक औषधि निर्मित की। इस औषधि को ब्लड कैंसर से पीड़ित दस वर्षीय बच्चे को अंतिम अवस्था में दिया

गया। यह बच्चा पिछले सैंतीस वर्षों से रोग मुक्त हो स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रहा है।

इसको साप्ताहिकी अखबार के दो अंकों में प्रकाशित किया गया, जिसके प्रभाव से भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद् द्वारा, जिसको डॉ. जे. एन. नौटियाल की अध्यक्षता में एक तथ्य अन्वेषक समिति द्वारा वैद्य जी के कार्यों की समीक्षा की गई। कई पृष्ठ वाली इस रिपोर्ट में कहा गया, निश्चित रूप से वैद्य जी की चिकित्सा से कैंसर रोगियों को लाभ प्राप्त हुआ तथा उनकी चिकित्सा का वैज्ञानिक विकास किया जाना चाहिए। परिषद द्वारा लगभग एक वर्ष तक पत्राचार किया गया। परंतु 1984 के मध्य में परिषद् द्वारा इस विषय की फाइल को बंद कर दिया गया। इस समय तक वैद्य चंद्र प्रकाश जी का, जो कि अनुवांशिक मधुमेह से पीड़ित थे, स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ने लगा। बीमारी के कारण उनके गुर्दों पर बुरा असर पड़ चुका था। कुछ माह डायलिसिस पर रहने के पश्चात 13 दिसंबर 1984 को वैद्य चंद प्रकाश जी की इहलोक लीला समाप्त हुई।

वैद्य बालेन्दु प्रकाश
देहरादून

सही प्रति

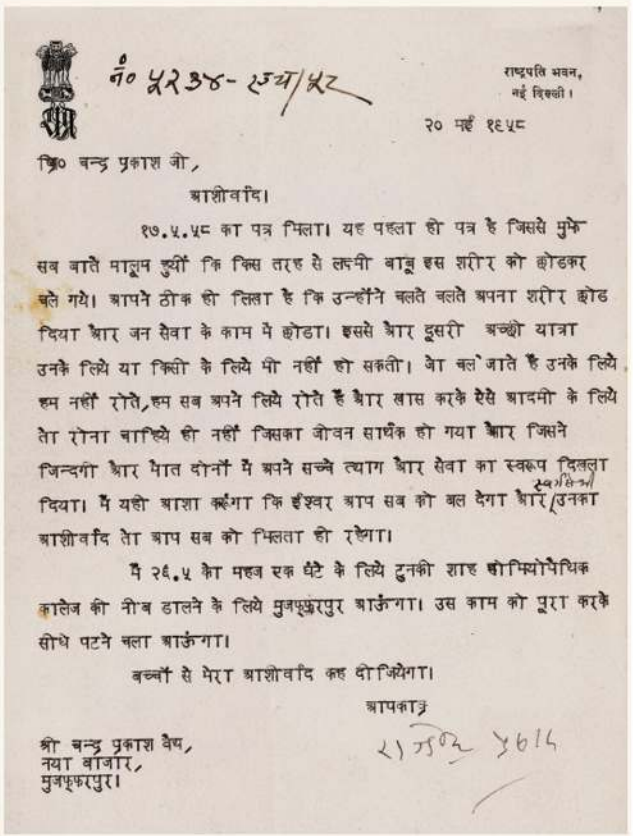
सर्व भूमि गोपाल की
ग्रा म नि र्मा ण मं ड ल
सर्वोदय आश्रम
पो० सोखोदेवरा, जि० गया । बिहार।

पत्रांक..... विभाग..... दिनांक २२.६.५६

कदम कुआं, पटना. ३

मैं श्री चन्द्रप्रकाश जी को अच्छी तरह जानता हूँ । वह एक सुयोग्य तथा अनुभवी वैद्य हैं । मैंने अपना भी इलाज उनसे कराया है जिससे मुझे बहुत लाभ पहुंचा है ।

हस्ताक्षर....
।जयप्रकाश नारायण।



नं० ५२३४-ए०स०/५८

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

२० मई १९५८

प्रि० चन्द्र प्रकाश जी,

आशीर्वाद।

१७.५.५८ का पत्र मिला। यह पहला ही पत्र है जिससे मुझे सब बातें मालूम हुयीं कि किस तरह से लक्ष्मी बाबू इस शरीर को छोड़कर चले गये। आपने ठीक ही लिखा है कि उन्होंने चलते चलते अपना शरीर छोड दिया और जन सेवा के काम में छोड़ा। इससे और दूसरी अच्छी यात्रा उनके लिये या किसी के लिये भी नहीं हो सकती। जो चले जाते हैं उनके लिये हम नहीं रोते, हम सब अपने लिये रोते हैं और खास करके ऐसे आदमी के लिये तो रोना चाहिये ही नहीं जिसका जीवन सार्थक हो गया और जिसने जिन्दगी और मौत दोनों में अपने सच्चे त्याग और सेवा का स्वरूप दिखला दिया। मैं यही आशा करूंगा कि ईश्वर आप सब को बल देगा और उनका आशीर्वाद तो आप सब को मिलता ही रहेगा।

मैं २६.५ को महज एक घंटे के लिये टुनकी शाह होमियोपैथिक कालेज की नींव डालने के लिये मुजफ्फरपुर आऊंगा। उस काम को पूरा करके सीधे पटने चला आऊंगा।

बच्चों से मेरा आशीर्वाद कह दीजियेगा।

आपका

श्री चन्द्र प्रकाश वैद्य,
नया बाजार,
मुजफ्फरपुर।

वैद्य चन्द्र प्रकाश कैंसर रिसर्च फाउन्डेशन



आज वैद्य चंद्रप्रकाश जी सशरीर हमारे बीच नहीं है, परंतु उनका जीवन स्वयं एक दर्शन है। स्वाभिमान, खोजी, निर्भीकता, पुरूषार्थ और प्रखर वाणी के धनी वैद्य चंद्र प्रकाश जी द्वारा विकसित कई औषधियाँ आज चिकित्सा जगत् में नये आयाम स्थापित कर चुकी है। उनके कार्यो को सुचारू रूप देने के लिये उनकी याद में वैद्य चंद्र प्रकाश कैंसर रिसर्च फाउंडेशन नामक पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. के. आर. नारायनन् की संरक्षता में 1988 से कार्यरत है। आज हम उनकी स्वर्ण जयंती पर संपूर्ण श्रद्धा के साथ महान आत्मा को अपना शत्-शत् प्रणाम अर्पित करते हैं।

आयुर्वेद ने ढूंढ़ ली है कैंसर की दवा?

मेरठ (उ० प्र०) के वैद्य श्री चन्द्र प्रकाश का दावा है कि उन्होंने कैंसर की दवा खोज ली है। विभिन्न-विभिन्न में अभूतपूर्व प्रगति के बावजूद कैंसर अभी तक लाइलाज है। कैंसर रोग के इस अप्रतिहत रूप के कारण लाख बीमार पाने वाले हर वर्ष। अतः श्री चन्द्र प्रकाश के दावे की सत्यता की जांच करने के लिए हमने अपने प्रतिनिधि को उन लोगों के पास भेजा, जो वैद्य जी की दवा लेने के कारण ठीक हुए बताए गए हैं। मगर अभी तक सभी दावे खेतूनिराय सिद्ध हुए हैं। अतः श्री चन्द्र प्रकाश के दावे की सत्यता की जांच करने के लिए हमने अपने प्रतिनिधि को उन लोगों के पास भेजा, जो वैद्य जी की दवा लेने के कारण ठीक हुए बताए गए हैं। मगर अभी तक सभी दावे खेतूनिराय सिद्ध हुए हैं। ऐसे काफी मरीजों से वैद्य जी के दावे के बारे में जानकारी हासिल की गई—कुछ से पत्र-व्यवहार द्वारा तथा कुछ से साक्षात्कार द्वारा। इन सभी मरीजों के रुपनगर से बम्बई, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि शहरों के बड़े-बड़े अस्पतालों से चालू उपचार पीछा कर रहे हैं कि चिकित्सा-पद्धतियों के विशेषज्ञों में इस सम्बन्ध में एक हुए दो भागों में इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं कि चिकित्सा-पद्धतियों के विशेषज्ञों में इस सम्बन्ध में एक स्वस्थ बहस का प्रारम्भ हो सके। यहां प्रस्तुत है वैद्य चन्द्र प्रकाश से हमारे प्रतिनिधि की बातचीत।

आयुर्वेद ने ढूंढ़ ली है कैंसर की दवा?

सरकार से हुआ पलायन

डाक्टरों द्वारा जांच

शोधकार्य की कहानी

आयुर्वेद का रसायनशास्त्र

महादेव चौहान

दैनिक हमारा युग

कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

नई दिल्ली 27 अप्रैल। आयुर्वेद विधि से इलाज करने वाले वैद्य चन्द्रा ने विभिन्न प्रकार के कैंसर के लिये दवाइयां विकसित करने का दावा किया है। उनका कहना है कि उन्होंने डाक्टरों द्वारा उम्मीद छोड़ देने के बाद कैंसर के

लिकूमिया-रक्त कैंसर

इसमें आयुर्वेद का उपचार

—शिवानन्द [illegible]

आयुर्वेद का प्रयोग आयुर्वेद, सुश्रुत चरक और वाग्भट का अष्टांगहृदय आयुर्वेद आचार्यों के रहने वाले महर्षियों का हमालक्ष आयुर्वेद और महा ऋषि आत्रेय का 'चरक संहिता' प्रसिद्ध ग्रंथों [illegible] पूर्वोक्त है। इसकी कल्पित औषधियों का सकल तत्व बातों में पाचनने वाली बातु है। इसे स्थावीय पेड़-पौधों पर पाया - पूजना है। विदेशों या विदेशी पूंजी की सहायता इसे नहीं चाहिए। 'देशेषां तुलेरो से सोचिए इस देश में आज भी यह वैद्य ही है जैसा कि कभी आयोध्य के चक्रवृत्त के साथ तब में था आचियों की कुटिया में इसका जन्म हुआ और उन्हीं ओर [illegible] इसी महान आयुर्वेद विज्ञान के विषय में एक सरल विवरण को में आज किया हुआ है।

आज विश्व में परमाणु शक्ति का बोल बाला है। परमाणु शक्ति मानव मात्र के लिए कहां वरदान सिद्ध हुई है वहां सबसे भंयकर शक्ति के रूपमान मात्र से मानवता कांप रही है। सबसे सूक्ष्म किरणों के प्रभाव से आज मनुष्य रोगों की पराधि हो रही है कभी एक भंयकर अकाल रोग [illegible]



वैद्य चन्द्र प्रकाश

पर इस रोग का पता चलता है।

अभी तक वर्तमान विशेष इसका उपचार का आरंभ न करने चिकित्सा नहीं हुए सके। मगर रोग को दूर करना के आगे नहीं चिकित्सीवाद दृष्टि को कम रोग? इसकि के कारोबार ऐसी औषधियों का आविष्कार किया [illegible] रक्त विकारों को जड़ से नष्ट हो जाये। यही नहीं अपितु ये जाती है मगर अन्य औषधि से आराम हुए। रक्त-कैंसर में भी यह चिकित्सा आश्चर्य हुए। रक्त मांस चिकित्सा करने के उपरान्त आज तक पूर्ण स्वस्थ है।

(1) रोगी राजा पुरी श्री ओ० एल० मलिक आगरा एसोसिएट्स, २३ चन्दन बाटी बाजू दे, रामजस, दिल्ली-६, फोन नं० २५१२६३।

इसी क्रम ६८ ई० में रक्तदूत क्रिसेंटिक सिर्फ़ियां हुआ। दक्षिण आगरा में मरीं हुई। १४ वार खून चढ़ाया गया। निराश होकर आयुर्वेद की शरण में आई। फरवरी सन् ६८ ई० में यह तुर्वेदिक चिकित्सा आरम्भ हुई। २-३ मास चिकित्सा करने के उपरान्त आज तक पूर्ण स्वस्थ है।

यह महीने का इलाज

वैद्यजी के सभी मरीजों ने इन्दौरेथी इलाज से हार कर ही। ...तः वैद्यजी की डॉक्टरों से आपत्तिजनक इलाज की शरण ली। कौलपुर, चिजनौर (उ. प्र.) के व्यापारी श्री नन्दरराम जैन का कहना है, 'मुझे डाक्टरों ने क्रॉनिक-लिम्फेटिक ल्यूकीमिया नामक कैंसर की बीमारी बताई थी। इसका पता सन ७१-७२ में लगा था। पहले मैंने इसका इलाज कौलपुर (चिजनौर) से तथा फिर मेरठ में करवाया। मेरठ में डा. नौनिहालसिंह, फिर डा. कालीं तथा डा. ताजुद्दीन का इलाज करवाया, जिसके बाद श्री वैद्य चन्द्र प्रकाश जी के पास गया। मेरी पूरी फाइल वैद्यजी के पास है। छह महीने इलाज चला और अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं।'

मेरठ में ही जब वैद्यजी ने मिलने गया, तो वहीं रहने वाले उनके एक पराँज ३१ वर्षीय श्री दीपक जैन को पूनी बीमारी रक्त जैन की बातचीत करने का अवसर मिला। यों तो दीपकजी घर पर ही थे, मगर सारी बात-चीत उनकी धर्मपत्नी में ही हुई। श्रीमती जैन का कहना था, 'मेरे पति को फाइनल सरकोमा का कैंसर है। दो साल पहले बम्बई अस्पताल में उनका आपरेशन किया गया था, लेकिन दो साल बाद बीमारी फिर बढ़ गई। चिन्तित हो कर हमने अक्तूबर-नवम्बर १९८१ में बम्बई जा कर पुनः परीक्षण करवाया। वहां तीन महीने के बाद डाक्टरों ने पेट का आपरेशन किया और बताया कि कैंसर अधिक फैल गया है और अब इलाज नहीं हो सकता। अब मृत्यु का इन्तजार करने के अलावा कोई चारा न था, पर सौभाग्य से वैद्यजी का पता चला। ७ अप्रैल, १९८१ से वैद्यजी का इलाज शुरू हुआ है और काफी अन्तर महसूस हो रहा है।'



श्रीमती सुधा स्वामी : स्वास्थ्य में सुध

और मर्ज ठीक होने का नाम नहीं रहा था; यानी मैं मौत के बहुत करीब पहुंच गई थी; ऐसी हालत में फरवरी, १९८१ में वैद्यजी का इलाज शुरू किया और अब काफी आराम म सूस कर रही हूं। २५ अप्रैल, १९८१ क रक्त की जांच करवाई, जिसमें मे ठीक होने की पुष्टि हुई। एलर्जीथेरा इलाज के दौरान काफी कष्ट होता था, मगर अब स्वाभाविक रूप से स्वास्थ्य सुधर हो रहा है।'

विजयादशमी के दिन जीवनदान

वैद्यजी के एक काफी पुराने मरीज थे स्व. श्री गुप्तनाथ सिंह, जिन्होंने स्वस्थ होने पर अपने अनुभव बापूजी में प्रकाशित श्री गांधी आश्रम के मासिक मुखपत्र 'आश्रम पत्रिका' के अप्रैल, १९७० अंक में एक लेख लिख कर व्यक्त किए। इस लेख के अनुसार १८ अक्तूबर, १९६९ को वह कैंसर के कारण अन्तिम सांसें गिन रहे थे। जीवन की कोई आशा नजर नहीं आ रही थी, क्योंकि लाक्षण तथा [illegible] भारतीय आयुर्वेद



वैद्य चन्द्र प्रकाश

दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में परीक्षण के बाद डाक्टरों ने बताया कि सलमान को अधिक से अधिक १५ महीनों तक जिन्दा रखा जा सकता है।

THE EVENING NEWS, APRIL 8, 1983

Does Ayurveda hold key to cancer cure?

NEW DELHI, April 8 — Will our very own Ayurveda spearhead the breakthrough in the cure for cancer?

A Meerut Vaid who hit upon a treatment accidentally, claims his medicines hold a cure for the dreaded disease. He has so far successfully treated cases of leukaemia, breast cancer and cancer of the bones, pancreas and prostrate glands.

Struck by his miraculous treatment of a patient they had almost given up, some doctors of the All-India Institute of Medical Sciences reportedly visited the Vaid in September last to greet him. The German Government would have reportedly offered him Rs 2 crore had he agreed to research in that country with no strings attached. Even the Planning Commission is said to have made discreet inquiries. A New York expert, whose patient the Vaid had treated in 1970, was also curious about the local doctor's wonder drug.

Vaid Chandra Prakash denied his is a wonder drug. "It is a result of years of efforts, experiments and researches", he says. "The Ayurved treatment involves a strict control on diet and dosages of Ayurvedic preparations which purify the blood and strengthen the blood-producing organs so that the white blood corpuscles count is normalised and the haemoglobin content goes up."

"Given to the satisfaction of a patient's health," according to the 64-year-old Vaid "in case of blood cancer the spleen gets enlarged, and his medicines normalise the spleen. Even without a blood test he can judge whether a cancer patient is on the path of recovery. To-date none of his patients have suffered a setback on account of the medicine, he says. And the cure he claims is cent per cent, provided the accompanying control on diet is strictly adhered to.

However, allopathic doctors are not very charitable in backing the Vaid's claim. Even those who visited him are reluctant to accept the success of his cure. While the doctors concerned at the AIIMS want to keep their cured patient under observation for two years more (after two years have already passed), the doctors in Post-Graduate Institute in Chandigarh refused to recognise their former patient.

The PGI doctors had written off their patient, Harcharan Singh, who was suffering from a 4 kg tumour in the pancreas. Even two major operations could not rejuvenate Harcharan. It was a living corpse of the 38-year-old patient who was brought to Vaid Chandra Prakash



Vaid Chandra Prakash

By Gargi Parsai

in Meerut. In one dose he got up and asked for food, claims the Vaid's son, Balendu, who is training to be a Vaid. Within six months Harcharan Singh was miraculously cured. He put on 32 kg weight and lost the 4 kg mass in his pancreas. And when the enthusiastic young man who had got a second lease of life went to see his doctors in PGI, they refused to recognise him. "You are not the same Harcharan Singh," they exclaimed in serious wonder.

But Harcharan was not the first patient of the Vaid. The earlier successes was Nandan Das Jain, suffering from leukaemia, Rekha Rani suffering from acute lymphatic leukaemia had had 14 blood transfusions when she was brought to the Vaid, S. K. Mukherjee (myloid leukaemia), J. K. Maheshwari (leukaemia), Jogender Lal Sethi (cancer of the pancreas), Salman Sherwani (acute myelocytic leukaemia), Manjit Singh (bone cancer), Sanjay (acute lymphocytic leukaemia) Permi Devi (cancer of the uterus), Sudha Tyagi (lymphoma leukaemia) and D. S. Khanna (prostrate gland cancer)... the list endless, but the Vaid insisted on proofs, during it to press his claim of credibility.

The last mentioned patient, D. S. Khanna, was under the care of the AIIMS. When he could get little relief from the traditional allopathic methods, he turned to the Vaid. Within months he was cured and now leads a normal life. He told this reporter. His daughter, a doctor herself, got the Vaid's medicine chemically analysed and it was found that it contained only the traditionally known elements, including mercury.

Vaid Chandra Prakash himself got a clue about the medicine from his guru popularly called Rishi-ji, charaji, who was a Yoga-rishi-vaid. It was under his guidance that Vaid Chandra Prakash could treat and cure on Mr S. K. Maheshwari of Bombay who was suffering from blood cancer. This was in 1964. Before long the Vaid successfully treated whoever came to him.



Maharaj Ji

But by 1973 the medicine outlined by the Brahmachari Jiulshea and the temperamental guru declined from revealing its contents to the Vaid. However, since the Vaid was the one who used to process the medicine, he reinvented the powder from memory. It took him some years to fully capture the essence of the much-needed cure. Finally on Dec. 29, 1980, he succeeded in remembering fully the the secret formula.

And now the Vaid has enough medicine to take on more than 400 cancer patients. More is being processed. He said it takes 11 months for the medicine to be prepared and his long silence was on this count. He did not want to bite more than he could chew.

"It is not my invention", the khadi-clad Vaid modestly says. "It is very much there in the ancient I have only modified it with the help of my guru. But he is certain his cure can withstand any challenge. Like any other Ayurvedic medicine the cancer cure also contains herbs, copper, mercury, potash, etc. The older the more effective it would be, he says. And his cancer medicine are known to have cured hypertension and diabetes as well.

INDIAN EXPRESS, APRIL 2

Ayurvedic cure for cancer

Express News Service

NEW DELHI, April 26.

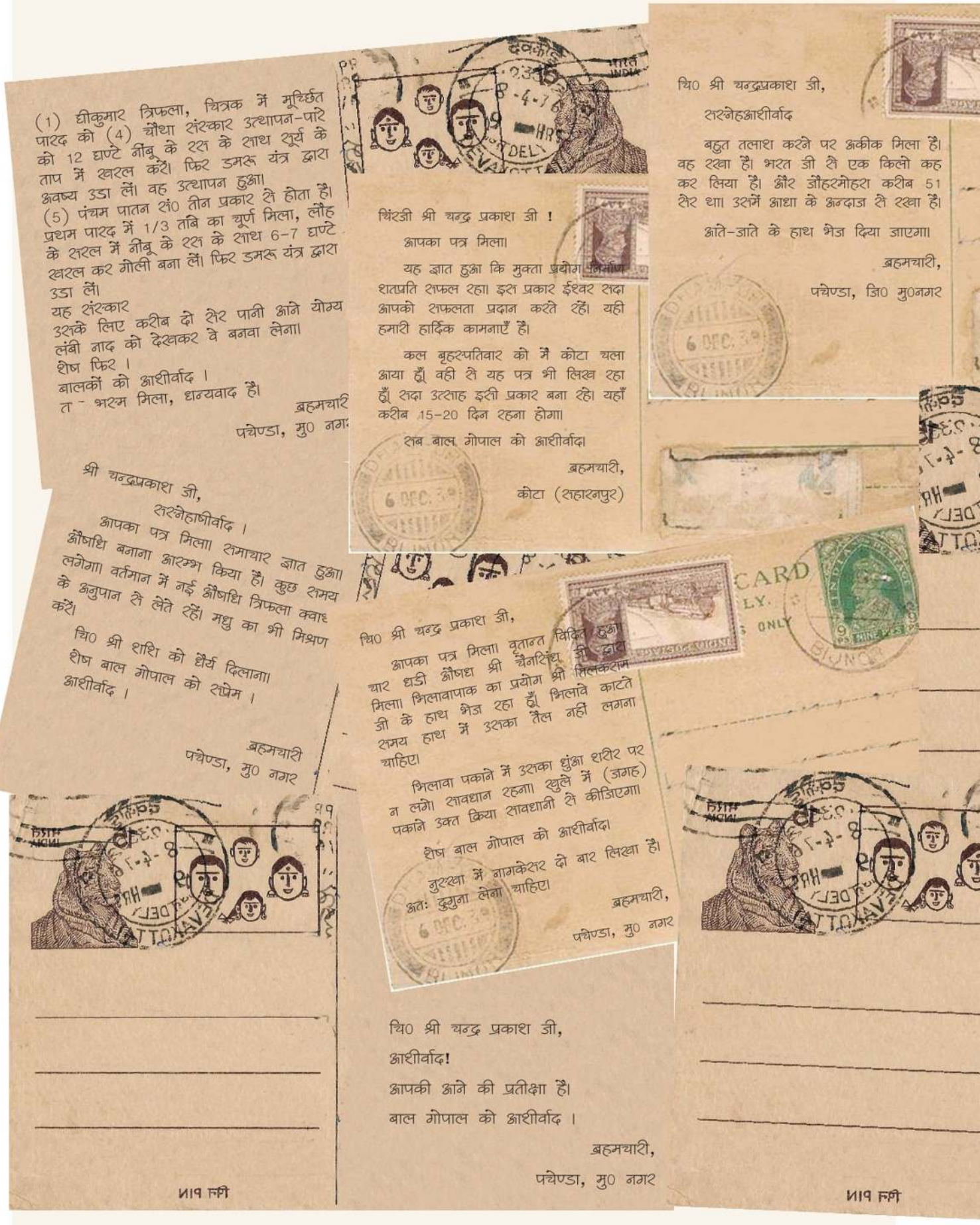
An Ayurvedic practitioner, Vaid Chandra claims to have developed medicines for various types of cancer. He says he has cured many cancer patients completely after doctors gave up hope.

The 64-year-old vaid who belongs to Bihar now runs his dispensary in Meerut and makes medicine in his own house. He claims to have cured Hawaharan Singh, a cancer patient, 20 years ago when he chanced upon a treatment. He perfected the medicine later.

The vaid gives medicines to to be taken three times a day for a maximum period of six months

Many radiotherapists and cancer specialists of AIIMS and Post Graduate Institute have expressed satisfaction over the treatment of the vaid.

गुरू शिष्य पत्र व्यवहार



(1) घीकुमार त्रिफला, चित्रक में मूर्च्छित पारद को (4) चौथा संस्कार उत्थापन-पारि को 12 घण्टे नींबू के रस के साथ सूर्य के ताप में खरल करें। फिर डमरू यंत्र द्वारा अवष्य उडा लें। वह उत्थापन हुआ।
(5) पंचम पातन सं0 तीन प्रकार से होता है। प्रथम पारद में 1/3 तबि का चूर्ण मिला, लौह के खरल में नींबू के रस के साथ 6-7 घण्टे खरल कर गोली बना लें। फिर डमरू यंत्र द्वारा उडा लें।
यह संस्कार
उसके लिए करीब दो सेर पानी आने योग्य लंबी नाद को देखकर वे बनवा लेना।
शेष फिर ।
बालकों को आशीर्वाद ।
त - भरम मिला, धन्यवाद है।

ब्रह्मचारी
पचेण्डा, मु0 नगर

श्री चन्द्रप्रकाश जी,
सस्नेहाशीर्वाद ।
आपका पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। औषधि बनाना आरम्भ किया है। कुछ समय लगेगा। वर्तमान में नई औषधि त्रिफला क्वाथ के अनुपान से लेते रहें। मधु का भी मिश्रण करें।
चि0 श्री शशि को धैर्य दिलाना।
शेष बाल गोपाल को सप्रेम ।
आशीर्वाद ।

ब्रह्मचारी
पचेण्डा, मु0 नगर

चिरंजी श्री चन्द्र प्रकाश जी !
आपका पत्र मिला।
यह ज्ञात हुआ कि मुक्ता प्रयोग निर्माण शतप्रति सफल रहा। इस प्रकार ईश्वर सदा आपको सफलता प्रदान करते रहें। यही हमारी हार्दिक कामनाएँ हैं।
कल बृहस्पतिवार को मैं कोटा चला आया हूँ, वहीं से यह पत्र भी लिख रहा हूँ। सदा उत्साह इसी प्रकार बना रहे। यहाँ करीब 15-20 दिन रहना होगा।
सब बाल गोपाल को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी,
कोटा (सहारनपुर)

चि0 श्री चन्द्र प्रकाश जी,
आपका पत्र मिला। वृतान्त विदित हुआ। चार घडी औषद्या श्री चैनसिंघ जी द्वारा मिला। भिलावापाक का प्रयोग श्री सिलकराम जी के हाथ भेज रहा हूँ। भिलावे काटते समय हाथ में उसका तैल नहीं लगना चाहिए।
भिलावा पकाने में उसका धुंआ शरीर पर न लगे। सावधान रहना। खुले में (जगह) पकाने उक्त क्रिया सावधानी से कीजिएगा।
शेष बाल गोपाल को आशीर्वाद।
सुरक्षा में नागकेसर दो बार लिखा है। अतः दुगुना लेना चाहिए।

ब्रह्मचारी,
पचेण्डा, मु0 नगर

चि0 श्री चन्द्र प्रकाश जी,
आशीर्वाद!
आपकी आने की प्रतीक्षा है।
बाल गोपाल को आशीर्वाद ।

ब्रह्मचारी,
पचेण्डा, मु0 नगर

चि0 श्री चन्द्रप्रकाश जी,
सस्नेहआशीर्वाद
बहुत तलाश करने पर अकीक मिला है। वह रखा है। भरत जी से एक किलो कह कर लिया है। और जौहरमोहरा करीब 51 तोर था। उसमें आधा के अन्दाज से रखा है।
आते-जाते के हाथ भेज दिया जाएगा।

ब्रह्मचारी,
पचेण्डा, जि0 मु0नगर

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी,

मैं हरिद्वार से आया, आपका पत्र मिला। जब इच्छा, सुविधा हो तब आकर पारद ले जाइए। इसका संस्कार में कराने में सहयोग दिया करूंगा।

आप फिक्र न करें।

शशि सहित बालकों को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी,

पचेंडा (मु० नगर)

चिरंजीव श्री चन्द्र प्रकाश,

मैं करैहडा यज्ञ में चला गया था।

आपका आया हुआ पत्र का उत्तर समुचित समय पर न पहुँचा का, लिखने में देर हो गई।

पारद शुद्धि यथाविधि करते रहें। यदि कोई क्रिया समझ में न आती हो फिर पूछ लीजिएगा। हिम्मत नहीं हारिए।

यज्ञ में बहुत से पंडित आर्यसमाजी आए थे।

शेष बालगोपालों का सप्रेम आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी,

पचेण्डा (मु० नगर)

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी,

आपका पत्र पढकर वृतान्त ज्ञात हुआ लोक हितैशी बनने की चेष्टा करें। चित्त हो अपने ध्येय ..... को प्र करें। कर्मयोग, अध्यात्मवाद से बाहर नहीं

स्वास्थ्य का ध्यान रख संयमशीलतापूर्व जन-सेवा तो बहुत ही अच्छा है। खान-प शुद्ध और समयानुकूल रखना चाहिए। वर्तम जीवन को सुन्दर, कल्याणमय और उन्न बनाना चाहिए, क्योंकि भविष्य का जी इसी पर अवलंबित है।

स्मरण रहे - मनुष्य का भविष्य उस वर्तमान पर निर्भर करता है।

श्री सेक्रेटरी साहिब के रोग विचार के औषधि करते रहना। किम अधिकम धिमद भवदीय,

ब्रह्मचा

डा (मु० नग

प्रियवर जी !

आपका पत्र मिला

पढकर वृत्त ज्ञात हुआ - वृक्क् (गुर्दा) पीडा हारक का अनुपान - शहद तीन माशे में चाट के एक-दो घूंट ताजा पानी पिलाना चाहिए। समय-प्रातः सायम्।

दूसरे जो मूत्र का औषधि का प्राप्त न हो सके तो आप बेलपत्र के स्वरस से काम ले सकते हैं।

कियद्धिकंधिमत्सु

भवदीय-ब्रह्मचारी

पचेण्डाकलाँ

(मु० नगर)

चिरंजीव श्री चन्द्र प्रकाश जी,

कई दिन हुए आपका एक पत्र मिला। पेन के आभाव में उत्तर न लिख सका - विलंब हुआ।

बलिमाणि रस की आवश्यकता है। वह तो पनियालीवाला देने को तैयार नहीं है। यदि पचेण्डा आना होगा वहाँ से कुछ अल्प मात्रा में मिल सकेगा।

यहाँ भी रोगी अनेक प्रकार के आते हैं। जब पचेण्डा चलना होगा, तब आपको सूचित करूँगा।

बलगोपालों को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी,

कोटा (सहारानपुर)

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी !

आशीर्वाद।

आपका पत्र मिला। उक्त विधि से पारद को शुद्ध मात्र करके रख लेना, आगे की क्रिया अभी स्थगित रखिएगा।

बज्रकन्द पहाडों पर जाने से ही मिलेगा।

शेष बाल गोपालों की आशीर्वाद ।

ब्रह्मचारी,

पचेण्डा (मु० नगर)

चि० बाबू श्री चन्द्र प्रकाश जी,
आशीर्वाद

आपके दो पत्र मिले। वृतान्त ज्ञात हुआ।
यथावसर में हाथ लगाना।
हारिए न हिम्मत, बिसाही बेला हरिनाम।
जाहि बिधि रखे राम ताहि बिधि रहिए
चि० बाल गोपाल तो आँमों की फसल पर पहुँचे है।
इस साल खाकर तो लौटेंगे। हरि इच्छा बलवती।

ब्रह्मचारी
पचेण्डा (मु० नगर)

हरि

चि० चन्द्र प्रकाश जी

सस्नेह आशीर्वाद

आपका पत्र मिला और चि० कलावती का लिखा पत्र भी मिला है। मैं कांगडा, पंजाब से अभी आया हूँ देव वाणी में संकलित श्री कलावती का पत्र बडा ही सुमधुर है। धन्यवाद है। भारती कण्ठ देश में किए मान होवे। आत्मअवज्ञा नहीं करना।

पारद का संस्कार करना हो तो उपकरण ले चलिए। सदा काल बदलता रहे ताहि धीरः त्रमनग्रहयति।

बालकों को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी
पचेण्डा (मु० नगर)

22.11.1963

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी,

साशीर्वाद के साथ ज्ञात हो कि दैववशात आज अचानक ऊपर ली एक हण्डी फूट गई है। इसके बराबर दूसरी लेनी पडेंगी।

ब्रह्मचारी
पचेंडा (मु०नगर)

ओम

28.03.1963

चिरंजीव श्री चन्द्रप्रकाश जी

आशीर्वाद ।

आपके दो पत्र एक ही दिन एक बालक ने लाकर दिया। पत्र पढकर वृतान्त ज्ञात हुआ। आप वलिपाणि शुद्ध पारद से करके बना लें एवं नवजीवन तथा मधुरांतक भी आप बना रहे हैं। प्रभु आपको सहयोग दे। सद्बुद्धि प्रदान करे। औषधालय में औषद्य फूंकने का प्रबन्ध अभी तक गाँव वालों ने नहीं किया।

ब्रह्मचारी
पचैंडा (मु

ओम

04.07.1963

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी

आशीर्वाद ।

आपका पत्र मिला। अच्छा हुआ असाहीयरूणा की चिकित्सा छोडना क्योंकि अशेश आपर पर ले कि चिकित्सा से अपयष के अतिरिक्त कोई विशेष लाभ नहीं मिलता। हमारे आर्ष आयुर्वेद सिंदफद्यान्त प्राय सत्य ही होते हैं। चिकित्सा में उत्साहित रहते हुए सावधानी से कार्य परायण रहना।

बाल गोपालों को आशीर्वाद ।

ब्रह्मचारी
पचैंडा (मु० नगर)

ओम

06.12.1964

चि० श्री चन्द्र प्रकाश जी,

आशीर्वाद।

आज मैं पचैंडा जा रहा हूँ वहीं मिल सकता हूँ शेष कुशल मंगल।

चि० बाल गोपालों को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी
कोटा (सहारनपुर)



चि0 श्री चन्द्र प्रकाश जी,

आशीर्वाद

आपने पत्र में लिखा है कि शुद्ध पारद 8 तोले चाहिए। वह होली के पश्चात् पचेण्डे से आपको मिल सकेगा। कुछ शुद्ध कर रहा हूँ

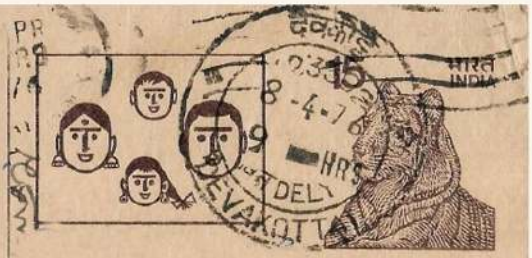
अर्क दुग्ध भी तो उसी समय प्राप्त हो सकेगा।

कुछ मैं भी बना लूंगा।

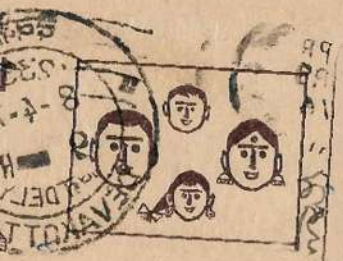
बाल गोपालों को आशीर्वाद,

ब्रह्मचारी

कोटा



पटना जाना हो तो हो जाइए सरसों का तेल 5 तोले लेते आइ[illegible] ब्रह्मचारी



ओम

29.11.1963

चिरंजीव श्री चन्द्रप्रकाश जी,

आपका पत्र मिला। उत्तर देर में जा रहा है। हण्डी पर कपरमिट्टी चढा दी गई है। अब आँच के लिए लकडी मंगा रहे है।

यथा संभव पूर्णिमा तक पारद उडा लिया जाएगा। आज कुछ बादल-बूंद हो रही है। सहोत्साह कार्य करते रहे।

बल गोपालों को आशीर्वाद।

ब्रह्मचारी

पचेण्डा (मु0 नगर)

ओम

21.02.1965

चि0 श्री चन्द्र प्रकाश जी

आशीर्वाद।

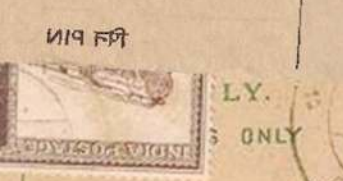
वहाँ देवेन्द्र बाबू रामगोपाल जी के पुत्र है दवाई बनवा रहे है। अतः होली से पहले न आ सकूंगा। पारद शोधन में जो आवश्यक वस्तु है वो तो आपसे पूरा नहीं है।

धैर्य रखें।

बाल गोपालों को आशीर्वाद व कुशल मंगलम्।

ब्रह्मचारी

कोटा (सहारनपुर)



27.02.1963

चि0 श्री चन्द्र प्रकाश जी,

सस्नेह आशीर्वाद

आपका पत्र मिला। आप अन्नाहार करना नहीं छोडिए। अन्नाहार तथा आपकी ग्रंथियों का प्राय विशेष संबंध कोई न हो। बिहार वालों की ग्रंथी और इसमें कोई तुल्यता नहीं। यह और वस्तु है। इस बात से आप

अन्न न खाने के बारे में मैं फिर बताऊँगा।

यह साधारण रोग है। अब बिहार वालों को अपनी पुडिया देने के 1-2 घण्टे के अंतर से स्फटीक वाला योग देवे और ग्रन्थीलेप में एक का प्रातः दूसरे का सांयम् को आपका विचार ठीक ही है।

बिहार वालों की औषधि में देंगे। यदि होगा तो इसमें कुछ और परिवर्तन मैं बताऊँगा। अन्न न खाने से निर्बलता के अतिरिक्त अभी कोई विशेष लाभ नही।

बाल गोपालों को विशेष आशीर्वाद ।

ब्रह्मचारी, कोटा

मेरे बाऊ जी



किसी ने बखूबी कहा है कि "वक्त की कीमत और इंसान की अहमियत उसके जाने के बाद ही पता चलती है।" पूज्य पिताश्री के देहावसान को पैंतीस वर्ष बीत चुके हैं। मुझे याद पड़ता है - एक आकर्षक व्यक्तित्व, जिसके अंदर एक अद्‌भुत् समावेश था अनुशासन, सादगी, सुव्यवस्था, स्पष्टवादिता, स्वाभिमान, पुरुषार्थ, धुन, व्यवहार कुशलता, कर्तव्य परायणता और स्वास्थ्य से भरपूर गठीले बदन का।

मेरा बाल्यकाल बीमारियों में ही बीता है, जिसमें मैंने उनके वात्सल्य का भरपूर आनंद लिया। सोते समय कई कहानियों में से उनके द्वारा सुनाई गई 'सात हुण्डार की चटनी होय' तथा राजा भोज की कहानी मुझे आज भी भली-भाँति याद है। गर्मियों की छुटियों में घर में उनके साथ खेले गए ताश के पत्ते, जिसमें "अंधा साजी और कोर्ट पीस" उनका सर्वाधिक प्रिय खेल था। बाऊजी अपने कानों को बखूबी से हिला लेते थे और यह उनके चिंतन का सूचक होता था।

पाँच पैसे के लट्टू

मुझे याद पड़ता है एक प्रसंग, जब मैं शायद दूसरी या तीसरी कक्षा में था, मुझे स्कूल जाते हुए सड़क पर पांच पैसे पड़े मिले, जिसमें मैं दो लट्टू खरीद लाया। सजग पिताश्री ने पूछा यह लट्टू कहां से आए? मैंने कहा कि मुझे पांच पैसे सड़क पर पड़े मिले थे। बदले में मिला एक झापड़ और दोनों लट्टू को कूड़े में फेंक दिया गया।

संदेश बिल्कुल स्पष्ट था। सड़क पर पड़ा हुआ दूसरों का सामान तुम्हारा नहीं है। या तो उसके मालिक को दो या देखो भी मत। यह गुण उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित भी होता था।

मेरी माँ स्वर्गीया शशि मुखी बिहार के गांधी के नाम से जाने जाने वाले स्वर्गीय लक्ष्मी बाबू की इकलौती पुत्री थी। उन्होंने अपनी जायदाद में पुत्री को भी बराबर का हिस्सा दिया। अतएव ननिहाल से नियमित रूप से कुछ राशि घर में आती थी। परंतु स्वाभिमान से ओतप्रोत बाऊजी ने आजीवन उक्त राशि को स्वयं के लिए इस्तेमाल करना तो दूर कभी उसकी तरफ ध्यान भी नहीं दिया, जबकि हम लोगों की आर्थिक स्थिति बुरी तो नहीं, लेकिन बहुत अच्छी भी नहीं थी। शायद यही वजह है कि आज भी दूसरों की दौलत की तरफ चाहकर भी नजर नहीं उठ पाती है।

रूठना और मनाना

किशोरावस्था प्राप्त होने के साथ-साथ मैं थोड़ा हठधर्मी होता गया। बेवजह जिद्द करना और तुनक मिजाजी मेरा स्वभाव बन गया था। कुछ सोहबत और वक्त का फेर। मैं बारहवी में फेल हो गया। उनको अफसोस तो हुआ परंतु किसी तरह के अपशब्द या प्रताड़ना नहीं दी। मेरे व्यवहार में कोई अंतर ना आया था। 16 वर्ष की आयु की एक सुबह थी जब मैंने नाश्ते में बनी मिस्सी रोटी खाने से इंकार किया। बाऊजी बोले "मत खाओ" मेरे यह कहने पर कि "यह कोई घर है जहाँ पर इच्छा के अनुसार नाश्ता भी नहीं मिलता", उन्होंने कहा "घर से निकल जाओ"। जवान होते बेटे का अपमान! मैं घर से यह सोचकर निकला कि अब कभी वापस नहीं आऊँगा। घर से करीब 11 किलोमीटर दूर 'भोले की झाल' नामक स्थान है, जहां पर कई लोगों ने डूब कर आत्महत्या की थी। मैंने भी जीवन समाप्त करने की ठानी, परंतु स्वयं के मूर्खतापूर्ण तर्कों से प्रभावित हो आत्महत्या का इरादा त्यागकर उस दिन 50 किलोमीटर दूर बड़ौत में बैठी मां के पास साइकिल चलाकर पहुंच गया। मां मेरी जिद्द और बाऊजी के स्वभाव से भलीभांति परिचित थी। वह वहाँ से मुझे वापस लेकर आई और रिक्शावाले के साथ मुझे छोड़ घर के अंदर जाकर बाऊजी को बोली कि "आज हम इस लड़के को खो देते, कृपया आप उसे कुछ मत कहना"।

उनके घनिष्ठ मित्र धर्मपाल जी भी घर में मौजूद थे। उन्होंने भी बाऊजी को नम्रता बरतते हुए चुप रहने को कहा। मैं घर में घुसा ही था की आँखें चार हुई और वह हंसते हुए बोले, "अरे हीरो! तू तो वापस आ गया! बाऊजी की बात का बुरा मानता है?" बस यह कह कर गले लगा लिया। क्षणिक गुस्सा था परंतु प्यार असीमित था।

सूझ-बूझ और दूरदर्शिता

चढ़ती जवानी के साथ मेरी उद्दंडता भी चर्मोत्कर्ष पर थी। उनकी सारी पसंद, मेरी नापसंद थी और मेरी करतूतें उनके लिए नागवारा! फिर भी पिता कर्तव्य के तहत वह मुझे संरक्षण देते थे। बीएससी की पढ़ाई के दौरान छात्र राजनीति का हिस्सा बन मैं कुछ हिंसात्मक गतिविधियों में लिप्त रहने लगा था। मुझे सही रास्ते पर लाने के उनके प्रयास विफल हो रहे थे। ऐसी अवस्था में उन्होंने मुझे हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों में ट्रैकिंग पर जाने को कहा। मेरे द्वारा मना करने पर उन्होंने मुझे हिंजड़ा बोलकर पौरुष को ललकारा और शायद उनके उस संबोधन का दूरगामी परिणाम हुआ। अतएव मैंने यूथ होस्टल के तत्वाधान में जम्मू-कश्मीर के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में सौ किलोमीटर का ट्रैक एक दिन में पूरा किया। यह मेरी जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट था, जिसके बाद मेरी सारी उर्जा रचनात्मक कार्यों में ही लगी।

पैसे का लेन-देन

किसी भी बिल को तुरंत चुकाना तथा समस्त रसीदों को संभालकर रखना उनकी विशेष आदत थी। वह कभी भी आखिरी समय का इंतजार नहीं करते थे। उनके इस गुण का असर मैंने उनके जीवनकाल में देखा था कि किस तरह टेलीफ़ोन का अत्यधिक बिल आने पर बाऊजी द्वारा जमा की गई धनराशियो और तिथियों के रिकॉर्ड को देखकर उच्च अधिकारियों ने बगैर किसी जांच के बढ़े हुए बिल को माफ कर दिया था।

इसी क्रम में आता है उनकी जीवन की एक अविस्मरणीय सीख। उनके गुरुभाई तिलक राज जी ने मेरी बहन श्रीमती पूर्णिमा के मकान के निर्माण में कुछ आर्थिक मदद

बाऊजी की जानकारी बगैर दे दी थी। पहले तो बाऊजी अपने मित्र पर गुस्सा हुए, परंतु देर हो चुकी थी। पर उसी दिन से वह उनके पैसे चुकाने की धुन में लग गए।

कुछ माह बाद रुपए इकठ्ठा होने पर उन्होंने मुझसे तिलक जी के घर जाकर पैसा लौटाने की बात कही। किसी कारणवश मैं सुबह सोता ही रह गया और आंख खुलने पर पाया कि बाऊजी जा चुके थे। मैं थोड़ा बिगड़ा, पर कुछ करने को नही था। दोपहर में बाऊजी लौटे। कुर्ते पर काला निशान, पसीने से लथपथ परंतु चेहरे पर दमकती मुस्कान भरी खुशी कि मैंने अपने और दोस्त के जीते जी कर्ज़ चुका दिया। उनका कहना था कि यदि किसी से पैसा लिया है, तो उसके घर जाकर देकर आओ। कभी तगादा नहीं आना चाहिए। दूसरी ओर किसी को मदद दी है, तो कभी तगादा करके पैसा नहीं माँगना चाहिए। उनकी इस सीख से आज किसी भी स्थिति में कर्ज़ देने वाले व्यक्ति और संस्थाओं की एक लंबी सूची मेरे पास है।

बाबूजी की व्यवहार कुशलता और मित्रता

बचपन से मैंने कई लोगों को ताऊजी बोला, जिसमें श्री हरनाम सिंह, दीपराज सिंह, धर्मपाल सिंह, भगत सिंह शास्त्री, शिवराज शास्त्री एवं महाशय जी प्रमुख थे। परंतु बहुत अरसे बाद मुझे पता चला कि इनमें से कोई भी मेरे पिताजी के सगे भाई नहीं थे। इसी तरह मुजफ्फरपुर के शंकर लाल जी जिनको मैं मामा कहता था, मेरी मां के सगे भाई नहीं थे। यह सभी लोग बाऊजी के संपर्क में आए विलक्षण व्यक्तित्व थे और उन लोगों की पारस्परिक दांत कटी दोस्ती हर तरह के इंसानी रिश्तों से परे थी। आज भी लोग उनके नि:स्वार्थ रिश्तों को याद करते हैं।



घर, परिवार एवं खानदान

फिल्मी परिस्थितियों में बाऊजी ने तेरह साल की उम्र में घर से निकल जाने का फैसला किया था और फिर लंबे अंतराल के बाद मां की मृत्यु के उपरांत ही घर गए थे। परंतु उन्होंने अपने भाई-बहनों का ध्यान रखा। बिहार में एक समृद्ध परिवार में शादी के बाद भी कर्ज में डूबे पैतृक घर को छुड़ाने में तथा भाइयों, बहनों और उनके बच्चों को स्थापित करने में बगैर किसी के कहे भरपूर मदद की।

यही वजह है कि उनके इस विलक्षण व्यक्तित्व व चरित्र को आज भी लोग याद करते हैं। अपने एक भाई श्री हजारीलाल पर उनका विशेष अनुग्रह था। उनकी चिकित्सा से हजारीलाल के घर में एक पुत्र हुआ था, जिसको वे अपने बेटे के समान मानते थे। घर की माली हालत और कोई पूँजी न होने के बावजूद उन्होंने पैतृक रूप से प्राप्त लगभग तेरह बीघा भूमि अपने स्वयं के पुत्रों को छोड़कर अपने भतीजे श्री विरेंद्र कुमार को सौंप दी। यह बताता था उनके चरित्र के बारे में जिसमें कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे बाऊजी का सानिध्य पिता और मित्र के साथ गुरु का भी मिला। मैं उनकी चिकित्सकीय सूझबूझ, कर्मठता तथा प्रगतिशील विचारों का कायल हूँ। उनके बनाए हुए नुस्खे आज एक नए चिकित्सा कर्म का दरवाजा खोल चुके हैं। एक्यूट प्रोमाइलोसिटिक ल्यूकेमिया, पेनक्रिएटाइटिस, बच्चों में होने वाला दमा, क्रॉनिक ओस्टियोमाइलाइटिस, रिलेप्सिंग टाइफाइड तथा कई अन्य रोगों में उनकी प्रामाणिक चिकित्सा ने मुझे सुविख्यात वैद्य बनने का अवसर प्रदान किया। विगत पैंतीस वर्षों में मैंने कभी भी उनको अपने से दूर नहीं पाया, बल्कि समय-समय पर उनका मार्गदर्शन मुझे मिला। इसी परिप्रेक्ष्य में चिकित्सा केंद्र का नाम पड़ाव रखने की प्रेरणा भी उन्होंने मुझे स्वप्न में आ कर दी।

बाऊजी ऐसी आत्मा थे, जो इस जीवन में केवल कर्म करके दुनिया को देने आए थे। भोग के रूप में उन्होंने मेरी माँ के अलावा किसी और से कोई सेवा नहीं ली। मुझे प्रसन्नता है कि मैं उन निष्काम कर्मयोगी द्वारा रोपित पौधे, जिसके बीज उन्हें अपने गुरु महाराज जी से प्राप्त हुए, को सींचकर पल्लवित होने वाले पुष्प एवं फलों से जनमानस को लाभ पहुँचाने के पथ पर हूँ।

वैद्य बालेन्दु प्रकाश
देहरादून

हमारे बाबूजी महान

सभी के जन्मदाता उनके लिए महान होते हैं। लेकिन हमारे बाबूजी सिर्फ हमारे लिए ही नहीं, सभी के लिए महान प्रेरणास्रोत थे, हैं और हमेशा रहेंगे ।

हम बच्चों के लिए एक अति आदर्श व्यक्तित्व, कर्मठता की पराकाष्ठा, सुबह 4-4:30 बजे उठना, मंत्रोच्चारण और खरल घोंटना, पूरे दिन मरीज़ देखना, दवाई बनाना, गाय की देखभाल करना, माँ के साथ हर छोटे बड़े काम मिल कर करना, हम सभी भाई बहनो को सही दिशा दिखाना, सही मायनों में उनके जीवन का उद्देश्य तय था।

कभी किसी से मरीज देखने की फीस नहीं ली। गरीब, शिक्षक-प्राइमरी टीचर से लेकर यूनिवर्सिटी प्रोफेसर तक, फौजी-सिपाही से लेकर रक्षा मंत्री तक, सफाई कर्मचारी, रिक्शा चलाने वाले-इन सबके लिए उनके दिल में विशाल जगह थी और इन सभी को मुफ्त दवाई देते थे। कितनी बार हम लोगो ने देखा की बड़े अफसर बोलते थे कि वैद्यजी-हम पैसे वाले लोग हैं और आपको हमसे लेने चाहिये, लेकिन हमारे बाबूजी टस से मस नहीं होते थे। वो अपने नियमावली अपने आप के लिए बनाते थे और उनका पूरी तरह से पालन करते थे।

इसी गाँव-छबडिआ में जन्मे, बचपन से ही बेहद चंचल, और नटखट, 10-11 की छोटी सी उम्र में घर से पलायन और ये उनका खुद का निर्णय कि अब यहाँ वापस नहीं देखूँगा-उनके गजब के आत्म सम्मान और आत्म विश्वास का एक छोटा नमूना है। जरा अंदाज लगाइये कि इस उम्र में घर छोड़ना-बिना किसी रूपए पैसे के, पैरों में चप्पल भी नहीं, किसी से कोई मदद नहीं ली, और **अपने पुरुषार्थ से लाहौर जाकर वैद्यक की और कोढ़ी लोगो की सेवा करने बिहार पहुंच गए। चर्चा चली कि एक गोरा चिट्टा हैंडसम नौजवान वैद्य निःस्वार्थ काम में जुटा है। तब गाँधी जी तक बात पहुंची, माँ जो कि बहुत बड़े जमींदार और स्वतंत्रता सेनानी की बेटी थीं, उनकी जिंदगी में आयीं।** साथ में डॉ. राजेंद्र प्रसाद: भारत के पहले राष्ट्रपति ने बाबूजी को अपना निजी वैद्य बनाया ।

बाबूजी रिसर्च के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। कोई भी रिसर्च करने के लिए हठ, दूरदर्शिता, इमेजिनेशन और विज्ञान पर विश्वास जरूरी होता है। बाबूजी इन सब विशेषताओं से भरपूर थे। 1961 में मेरे जन्म के आस पास उन्होंने अपना पहला ब्लड कैंसर का केस ठीक किया। हम लोगों के लिए ये सोचना ही गज़ब है कि टाइफाइड ठीक करते करते ब्लड कैंसर का केस लिया और बिना किसी भय के उसको पूरी तरह से ठीक किया। उसके बाद हिम्मत और बढ़ी और कई सारे नए रसायन बनाये जिससे उन्होंने तरह तरह के कैंसर ठीक किये। भारत सरकार ने उनके काम को कई बार सराहा, समय समय पर समितियों का गठन किया और उनके काम पर शोध किया। ये उनके गजब के आत्म विश्वास और अथाह प्रयास का एक और नमूना है।

इन सब महान विशेषताओं वाला व्यक्तित्व अंदर से कितना सुन्दर, कितना साधारण हो सकता है-उसका एक उदाहरण-

बाबूजी धोती कुर्ता पहन के अपने रामनगर स्थित घर के सामने चबूतरे पर बैठे हैं। जगजीवन राम रक्षा मंत्री थे और उनके घर में किसी को कैंसर था। उन्होंने एक टीम भेजी वैद्यजी के बारे में पता करने के लिए। ब्रिगेडियर साहेब ने आकर बाबूजी को पूछा कि वैद्यजी कहाँ रहते हैं तो बाबूजी ने कहा कि सामने रहते हैं।

वो साहेब अंदर गए और उनको पता चला कि वैद्यजी तो सामने चबूतरे पर बैठे हैं। पूछा कि आपने बताया क्यों नहीं कि आप ही वैद्यजी हैं, बाबूजी मुस्कराकर बोले कि आपने तो उनका घर पूछा था। ऐसे-ऐसे बहुत सारे प्रसंग हैं जो कि हमारे बाबूजी को स्पेशल, महान, अजर और अमर बनाते हैं ।

बाबूजी को बिना किसी फार्मल ट्रेनिंग के दिव्य दृष्टि, वास्तु-शास्त्र, फेस रीडिंग, इत्यादि का बहुत अच्छा ज्ञान था। बिना किसी फॉर्मल ट्रेनिंग के। सच्ची आत्मा जब नि:स्वार्थ भाव से समाज का काम करे, तो शायद प्रभु ने ये उनको लुभाव में दिया था। हम बच्चों ने कई बार अनुभव किया कि कोई मरीज आया शनिवार को, और बाबूजी ने बोला कि भाई सोमवार को आना, तब इलाज शुरू करेंगे। हम पूछते थे कि क्यों टरका दिया? बाबूजी बोले कि सोमवार तक बचेगा ही नहीं, क्योंकि काल उसके ऊपर मंडरा रहा है। इसी तरह उनको जमीन हंसती या रोती हुई दिख जाती थी। हंसती जमीन में काम करो, तो शुभ नहीं तो उसका उल्टा। इस तरह कि शक्ति का हमने और यहाँ पर उपस्थित कई लोगों ने अनुभव किया है।

एक बार फिर कहूंगा कि ऐसे ऐसे बहुत सारे प्रसंग हैं जो कि हमारे बाबूजी को स्पेशल, महान, अजर और अमर बनाते हैं। ऐसा व्यक्तित्व हमेशा हमारे आस पास रहता है, समाज में, देश-विदेश में, हम सभी के दिल और दिमाग में, और हमें नि:स्वार्थ नए काम करने की प्रेरणा देता है ।

पूर्णेन्दु गोयल (पूरु)
पुणे

'किरण' - पुत्री की कलम से

शशि-चंद्र जी की बसायी लौकिक दुनिया में तृतीय पुत्री के रूप में जन्मीं मैं 'किरण' स्वयं के अस्तित्व से अभिभूत तो हूँ ही, साथ ही गौरवान्वित भी। चंद्रप्रकाश जी, मेरे पिता, निसंदेह एक आदर्श पिता के समस्त गुणों से परिपूर्ण थे। अपने सभी दायित्वों के प्रति पूर्ण समर्पित, त्यागी, सरल, संयमी, चट्टान की भाँति स्थिर किन्तु भावुक, बरगद की विशद् छाया के समान शीतलता देने वाले, धैर्य की प्रतिमूर्ति, संघर्षरत किन्तु ईश्वरीय शक्ति के अटल विश्वासी, संतोषी, कर्मठ, एवं स्वस्थ शरीर वाले, प्रगतिशील आदि अनेक विशेषताओं से युक्त थे हमारे पिता।

आज से 100 वर्ष पूर्व इसी छबड़िया गाँव की मिटटी में 'चाँद' नामक एक ऐसे बालक ने जन्म लिया, जिसने अपने अथक प्रयास से आयुर्वेद जगत् में अभूतपूर्व योगदान देकर समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया। जीवन में अनेक विषम परिस्थितियों से जूझने पर भी न तो उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा के विकासक्रम को रुकने दिया और न ही अपनी तीन पुत्री एवं तीन पुत्रों की शैक्षिक, बौद्धिक एवं वैयक्तिक प्रतिभाओं को कभी प्रतिबंधित होने दिया। उनके सुन्दर, सुडौल शरीर की समानता विशाल बरगद वृक्ष से की जा सकती है, जिसकी शीतल छाया में ना जाने कितने ही प्राणी ठंडक प्राप्त करते हैं। पिता की मजबूत कलाई को पूर्ण निश्चिंतता से थामे-थामे चलते हुए, हम सब बड़े हो गए, पता ही नहीं चला। बड़े भाई के अभाव में बाबूजी ने बड़े भाई होने का दायित्व भी हमारे लिए बखूबी निभाया। हिंदी भाषा के धनी बाबूजी ने खेल ही खेल में, आरंभिक अवस्था से ही जीवन के विभिन्न आयामों से हमें अवगत करवाया, उच्च संस्कारों का बीजारोपण किया। समय की सदुपयोगिता, जीवन की क्षणभंगुरता, परोपकार, सदाचारिता, सत्यता, सच्चरित्रता, नारी शक्ति का सम्मान, परिश्रम का महत्व, मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति आदि विषयों पर अनेक लेख लिखवाये, जिनके माध्यम से हमें जीवन के अनेक गूढ़ पहलुओं को समझने में पर्याप्त सहायता मिली।

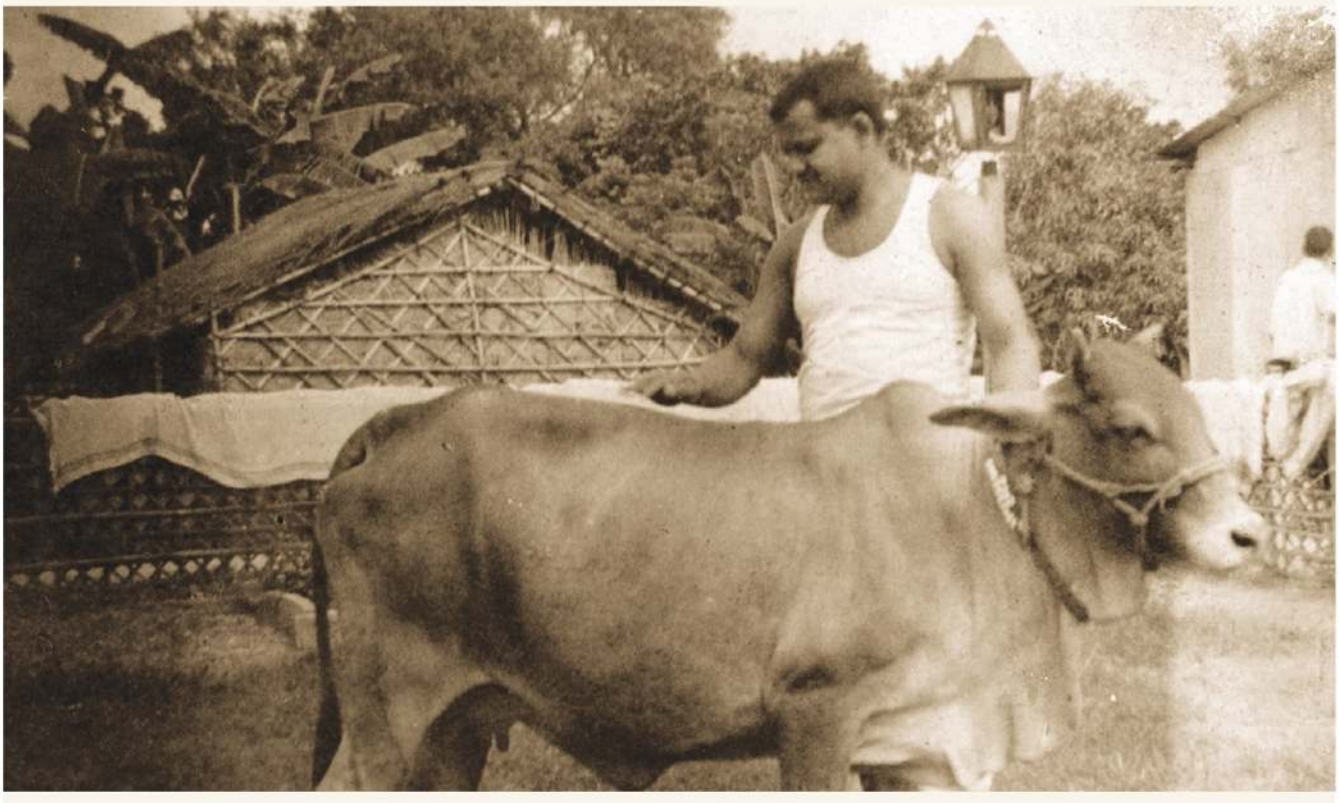
बाल सहजता उनके व्यक्तित्व की विशिष्टता थी। अच्छे-बुरे कर्म की परिभाषा बताते हुए उन्होंने एक दिन मुझसे कहा कि जिस काम को करके तुम्हें आंतरिक प्रसन्नता हो और तुम उसे दूसरों को बताने के लिए आतुर हो तो समझो कि वह काम अच्छा है और इसी के विपरीत जिस काम को करते तुम स्वयं दुखी हो और सबसे उसे छुपा कर रखना चाहो तो जानो कि यह काम गलत हुआ। साधारण भाषा में, मेरे विचार से इससे अधिक अच्छे बुरे की सरल परिभाषा कोई अन्य हो ही नहीं सकती।

बाबूजी हम सब की शिक्षा के प्रति सदैव सजग एवं सचेत रहते थे। आर्थिक परेशानियां होने पर भी शिक्षा के प्रति हमें प्रेरित करते रहते थे और आवश्यकतानुसार टयूशन आदि की व्यवस्था भी करते थे। मेरठ के अनेक बड़े विद्यालयों के अनेक अध्यापक-अध्यापिकाओं का हमारे घर में प्रायः आना-जाना होता रहता था। हम सभी बच्चों को अपने शिक्षक वर्ग का सम्मान करना सिखाया जाता था। बाबू जी कहते थे कि गुरु सदैव सम्मानीय होता है। कोई भी व्यक्ति गुरु के ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। बाबूजी हम सभी बच्चों को

अपने जीवन काल में ही स्वावलंबी देखना चाहते थे। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने ऐसा संभव कर दिखाया भी, जो उस छोटी हैसियत वाले इंसान के लिए बहुत बड़ी बात थी। शिक्षित होने से उनका अभिप्राय व्यक्ति के सर्वांगीण विकास से था। उनका मानना था कि शिक्षित व्यक्ति वही है जो मानसिक संकीर्णता से त्रस्त ना हो। वे अंतर्जातीय व अंतराष्ट्रीय विवाह के भी पक्षपाती थे किंतु विवाह विच्छेद के विरोधी थे। उनके अनुसार विवाहोपरांत स्वार्थ को त्यागते हुए परस्पर एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए ताकि वैवाहिक जीवन सुगमता से व्यतीत किया जा सके।

बाबूजी के सरल व्यक्तित्व ने हमारे जीवन को भी बहुत सरल एवं सार्थक बनाया। गौशाला, घर की सफाई, गोबर के उपले बनाना, बर्तन साफ करना, गाय का दूध निकालना, खाना बनाना, चित्रकारिता, गायन-वादन, पढ़ाई, स्वेटर बुनाई, सिलाई-कढ़ाई आदि सभी काम हम अथक परिश्रम से करते थे, जिसको देखकर वे अत्यंत प्रसन्न होते थे और सदैव प्रोत्साहित करते थे। गाय की कुट्टी और घास मंगवाने के लिए यदाकदा वे मेरे साथ थोड़ी राजनीति भी खेलते थे, कहते थे कि किरण, तेरी लायी कुट्टी और घास गाय शौक से खाती है और उनकी इसी बात से खुश होकर में ताज़ी दूब घास और ताज़ी कुट्टी अपने सामने कटवा कर लाया करती थी, इस उम्मीद से कि गाय को पसंद आएगी। यह सब उन दिनों की बातें हैं जब मनुष्यों के साथ-साथ हम मूक पशुओं के हृदय की धड़कन को भी महसूस किया करते थे।

बाबूजी आयुर्वेद के विशिष्ट ज्ञानी थे। अपने सभी कार्यों को ईश्वरीय भक्ति के पुट से परिपक्व करते थे। 'हरि इच्छा बलवती' बारंबार उनकी जिव्हा पर होता था। अनेक असाध्य रोगों को सहजता से ठीक कर देते थे। रोग निदान की अद्‌भुत क्षमता थी। बाल्मीकि समाज से विशेष प्रेम करते थे।



'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:' उनके जीवन के दर्शन का एक पहलू था। बारंबार जीवन में आई कठिनताओं से जूझ कर भी साहस का दामन थामे रहते। प्रात: 4:00 बजे से खरल में दवा घोटते हुए अधिकांशत: गायत्री मंत्र का जाप करते थे। मां-बाबूजी का आपसी सहयोग अद्‌भुत था। दोनों एक दूसरे के पूरक बनकर जीवन के युद्ध को यथासंभव प्रसन्नतापूर्वक झेलते थे। घर का वातावरण खुशहाल एवं सदैव शैक्षणिक रहता था। सीखो, सीखो और सीखो - यही निरंतरता थी जीवन की। मां-बाबूजी ने कठोर परिश्रम एवं यत्नपूर्वक हम सभी की परवरिश की। ईश्वरीय कृपा से घर में संपन्नता बनी रही। गाय का दूध, मलाई, मक्खन, मठ्ठा, घी, अनेकों पकवान, बादाम की ठंडाई, बेल का शरबत, नींबू की शिकंजी, भगोने में भरे कटे हुए खीरे, ढेरों कटे आम, कचरी, पापड़, चिप्स आदि की सदैव भरमार, वेद फैक्ट्री से बनवाए बिस्किट्स, पीठा, कुल्फी, आलू की टिक्की, समोसे, खीर, रबड़ी आदि के अतिरिक्त होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी आदि त्योहारों की धूम से बाबूजी का परिवार आनंदित और आहलादित रहता था।

1962 में बाबूजी ने 'वसंत ऋतु' पर मुझे एक निबंध लिखवाया था। उसमें एक उक्ति लिखवाई थी - 'सब दिन जात न एक समान'। इसी निबंध की पूर्णता करते हुए उन्होंने लिखवाया था -

ना रहता फूलों का आहवाहन,
नहीं रहता भौरों का राज,
कोकिला होती अंतर्ध्यान,
चला जाता प्यारा ऋतुराज।

वस्तुत: यही सत्य हुआ। सब वो दिन समय के साथ व्यतीत हो गए। समय ने हम सब को बड़ा और स्वावलंबी बना दिया। बाबूजी अस्वस्थता के कारण असमय ही वृद्ध हो गए। उनका स्वास्थ्य गिरता चला गया और 13 दिसंबर 1984 को वे अपनी अंतिम यात्रा पर निकल पड़े, पुन: नितांत अकेले। छोड़ गए अपनी यादें और अनेकों ऐसी विशिष्ट शिक्षाएं जो आज भी हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। हम कृतज्ञ हैं उनके, और सदैव रहेंगे।

डॉक्टर सुनील जोशी की कुछ पंक्तियां पिता के पद की गरिमा को अभिव्यक्त करती हैं -

मुझे बचपन में पापा ने छुआई थीं जो कंधों से,
जहाज़ों से भी उड़कर भी मैं वो ऊँचाई को न छू पाया,
उसी के अंश हैं हम सब, उसी का सच्चा नाता है,
उसी के परवरिश से अपना जीवन साँसें पाता है,
पिता का नाम ही हर ज़हन में क्यों जगमगाता है,
एक ऐसी रोशनी जो उम्र भर तक झिलमिलाती है,
पिता की सीख तो अंतिम समय भी काम आती है,
पिता के दम से ही मां के सभी श्रृंगार होते हैं,
पिता के हाथों ही रिश्तों के बेड़े पार होते हैं,
हमारी हर कहानी का पिता किरदार होते हैं,
पिता की सीख होती है मुसीबत में मत रोना,
पिता कहते हैं संकट में कभी साहस नहीं खोना,
पिता पीतल की दुनिया में भी होता है खरा सोना,
अंधेरे में पिता उम्मीद का सूरज उगाता है,
पिता कहते हैं हम जिसको वही अपना विधाता है।

डॉ किरण गुप्ता
दिल्ली

बाऊजी - एक आदर्श

बाऊजी यानी (वैद्य स्वर्गीय श्री चंद्रप्रकाश जी) मेरे जीवन का दूसरा आदर्श पुरुष, जिनके व्यक्तित्व के सामने अनायास ही हाथ जुड़ते और सर झुक जाता था और आज भी उनका नाम आते ही श्रद्धापूर्वक हाथ जुड़ता हुआ सिर झुक जाता है।

पहले नाना जी (स्वर्गीय श्री नीलमणि दास) और उसके बाद बाऊजी, जिनसे मैं डरता था। बाऊजी का व्यक्तित्व मुझे बड़ा प्रभावित करता था, चेहरे पर तेज, गोरा रंग, मुखमंडल गंभीर परंतु सहज व्यक्तित्व, सफेद धुले हुए खादी वस्त्रों से ढका हुआ एक ओजवान पुरुष, जिनको तख्त पर बैठकर खरल चलाते हुए देखना एक अलग ही आकर्षण था, जो आकर्षित करता था।

जब भी मौका मिलता मैं बाऊजी से मिलने हापुड़ अड्डा चला जाता था, जहाँ उनका दवाखाना और निवास स्थल भी था। पहले पहल चूर्ण के लालच में, बाद में उनके व्यक्तित्व से खींचा चला जाता था, कभी पैदल, कभी भाड़े की साइकिल, तो कभी बस से। एक दिन पेट में गुड़गुड़ हुआ तो पहुँच गया बाऊजी के पास। मुझे देखते ही बोले "और नाटकबाज, कौन सा नाटक चल रहा है?" तब मैं बंगाली नाटक करता था। मैंने कहा मनोज मिश्रा का नाटक "छोबोल"।

मुझे घूरकर देखा और बैठने का इशारा किया। मैं हाथ बांधकर बैठ गया। डरा, सहमा, इधर-उधर टुकुर-टुकुर देख रहा था। कई तरह की खुशबू थी, मन को अच्छा सा लग रहा था।

मैं थोड़ा सहज हुआ ही था कि उन्होंने आँख उठाकर मुझे देखा, खरल से हाथ हटा ही नहीं था वह वैसे ही चल रही थी। बोले "मछली भात ज्यादा खाया क्या?" उन्होंने मुझे आते ही भाँप लिया था कि मेरे आने का कारण क्या है, यह है बाऊजी का कमाल, रोग के लक्षण दूर से भाँप लेते थे।

मैंने कहा "हाँ", फिर क्या था, उन्होंने हाथ बढ़ाकर एक शीशी निकाली और साफ छोटे-छोटे कागज पर चूर्ण रखा, एक मुझे दिया और कहा, "खा लो" और बाकी की पुड़िया बनाकर दी और बोला- "मुकुल, तुम हिंदी में भी नाटक करना शुरू करो क्योंकि हिंदी राष्ट्रीय भाषा होने के साथ साथ व्यापक है। तुम्हारे आगे बढ़ने के रास्ते खुलेंगे"।

यह बात मेरे जेहन में बैठ गई, आगे चलकर मैंने अपने मित्रों के साथ मिलकर एक क्लब बनाया, जिसका नाम था "यंग बीटल्स क्लब" और हिंदी नाटक करना शुरू कर दिया। फिर एक नया दौर शुरू हुआ, मेरठ में काम करते-करते दिल्ली की ओर बढ़े, फिर रुका ही नहीं! दिल्ली आना जाना शुरू। दिल्ली में नाटक करता हुआ राष्ट्रीय नाटक विद्यालय से अभिनय से प्रशिक्षित होकर दिल्ली में काम करते हुए मुंबई...

और आज मैं जहाँ भी पहुँचा हूँ, जो भी कर रहा हूँ, अगर बाऊजी ने वो बात ना कही होती, "हिंदी में नाटक कर, हिंदी राष्ट्रभाषा है..." शायद मैं यहाँ नहीं होता।

मैं बाऊजी का हमेशा शुक्रगुजार रहूँगा, और बहुत सी स्मृतियाँ हैं, परंतु मेरे जीवन का दिशा परिवर्तन यहीं से होता है, जो बाऊजी के बिना कभी संभव ही नहीं हो पाता, शत्-शत् प्रणाम बाऊजी को!

मुकुल नाग
मुम्बई

वैद्य चन्द्र प्रकाश को सादर नमन

वैद्य जी के साथ मेरे परिवार का संपर्क 1960 में हुआ था। मुझे उनके परिवार के साथ रहने का सौभाग्य कई वर्षों तक रहा व उनसे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। वैद्य जी व उनका सारा परिवार सादा जीवन, उच्च विचारों का समर्थक रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में वे सभी बच्चों को प्रेरित करते थे। वैद्य जी तथा उनकी पत्नी समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत थे। वे दोनों रात-दिन मेहनत करते थे और दवाइयां बनाने का काम बड़ी मेहनत व लगन के साथ करते थे। अपने कार्य के साथ-साथ परिवार की जिम्मेदारियों में भी दोनों एक दूसरे का सहयोग करते थे।

उन्होंने कई असाध्य रोगों के लिए दवाइयाँ तैयार की, जिसमें उन्हें बहुत सफलता मिली और समाज को बहुत फायदा मिला। उनकी छवि एक मेहनती, समाज सेवी, साफ बोलने वाले व्यक्ति के रूप में समाज के सामने आई।

आज जिस प्रकार से वैद्य बालेंदु प्रकाश -सुपुत्र वैद्य चंद्रप्रकाश जी पुरातन आयुर्वेदिक विज्ञान का प्रयोग करके आधुनिक युग में आज के समय की जटिलतम व्याधियों का उपचार कर रहे हैं और मानव सेवा के इस कार्य से पूरे विश्व पटल पर देश और महान आयुर्वेद को जो पहचान मिल रही है, तो उसकी ज्योति का प्रकाश मुझे स्पष्ट रूप से स्वर्गीय महान चंद्र प्रकाश जी के महान जीवन से आता प्रतीत होता है।

हम सबको जीवन में अच्छा व्यवहार सदैव ही भाता है। और ऐसी आशा भी हम सबको सदैव रहती है। मैं आनंदित अनुभव करती हूं कि मुझे इस प्रकार के एक सरल परंतु महान, एवं चिकित्सा विज्ञान के धनी व्यक्तित्व को अपने पूरे परिवार के साथ दूसरों के जीवन के लिए दिन-रात सेवा करते बहुत नजदीक से देखने का सौभाग्य मिला है।

आज उनकी 100 वीं पुण्यतिथि पर मैं और मेरा संपूर्ण परिवार वैद्य चंद्र प्रकाश जी को शत शत नमन करते हुए कुछ संस्मरण श्रद्धा सुमन रूप साझा कर रहे हैं।

संतोष शर्मा
जयपुर

मेरे चाचा जी

जैसा कि मैंने अपने पिताजी से सुना है। चाचा स्वर्गीय चंद्र प्रकाश जी **छोटी आयु में ही घर छोड़ कर चले गए थे।** उन्होंने अपनी प्रतिभा से वैद्यक सीख ली। बताते हैं उसमें उनके गुरु जी का हाथ था। इसके बाद चाचा जी गाँधीजी के संपर्क में आए। कहते हैं गाँधीजी उनके व्यवहार व कर्तव्यनिष्ठा से बहुत प्रभावित हुए। चाचा जी एक सुंदर व सुडौल शरीर वाले व्यक्ति थे। बताते हैं जब उनसे उनके परिवार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने स्पष्ट रूप से सत्य बताया कि वे एक साधारण परिवार से संबंध रखते हैं तथा

उनकी जमीन गिरवी रखी हुई है। कहते हैं इस बात से गाँधीजी व नाना जी (श्री लक्ष्मी नारायण जी) बहुत प्रभावित हुए तथा उनसे अपनी पुत्री से शादी करने का मन बना लिया। उस शादी में परिवार के सदस्यों को बुलाया जिसमें मेरे पिताजी भी गए।

बताते हैं, शादी के बाद चाचा जी से पूछा गया कि जमीन छुड़ाने के लिए कितना पैसा चाहिए। चाचा जी ने संकोच में केवल 1500 रुपए बताए क्योंकि उनको वास्तव में कितना पैसा चाहिए मालूम नहीं था। उस पैसे से उन्होंने जमीन छुड़वाई। बाद में नाना जी गांव आए, उन्होंने स्थिति को देखा तथा और पैसे देने के लिए कहा लेकिन चाचा जी ने और पैसे नहीं लिए। यह दर्शाता है कि यह जानते हुए कि वहां से और पैसा मिल सकता था, उन्होंने धोखा नहीं दिया ।

चाचा जी परिवार के बच्चों के उत्थान के लिए काफी चिंतित थे तथा हमेशा चाहते थे कि बच्चों को नौकरी वगैरा मिल जाए। यह मेरे साथ हुआ। एक बार CDA (controller of defence accounts) चाचा जी से दवाई लेने चाचा जी के पास आए। बातचीत में बहुत निपुण थे। पहले चाचा जी ने उनके बारे में पूरी जानकारी ली। इसके बारे में चाचा जी ने श्री सूरज बली की शादी में श्री मूलचंद कंकरखेड़ा वाले जीजा जी को बताया। तो मूलचंद जी ने बताया कि वह तो नौकरी तुरंत दे सकते हैं। पहले तो सबने इसे मजाक समझा, लेकिन कुछ दिन बाद भी बहादुर उमराव चाचा जी के यहां से दवाई लेने गए। उन्होंने सीडीए से कहा कि (उन्होंने अपना भतीजा तो नहीं बताया) मेरे यहां एक गरीब परिवार का लड़का आता है। क्या उसकी कुछ मदद कर सकते हैं। सीडीए श्री बहादुर उमराव साहब के लिए यह एक मामूली बात थी। उन्होंने कहा कि लड़के को भेज दीजिएगा और मुझे ऑफिस बुलाया। इंटरव्यू में मेरे से केवल यह पूछा कि आप श्री चंद्र प्रकाश को कैसे जानते है। मैंने वहाँ पर चाचा जी ने जो कहा वैसे ही बताया और नौकरी लग गई। मैं अपने जीजा स्वर्गीय श्री मूलचंद्र जी व स्वर्गीय चाचाजी श्री चंद्रप्रकाश का हमेशा ऋणी रहूँगा। उन्होंने श्री रवि प्रकाश व विमल प्रसाद को भी नौकरी दिलाई।

एक किस्सा उनका सादगी से जुड़ा है। यह सन् १९६९ की बात है, मैं देहरादून में पोस्टेड था। एक बार चाचा जी कला बहन जी के लिए एक लड़का देखने आए, जो आर्मी में मेजर था। मैं एक छोटे से कमरे में रहता था। उनके देहरादून में कई मित्र थे, वह उन से मिलने गए। उन्होंने चाचा जी को अपने यहाँ ठहरने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने वहाँ ठहरना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने उनसे कहा कि जब मेरा भतीजा यहाँ रहता है तो मैं उसी के पास ठहरूंगा। उन्होंने मुझे भी कहा कि मैं तुम्हारे पास ही ठहरूँगा, कोई बात नहीं सब एडजस्ट हो जाएगा। जो बात अपने घर में होती है। वह भला दूसरी जगह कैसे मिल सकती है। इससे उनकी आत्मीयता वह अपनेपन का पता चलता है।

धर्मपाल गोयल
नोएडा

विनोदी व्यक्तित्व के धनी-बाऊजी

श्री चंद्रप्रकाश वैद्य जी एक दिव्य व्यक्तित्व, सरल हृदय, **विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे।** बचपन में मैं अपने पिता के साथ उनके रामनगर स्थित आवास पर गई थी। वैद्य जी के आंगन में अखबार बिछे थे और बालेंदु वैद्य (उस समय विद्यार्थी) एक औषधि की छोटी-छोटी गोलियां बनाकर रख रहे थे। मैंने पूछा, बाबूजी आप यह किस दवा की गोली बना रहे हैं। उन्होंने एक-दो गोली मेरे हाथ पर रख दी, बोले खा ले, मैंने मुँह में रख ली। दोनों पिता बेटे मेरा मुँह देख रहे थे। मैंने उत्सुकता से पूछा इसका असर क्या होगा। दोनों हंसने लगे और कहा, "तेरे पर असर देख कर ही तो पता लगेगा कि इस दवाई का असर क्या होगा"। मेरे मन-मस्तिष्क में उनका स्नेही, हँसता हुआ चेहरा आज भी सहेजा हुआ है।

उन को मेरा शत्-शत् नमन

अंजली भार्गव
नैनीताल

सादा जीवन उच्च विचार

अपने जीवन काल में बाबूजी ने बहुत मेहनत की। गुरु महाराज जी और नाना जी स्वर्गीय लक्ष्मी नारायण बाबू उनके मार्गदर्शक थे। इनके अतिरिक्त डॉ राजेंद्र प्रसाद जी, जो स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे, उनसे बाबूजी के बहुत अच्छे सम्बन्ध थे।

बाबूजी प्रेमी स्वभाव के व्यक्ति थे। अपने परिवार, मित्रगण एवं हर किसी की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। वह समझते थे कि समय आने पर सब अपना घोंसला खुद बना लेते हैं, इसलिए कभी उन्होंने अपने बच्चों पर दबाव नहीं बनाया। शायद इसी स्वतंत्रता की वजह से उनके छः बच्चे विश्व के भिन्न-भिन्न कोनों में जाकर अपनी पहचान बना सके।

हिमांशु अग्रवाल
सिडनी, आस्ट्रेलिया

बाबूजी नयी सोच के व्यक्ति थे....

बाबूजी नयी सोच के व्यक्ति थे। जब मैं हिमांशु से शादी कर घर की बड़ी बहु बनकर आयी, उन्होंने कभी सिर पर पल्ला डालने को नहीं कहा, जैसा कि अन्य घरों में बहुओं से अपेक्षा की जाती थी।

हँसमुख एवं सरल स्वभाव के थे बाबूजी। उन्हें खुशनुमा माहौल पसंद था। सभी से मज़ाक करना, हँसना-हँसाना उनकी खूबी थी। 1981 दिसंबर में जब चारु का जन्म हुआ, दादा बनने की खुशी में उन्होंने घर

पर आये सभी लोगों को मिठाई खिलाई और बताया कि आखिर वह भी दादा बन गए।

बाबूजी मेहनती थे। अम्मा जी के साथ मिलकर सभी दवाइयाँ स्वयं निर्मित करते थे। शाम को दिन भर मरीज़ देखने के बाद जो भी आय आती, अम्माजी को दे देते और कभी हिसाब नहीं पूछते।

बाबूजी खाने पीने के शौक़ीन थे। घर का ताज़ा खाना पसंद करते थे। अम्माजी उनके पसंद के पाक बनातीं और वह बेहद चाव से खाते। जब भी हम मेरठ जाते, बाबूजी अपने आप बाजार जाते और ताज़े फल सब्जियाँ



लेकर आते। वह मुझे सरसों का साग और मक्के की रोटी बनाने को कहते।

मिथलेश अग्रवाल
सिडनी, आस्ट्रेलिया

वह नब्ज देखकर ही मर्ज समझ जाते थे.....

बात बहुत पुरानी है, 1962-63 के आस पास की है। उस समय मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री मामचंद जी की सदर, दाल मंडी में चावल की दुकान थी और हमारे वैद्य श्री चंद्र प्रकाश जी का आयुर्वेदिक दवाखाना रामनगर, हापुड़ अड्डे पर था। मेरे पिताजी और वैद्य जी की अच्छी दोस्ती थी ।

वैद्य जी बहुत फक्कड़ किस्म के मस्त आदमी थे, तीन बेटियों की जिम्मेदारी के बाद भी वह बहुत मस्त थे। वैद्य जी के ससुर साहब उस समय के राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के बहुत अच्छे मित्र थे, तो राजेंद्र प्रसाद जी वैद्य जी को अपना दामाद ही मानते थे।

वैद्य जी का तजुर्बा बहुत ही अधिक था, **उनका निदान बहुत ही अच्छा था। वह नब्ज देखकर ही मर्ज समझ जाते थे।** 1963 के आसपास मेरी बहन, जो उस समय कुछ 1-2 साल की थी अचानक बीमार हो गई। एक अच्छे डॉक्टर से इलाज चल रहा था। डॉक्टर ने कहा था इसको नमक बिल्कुल नहीं देना। इलाज के बीच में ही उसकी तबीयत बिगड़ गई, रात्रि में ऐसा लगा कि उसकी मृत्यु हो गई। मेरे पिताजी बहुत परेशान थे और घर के बाहर ही खड़े थे। अचानक उधर से वैद्य जी निकले, पिताजी को देख कर रुक गए। पूछा लाला कैसे परेशान खड़े हो। तो पिताजी ने सारी बात बताई, सुनकर वैद्य जी ऊपर घर पर आ गए, और बहन को देखकर बोले अभी इसमें जान है। तू मेरे घर चल मैं दवा देता हूं, पिताजी वहां से चार पुडिया लेकर आए, एक पुड़िया जबरदस्ती पानी के साथ उसके मुँह में डाली। थोड़ी देर बाद ही उसके शरीर में चेतना आने लगी, शाम तक चारों पुड़िया दे दी और वह ठीक हो गई। पिताजी ने वैद्य जी से पूछा कि

वह दवा क्या थी। तो वैद्य जी ने बताया कि कुछ तो दवा थी, बाकी काला नमक था, जिससे वह ठीक हो गई। आज वह करीब 60 साल की हैं।

वैद्य जी बहुत ही मस्त थे। इतने मस्त लोग कम ही होते हैं। वह बहुत ही अच्छे और बहुत ही सुंदर व्यक्तित्व के थे।

राधा कृष्ण गोयल
मेरठ कैंट

मानव सेवा ही उनके जीवन का अनुकरणीय योगदान

जन्माष्टमी के अवसर पर आदरणीया कला दीदी के नेतृत्व में झाँकी बनाने, सजाने में मेरे योगदान की भरपूर प्रशंसा करना एवं प्यार उँढेलना जैसा उनका आशीर्वाद सुखद लगता है। एक बार 1960 के दशक के शुरू में महानतम् व्यक्तित्व के स्वामी पूजनीय जय प्रकाश नारायण जी का आगमन इनके पारिवारिक संबंधों के कारण हुआ। उनके सम्मान में आ. कला दीदी द्वारा बनाई छोटी इलायची की माला को मेरे द्वारा उन्हें माल्यार्पण करना कितने गौरव का क्षण मुझे पूज्य. वैद्य जी के द्वारा प्रदान हुए। मेरे जीवन की यह अमिट स्मृति है। इतनी उदारता, विशालता को उनके जीवन में मैंने सदैव नज़दीक से देखा ।

पूज्य वैद्य जी द्वारा असाध्य रोग 'कैंसर' के उपचार की दिशा में किये सतत् प्रयास एवं मानव सेवा में लीन रहना उनके जीवन का सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, अनुकरणीय योगदान रहा; जिसे सच्ची विरासत के तौर पर उनके सुपुत्र प्रिय बालेन्दु द्वारा लगातार आगे बढ़ाते चलते जाना उनके आशीर्वाद का सदा गौरवान्वित करने वाला वरदान है।

उनके मानवीय आचरण के ऐसे अनेकों प्रसंग हैं। पूजनीय वैद्यजी के मेरे पूज्य बाबूजी स्व. श्री जगन स्वरूप गुप्ता जी के साथ बहुत ही श्रद्धापूर्ण संबंध रहे। उन्हें शत शत नमन् एवं उनके दिव्य रूप को हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित। दिव्य भाव के साथ

जितेंद्र गुप्ता
मेरठ

वैद्यजी पिताजी को "भाईजी" के नाम से सम्बोधित करते....

आदरणीय स्वर्गीय श्री वैद्य चंद्रप्रकाश जी के 100वें जन्मदिन पर याद करते हुए दोनों परिवार के आपसी घनिष्ठ एवं नि:स्वार्थ भाईचारा की मिसाल पूज्य वैद्य स्वर्गीय श्री चंद्रप्रकाश जी एवं पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री दीपराज सिंह का परिचय एवं मिलन मेरे जन्म 1956-57 के आसपास से है।

होश संभालने पर पुरानी बातें खासकर अम्मा जी एवं चाची जी से पता चली कि दोनों

परिवार का साथ श्री गांधी आश्रम, मेरठ में काफी नजदीकी रहा। क्योंकि दोनों माताएं पूर्व उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार की रहने वाली थी तो भाषा का मेल रहा तथा दोनों आदर्श गृहणी थी। पूज्य स्वर्गीय वैद्य जी एवं स्वर्गीय पिता जी का कद एवं स्वास्थ्य एक सा था, दोनों जनों में आत्मीयता एवं आपसी प्रेमभाव था।

पूज्य वैद्य जी गुरु जी महाराज के परम प्रिय शिष्य थे। वे जब भी वैद्य जी के यहां आते हवन होता तो उसमें पिता जी अवश्य जाते। कभी-कभी हम लोग भी जाते। महाराज जी के हवन में अलग ही दैविक अनुभूति होती। एक बार मुजफ्फरनगर के पचैंडा में हवन यज्ञ था, उसमें वैद्य जी, पिता जी, चाचा जी, मैं और श्री ललित भैया, किरण दीदी आश्रम की जीप से गए। श्री गांधी आश्रम, मुजफ्फरनगर से जीप आगे चली तो अमरूद के बाग थे। अमरुद लेने के लिए रुके तो माली के पास पके-पके अमरूद थे, जो पसंद नहीं आए। दोनों जने पेड़ पर चढ़कर ताजे अमरूद गिराते और खाते रहे। ऐसे फुर्ती से उतरे जैसे कितनी खुशी हो, बोले यह है अमरूद खाने लायक।

पचैंडा पहुंचने पर देखा कि काफी बड़ा यज्ञ था। ग्रामवासियों एवं गुरु जी के शिष्यों ने काफी तैयारी की हुई थी। श्री शिव मंदिर में, वैद्य जी ने जहां दवा निर्माण की शिक्षा प्राप्त की थी, हंडिया में सीप आदि रखी थी, जो दवा बनाने में प्रयोग में आती थी। प्रसाद में गन्ने के रस की खीर मिली जो कि तालाब के जल कुंभी के पत्र पर थी।

कभी-कभी बातचीत में चाची जी एवं माता जी से पता चला कि कभी-कभी आश्रम या घर पर लिट्टि चोखा का प्रोग्राम बनता, तो दोनों जने मिलकर बनाती। गाय हमारे यहाँ सदैव रही। उपला भी अम्मा जी खुद बनाती थी। लिट्टि बाटी चोखा पूर्वांचल में शाकाहारियों का प्रिय भोजन है।

आदरणीय वैद्य जी पिता जी को "भाई जी" या "दीपराज भाई" के नाम से संबोधित करते तथा उनके सभी बच्चे ताऊ जी के नाम से संबोधित करते। दोनों परिवारों में गाय रहती थी परंतु यदि हमारे यहां दूध नहीं होता था, तो वैद्य जी के यहां से आता था। जो कि अक्सर मैं हीं लेने जाया करता था। जब वहाँ दूध नहीं होता था, तो अक्सर प्रिय बाले एवं पूरू दोनों भाई साइकिल चलाते-खेलते हुए पीतल का बड़ा बर्तन लेकर आते। आने पर ताऊजी के साथ बचपना व्यवहार करते। इन्हीं दोनों भाई जो कि राजकीय इंटर कॉलेज, मेरठ के छात्र थे की प्रेरणा से मैंने कक्षा 9 की प्रवेश परीक्षा दी, जिसमें पास होने पर प्रवेश मिला। इसी दौरान परीक्षा के समय श्री हिमांशु भैया इंटर के गणित छात्र थे। गणित के इंचार्ज श्री आर. एन. गुप्ता जी थे, जिनके साथ वैद्य जी आ रहे थे। तो उन्होंने मेरा परिचय उनसे करवाया। शायद मेरे प्रवेश परीक्षा में पास होने में उनका आशीर्वाद भी रहा हो।

वैद्य जी परम गुरु जी के आयुर्वेदिक दवा का ही प्रयोग करते, स्वयं ही तैयार करते। अक्सर कई दवा हंडिया में भरकर ऊपर से मिट्टी से बंद कर लेते तथा जहां गाय बांधी जाती वहीं पर नीचे मिट्टी में कुछ दिनों के लिए गाड़ते थे। दोनों आदमी सुबह टहलने के बहुत शौकीन थे तथा आते ही शास्त्र और जड़ी-बूटी, दवाई की चर्चा करते। अंतिम सांस भी 6 अक्टूबर 1975 को गोली

लगने पर वैद्य जी की गोदी में ही गिरे। उन्हें मेडिकल कॉलेज लेकर गए पर उनके प्राण निकल चुके थे। बी.एस.सी. में मैं डी.एन. कॉलेज का छात्र था, जहां प्रवेश पूज्य स्वर्गीय पूनम दीदी के प्रयास से हुआ था। डॉक्टर अग्रवाल साक्षात्कार ले रहे थे। दीदी ने कहा बोल देना मैं पूनम दीदी का भाई हूँ।

पिताजी मेरे को वैद्य की पढ़ाई पढ़ाना चाहते थे। इस पर वैद्य जी ने बताया कि संस्कृत अनिवार्य है, तो मैंने हाईस्कूल की सिर्फ़ संस्कृत से दोबारा परीक्षा दी, जिसमें पास हुआ। उसका फॉर्म भी श्री छिद्दा सिंह त्यागी जी नहीं दे रहे थे। मैंने वैद्य जी को बताया। उन्होंने त्यागी जी से कहा कि भाई जी का लड़का है, संस्कृत से परीक्षा देगा तब उन्होंने प्राइवेट फॉर्म दिया।

पूज्य वैद्य जी जब भी आश्रम में घर पर आते या सुबह प्रातः टहलने के लिए आते, तो बाहर जामुन का पेड़ था। वहीं से नमस्कार बोलते हुए आते। जड़ी-बूटी की चर्चा करते हुए टहलने निकलते। आपकी ही दवा के प्रभाव से श्री गुप्तनाथ सिंह जी कैंसर से ठीक हुआ, उनको जीवनदान मिला। पूज्य पिताजी को चर्म रोग सोराइसिस, जिसका इलाज वैद्य जी अपनी दवा से ही करते। मैं ही दवा लेने जाता, जैसे ही फाटक खोल कर साइकिल अंदर करता सामने अपनी सीट पर बैठे हुए बोलते आओ पृथ्वी सिंह बेधड़क। फिर मैं बैठता तो दवा के पुड़िया के लिए कागज काटते, गिन कर लगाते और उन पर एक-एक कर कई तरह की दवा मिलाते चाकू की नोक से थोड़ी थोड़ी आवश्यक मात्र मिलाते तब पुड़िया बनाकर देते। अजीब लगन थी! पिताजी का वह रोग अंत समय में ठीक हो गया था। आश्रम के एक वर्कर थे श्री गोकुल राम जो अक्सर शाम को वहां जाते और दवाई घोंटने का कार्य करते। मैंने देखा हमेशा कोई ना कोई दवा तैयार करते रहते। बगल में जहां गाय रहती थी चूल्हा था, उस पर दवा पकती रहती थी। जिसमें उपला और पतली गोल लकड़ी जलती थी।

दोनों भाई का इतना आपसी प्रेम लगाव था कि देखने वाले अजब महसूस करते। अंतिम समय में भी जब पिताजी को सुबह टहलते समय गोली लगी वैद्य जी के गोदी में ही गिरे। उनकी गोदी में ही अंतिम साँस ली। पिता जी के स्वर्गवास के बाद वे काफी भयभीत रहे और कहा कि खादी दूषित हो गई है। अब नहीं पहनूँगा तो मटका रेशम का कुर्ता और खादी की धोती पहनते। क्योंकि उनके ससुर स्वर्गीय श्री लक्ष्मी बाबू मुजफ्फरपुर खादी संस्थान के संस्थापक रहे। पहले से ही खादी का उपयोग करते थे।

इन्हीं यादों के साथ में उनके 100वें जन्मदिन पर अपने पूरे परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी इस विरासत को प्रिय वैद्य पदमश्री सम्मानित श्री बालेंदु जी ने काफी बढ़ाया है। उनकी पत्नी श्रीमती गोपा जी, वैद्य शिखा, मेघा व पुत्र देवेन्दु का इस शुभ कार्य में अधिक योगदान है।

पृथ्वीराज सिंह
मेरठ

अपने रोगियों की हरदम सहायता करने की कोशिश करते थे....

वैद्य चंद्र प्रकाश जी, मेरे मित्र वैद्य बालेंदु प्रकाश जी के पिताजी; जिनसे मुझे 1980 में उनके घर मेरठ पर मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक अत्यंत शील स्वभाव, उदार एवं सब के प्रति स्नेह की भावना से देखने वाले व्यक्ति थे। **उनके चेहरे पर मैंने कभी क्रोध के भाव नहीं देखे। सबसे बड़ी विनम्रता से बात करते थे और अपने रोगियों की हरदम सहायता करने की कोशिश करते थे।**

अपने हाथों से स्वयं दवा बनाते थे, और बहुत कम दाम में अपने मरीजों को देते थे। उनके मन में कभी लालच नहीं देखा। **रोगियों से स्पष्ट शब्दों में बात करते थे, यदि उनको लगता था कि इस रोगी को मेरी दवा से फायदा नहीं होगा, तो उसे मना कर आगे का रास्ता बताते थे।** यही प्रणाली वैद्य बालेंदु प्रकाश ने भी चलाई और मैं भी अपने चिकित्सा स्थान पर इसी बात का अनुसरण कर रहा हूँ।

वह बहुत ही सुलझे हुए तरीके से परिवार को चलाते थे। मैं शिमला का रहने वाला हूँ और चाय पीने की आदत है। **उनके घर पर दूध तो खूब मिलता था, परंतु चाय पत्ती कभी घर में नहीं आई।** उन्होंने बड़ी सात्विकता से अपना जीवन व्यतीत किया। हमेशा खादी व सूती कपड़े का प्रयोग करते थे। मैं इन्हें



बाऊजी कहकर पुकारता था और उनके साथ बिताए समय की एक स्मृति अपने समक्ष एक फोटो रखता हूं।

सभी बच्चों की खूब अच्छे से परवरिश किया और उच्च शिक्षा का ज्ञान दिया। वह हम सभी के लिए मार्गदर्शक रहे हैं और आज वह हम सबके बीच नहीं हैं, परंतु उनकी यादें और आत्मीयता आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही है।

वैद्य जी जिन ऊंचाइयों पर आज हैं, वह सब उनका आशीर्वाद बना हुआ है।

धन्यवाद

डॉ रविंद्र अमरीक,
नई दिल्ली

सरल-विनोदी स्वभाव के धनी

ये मेरा परम सौभाग्य है कि दिनांक 19.01.2020 को परम आदरणीय वैद्य श्री चंद्र प्रकाश जी के 100 वें जन्म दिवस के अवसर पर, उनके सानिध्य तथा स्नेह की छाया में व्यतीत हुए कुछ पलों की यादों को ताजा करने का शुभ अवसर मिला है।

हालांकि यह मेरा दुर्भाग्य था कि मैं उनके साथ जिंदगी के कुछ वर्ष ही व्यतीत कर सका, लेकिन यह भी मेरा सौभाग्य था कि मेरा घर वैद्य जी के घर के बराबर में था, जिससे मुझे उनका सानिध्य, आशीर्वाद और स्नेह ज्यादा प्राप्त हुआ। हालाँकि उस समय मेरी उम्र काफी छोटी थी। लेकिन आज भी वह पुरानी यादें मेरी आंखों के सामने किसी चलचित्र की भांति घूम रहे हैं। जिस समय मुझे उनका साथ प्राप्त हुआ उस समय हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ज्यादा खराब थी, लेकिन सर्व संपन्न होने के बावजूद वैद्य जी और उनके परिवार ने कभी हमें गरीब नहीं समझा और सदैव अपने बेटे की भांति स्नेह दिया।

मैं और मोहल्ले के अनेक बच्चे उनके घर में बिना पूछे गेट खोलकर छत पर चढ़कर शोर मचाते हुए पतंग उड़ाते थे। बच्चों से स्नेह होने की वजह से वैद्यजी ने कभी भी मना नहीं किया, अपितु बच्चे बनकर बच्चों को सहयोग दिया।

मुझे खूब याद आ रहा है कि उस समय उनके घर पर एक लैंडलाइन फोन था (जो कि उस समय मोहल्ले में गिने-चुने लोगों के पास था।) वैद्य जी ने कभी भी किसी को फोन करने के लिए मना नहीं किया। यह उनकी सहृदयता का परिचायक था। उनके दरवाज़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए सदैव खुले रहते थे।

और हां, वैद्य जी हाजमे का चूर्ण बहुत अच्छा बनाते थे और मोहल्ले के बच्चे खासतौर पर खूब खाते थे। मेरे पर उनका विशेष स्नेह था। वह मुझे प्यार से "मगरमच्छ" कहते थे (यह नाम मुझे उनके छोटे सुपुत्र श्री पूर्णेन्दु जी ने बचपन में दिया था)। उस समय वैद्य जी और उनका पूरा परिवार शायद मोहल्ले में काफी ज्यादा आर्थिक संपन्न और बौद्धिक रूप से सक्षम था, लेकिन उन्होंने कभी भी इस बात पर घमंड नहीं किया और सदैव समाज के हर कार्यों में तन, मन तथा धन से सहयोग देते थे।

वैद्य जी काफी वाकपटु, हाजिर जवाब तथा हंसमुख प्रवृत्ति के थे। वह कोई बात अपने मन में नहीं रखते थे। आज जब मैं उनके पुत्र वर्तमान में वैद्य श्री बालेंदु प्रकाश को देखता हूं तो मुझे बड़े वैद्य जी की याद आती है। मेरे घर मोहल्ला रामनगर में काफी कच्ची जमीन थी और उस पर अक्सर घी ग्वार तथा तुलसा जी पैदा हो जाया करते थे। बड़े वैद्य जी और छोटे वैद्य जी (श्री बालेंदु प्रकाश जी) हमेशा उसका प्रयोग दवाई बनाने में करते थे। वह लोग इतने सरल थे कि सारा कार्य अपने हाथों से करते थे। उनके घर की छत पर हमेशा भट्टी जलती रहती थी जिसमें दवाई बनती रहती थी।

वैद्य जी अपने परिवार के लिए पूरी तरह समर्पित थे। मैंने कभी भी उनको क्रोध में नहीं देखा। हमेशा खुश मिजाज तथा हास परिहास करते रहते थे। उनमें कोई ऐब नहीं। था। बस अपने पूरे जुनून के साथ वह अपने वैद्यक संबंधित कार्यों में मगन रहते थे। मुझे

याद नहीं पड़ता कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी डाँटा भी हो।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि वैद्य जी को परमात्मा ने इतनी शिफा दी थी कि उनके पास दूर-दूर से लोग आते थे। हिंदुस्तान की नामचीन शख्सियत हमारे मोहल्ले में आने लगी थी।

एक वक्त ऐसा आया था, कि मोहल्ले में आने वाला हर बाहरी आदमी वैद्य जी के पास आता था और हम बाहरी व्यक्ति के आने पर बिना पूछे इसे वैद्य जी के घर का पता बता देते थे। उस समय संचार माध्यम ना के बराबर थे, लेकिन उनके इलाज का ढंग और सौम्य व्यक्तित्व उनकी शख्सियत को चार चांद लगा रहा था। **वह गंभीर से गंभीर रोगी से भी हास-परिहास करते हुए उसका इलाज करते थे, जिससे मरीज कम से कम ५० प्रतिशत तो वैसे ही ठीक हो जाता था।**

आज भी इस वक्त जब मैं उन्हें याद कर रहा हूँ, तो सिर्फ एक चित्र दिखाई पड़ रहा है कि श्वेत धवल वस्त्र पहने हुए, मुस्कुराते हुए तखत पर बैठे हुए, खरल घोंटते हुए, पूरी तल्लीनता तथा हास्य परिहास के साथ मरीज को देखते हुए, दवाई की पुड़िया बनाते हुए।

आदरणीय वैद्य जी अगर पुनर्जन्म की अवधारणा सच है तो मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अगले जन्म में पुनः वैद्य जी का आशीर्वाद, सानिध्य तथा स्नेह प्राप्त हो।

हालांकि, मैं अपनी यादों को रोक नहीं पा रहा हूँ, लेकिन हर कार्य की अपनी कुछ सीमा होती है, इसलिए अंत में

"मोहल्ला रामनगर की जान
मेरठ शहर की आन
उत्तर प्रदेश की बान
हिंदुस्तान की शान
परम पूजनीय वैद्य जी महान"

संजय अग्रवाल
मेरठ

स्नेही सरल व्यवहार

पितृ तुल्य श्रद्धेय बाऊजी को कोटिशः नमन। आज इतने वर्षों बाद लेखनी से बाँधना एक असहज परिस्थिति में डाल दिया है।

उनका विनोदी स्वभाव, जिंदादिली, सरल व्यवहार, पुत्रवधू को बेटी समान स्नेह करना, उनका दृढ़ व्यक्तित्व ही था। भाग्यशाली हूँ, उनका यह प्यार मुझे मिला; हालांकि बहुत कम समय का सानिध्य पा सकी।

उनके साथ की एक घटना आज भी मुझे गुदगुदाती है एक डर, पशोपेश, अजीब भाव आज भी मेरे जेहन में सुरक्षित है। मेरे विवाहोपरांत अम्मा जी को कार्यवश बिहार जाना पड़ा। घर पर हम दोनों (पति-पत्नी) और बाऊजी थे। मैंने बाऊजी से पूछा क्या बनाऊं आज? बाबूजी बोले, "भिंडी की रसेदार सब्जी।" और इतना कहकर बाहर जगदीश सब्जी वाले से भिंडी खरीदने चले गए। हमेशा सुना है, पढ़ा है, भिंडी को धोकर, पोंछकर काटो, फिर पकाओ तो लिसलिसी नहीं बनेगी। अब! किससे पूछें, ये बात कि कैसे बनेगी? मोबाइल था नहीं कि झट किसी से फोन कर के पूछते या इंटरनेट पर देखते। हैरान-परेशान! इस परेशानी का निवारण पूज्या पूर्णिमा दीदी ने किया, जो अचानक घर आई थी। मुझे देख कर बोली, सब ठीक!

कोई परेशानी है क्या? मैंने डरते डरते अपनी परेशानी का जिक्र कर दिया। उन्होंने कहा, बस इतनी सी बात! कोई नहीं, तुम भिंडी काटो लंबाई में, बाकी में बनाती हूं। उन्होंने घी में जीरा, हींग डाला, भिंडी डाली, नमक डाला, थोड़ा चलाया और एक ग्लास पानी डाल दिया। बोली, हल्की आंच पर पकने दो और बाद में नींबू का रस डाल देना। हो गई, भिंडी की रसेदार सब्जी!

बाद में बाऊजी से बोली, "नई बहू से कोई ऐसी फरमाइश करता है? वो इतनी घबराई हुई थी।" बाऊजी की वो पोपली हंसी आज भी नहीं भूलती। मुझे देख-देख कर खूब हंसे। उनके लिए यह सब्जी कोई नई चीज नहीं थी, पर मेरे लिए एक नया अनुभव।

यह वाकया आज भी मुझे बरबस उनकी सादगी की याद दिलाती है। हमेशा कहते थे कि "मैं हूं ना तेरा बाप"। कॉलेज जाते समय रिक्शा बुला कर ला देना, साड़ी सूखने पर उठाकर तह लगा के रख देना, उनके सामने खड़े रहने पर यह कहना कि मारकर भागेगी क्या!

ऐसी कितनी ही छोटी-छोटी घटनाएं आज भी गुदगुदाती है। उनके जन्म शताब्दी पर उस कर्मठ, निष्ठावान, बेटी सदृश प्यार देने वाले श्रद्धेय बाऊजी को मेरा सादर प्रणाम।

गोपा इंदु
देहरादून

हँसमुख, स्पष्टवादी, खुद्दार : ऐसे मेरे फूफाजी



वे एक सरल, सहज, हंसमुख, खुशमिजाज, ईमानदार, सत्य एवं स्पष्टवादी और खुद्दार तथा दयालु भी थे। अपना सारा जीवन लोगों की सेवा में बिताया। उनके जीवन में कई तरह की बाधाएं आई। लेकिन आत्म शक्ति एवं विश्वास के बल पर सभी बाधाओं से संघर्ष करते हुए सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंचे। उन्होंने कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी पर शोध किया एवं इस रोग के इलाज के लिए दवा बनाई। उनकी बनाई दवा से कैंसर के ऐसे रोगी भी ठीक हुए, जिनका कैंसर के स्पेशलिस्ट डॉक्टरों ने यह कहते हुए इलाज से मना कर दिया था कि अब इनको इलाज कि नही, घर के माहौल की जरूरत है। इनकी अंतिम इच्छाएं पूरी कीजिए, यह चंद दिनों के मेहमान हैं। उनके आधीन किसी रोगी के मृत्यु हो जाने पर वे विचलित हो जाते थे। कई-कई दिनों तक ठीक से ना तो खाते थे

और ना सो पाते थे। वह अपने रोगी के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते थे। उनका स्नेह मुझे विशेष रूप से प्राप्त था। उनके स्नेह एवं प्यार के कारण जब मुझे मौका लगता था मैं बराबर मेरठ (उनके निवास स्थान) जाकर रहता था। वे अपनी पत्नी (मेरी बुआ जी) से बराबर मेरे पसंद की चीजें बनवाते थे। मेरी माँ बताती है कि मेरे पिताजी की तबीयत दो साल सन् 1948 एवं 1964 में बहुत खराब हो गई थी। तब (फूफा जी) के इलाज से वे ठीक हुए थे। मेरी अमिता भाभी जी बताती हैं, कि वे अच्छी चीजें खाना पसंद करते थे। जब वह मेरठ जाती थी, फूफा जी उनके द्वारा बनाए गए चने के दाल की पूड़ी खाना बहुत पसंद करते थे।

उनको हम सभी का शत् शत् नमन।

स्वर्गीय वैद्य चंद्र प्रकाश (फूफा जी) के 100 वें जन्मदिवस पर उद्‌गार के कुछ शब्द।

अजय अग्रवाल
मुज़फ्फरपुर

कुशल व्यवहार तथा सेवा प्रवृत्ति ही उनका व्यक्तित्व

उनकी शादी मेरी ननद शशि मुखी देवी (पुत्री, बिहार के गांधी स्व. लक्ष्मी नारायण जी) जिनको मैं बीबी कहती हूँ से हुई थी। शादी के उपरांत हम सभी लोग कई वर्षों तक यहां मुजफ्फरपुर के मकान में साथ-साथ रहे। बाद में वो मेरी ननद (अपनी पत्नी स्व शशि मुखी देवी) को लेकर अपने पैतृक गांव छबड़िया रहने चले गये थे। लेकिन उनका वहां मन नहीं लगा। अपने ससुर (स्व. लक्ष्मी नारायण जी के कहने पर वे पुनः मुजफ्फरपुर आ गये। इस बार उन्होंने अपना निवास स्थान मुजफ्फरपुर के बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ, कन्हौली के परिसर को चुना। वहां वो कई वर्षों तक रहे। वहीं उनको तीन पुत्रियों एवं एक पुत्र के पिता बनने का गौरव प्राप्त हुआ। अपने अच्छे एवं कुशल व्यवहार तथा सेवा प्रवृत्ति के कारण खादी ग्रामोद्योग संघ परिवार एवं अगर बगल में रहने वालों के बीच उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। वहां रहकर वे जरूरतमंद लोगों की आयुर्वेदिक चिकित्सा भी किया करते थे। उनके समय के जीवित मटुक पासवान (भारतीय जीवन बीमा निगम से अवकाश प्राप्त कर्मचारी), खादी ग्रामोद्योग संघ परिसर के निवासी, बताते हैं कि वैद्य जी कई तरह का अचार बनाते थे जो बहुत ही स्वादिष्ट एवं लज़ीज हुआ करता था। वे बताते हैं कि जब भी उनके घर जाने का मौका मिलता था वे बड़े आदर के साथ अपने यहाँ बिठाते थे तथा बहुत शौक से अचार खिलाते थे और घर ले जाने के लिए भी देते थे। वो बताते हैं कि उनके बनाए अचार का स्वाद आज भी याद आता है। ये उनके व्यक्तित्व एवं स्वभाव का एक छोटा सा उदाहरण है।

शशि प्रभा देवी
मुजफ्फरपुर

आयुर्वेद जगत के लिये शोधार्थी थे...

पुरानी यादें जो आज भी मेरे मानस पटल पर जीवित हैं- वो है पूज्य वैद्य चन्द्र प्रकाश जी द्वारा मेरी पत्नी विमला को नवजीवन देना। एक प्रकार से वैद्यजी मुझे पूर्वजन्म के ऋषि प्रतीत होते हैं, जो इस जन्म में कुछ मुझ जैसे भाग्यशाली लोगों को लाभान्वित करने के लिए इस धरती पर अवतरित हुए थे।

ऐसा ही एक चमत्कार उन्होंने मेरी पत्नी को पूर्ण रूप से स्वस्थ कर दिखाया था। सन् 1979, दिसम्बर में पूना से मेरठ स्थानान्तरण के दौरान, विमला को श्वास लेने में तकलीफ होने लगी। मामूली सी परेशानी समझकर हल्का-फुल्का इलाज किया। पर कुछ समय बाद इस रोग ने उग्रता पकड़ ली। विमला को साँस लेने के साथ-साथ अब दिल में भी दिक्कत होने लगी। उसकी दिल की धड़कने बढ़ने लगी।

यह सुनकर मैं विमला को लेकर वैद्यजी के पास गया। उन्होंने नब्ज (नाड़ी) देखी और बताया कि विमला के दिल की बाहरी सतह में सूजन है। हम वैद्यजी को जानते थे इसलिए उनसे बातचीत की और बिना दवाई लिए घर आ गए। वैद्यजी की खासियत थी, वह मरीज को जाँच लेते थे पर तब तक दवाई नहीं देते थे, जब तक मरीज स्वयं उनसे दवाई न माँगे। घर पहुँचते ही विमला मुझ पर गुस्सा हुई और दवाई नहीं माँगने की वजह पूछी। मैंने कहा उनके बताए रोग-निदान पर संदेह था। खैर,बात आई-गई हो गई। इसके बाद मेरठ के सभी प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित डॉक्टरों को दिखाया परन्तु विमला को कोई लाभ नहीं हुआ। उनकी हालत पहले से और खराब हो गई। आखिर गंभीर हालत में मुझे विमला को मेरठ कैंट के मिलिट्री हस्पताल में भर्ती करना पड़ा। यहाँ से उन्हें बेस हस्पताल दिल्ली कैंट भेजा गया। बेस हस्पताल दिल्ली में नियुक्त प्रसिद्ध न्यूरोसर्जन ब्रिगेडियर विरेन्द्र मोहन जी और उनके तीन हृदयरोग विशेषज्ञ और नर्सिंग ऑफिसर द्वारा सभी प्रकार चिकित्सीय जाँच कराए गए। दो दिन उपरान्त, डॉक्टरों ने कहा- सारी जाँच हो गई पर हम कोई निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए। पर अनुभव से यह सकता हूँ कि इनके हृदय की सतह में सूजन हो सकती है। यह कहकर उन्होने 15 दिन की दवा दी और फिर आने को कहा। मेरठ पहुँचने पर विमला ने दवाई खाने से मना कर दिया। वह दवा खा-खा कर ऊब चुकी थी। 3-4 दिन बाद उसकी हालत खराब होने लगी। उन्होने अन्न खाना छोड़ दिया। दो दिन बाद उनको केवल ताजे फलों का जूस दिया। कुछ दिन के बाद जूस लेना भी बन्द कर दिया। बड़ी मुश्किल से दो - तीन छोटे चम्मच पानी ही ले पातीं। पर कुछ समय में मूत्र में पानी भी निकल जाता। जब मैं आफिस से एक शाम वापिस आया तो मैंने देखा कि विमला का जबड़ा जबरन खोल कर पानी पिलाना पड़ रहा है। शरीर मे चेतना नहीं थी। आँखें पलट चुकी थीं। पूरी रात मैं उनके सिरहाने बैठा रहा। सुबह 4:30 बजते ही मैनें वैद्यजी के बारे में सोचा और अपने साले को उनके घर भेजा। वैद्यजी सुबह पाँच बजे आए, विमला की नब्ज़ देखी। विमला की नाड़ी कभी बहुत तेज़ और फिर एकदम शान्त हो जाती। वैद्यजी के चेहरे पर तनाव झलक रहा था। वैद्यजी कमरे से बाहर आए, कुछ देर तक आसमान की तरफ ताकते रहे, फिर कमरे में गए, अपने बक्से से पुड़िया निकालकर विमला

के मुँह मे डाल दी। कुछ देर बार विमला के शरीर मे चेतना आ गई। उनकी आँखें जो पलट गई थी सामान्य होने लगी। आधे घण्टे तक वैद्यजी निरीक्षण करते रहे फिर उन्होंने कहा - ''विमला को आधी रोटी आधा कप गर्म दूध के साथ खिलाओ।'' एक बार मन में आया कहूँ कि यह तो कुछ दिन से 2-3 चम्मच पानी भी नहीं ले पा रहीं है। पर मैंने चुप रहना ही उचित समझा। विमला को सीधा बिठाया, और हैरानी की बात यह थी कि वह एक बार में रोटी और दूध खाकर पुनः लेट गई। आधा घण्टा वैद्यजी ने इन्तजार किया और यह कहकर चले गए कि आकर मेरे दवाखाने से दवा ले जाना। इस घटनाक्रम के बाद विमला की सेहत में सुधार होने लगा। 16वें दिन हम दिल्ली बेस हस्पताल गए। बि. मोहन ने जाँचा और बताया कि विमला की हालत में काफी सुधार है। पूछा कितने दिन दवाई खिलाई? मैंने कहा एक दिन भी नहीं और मैंने उनको सारी बात बताई। यह सुनकर उन्होंने वैद्यजी से मिलने की उत्सुकता जताई पर किसी कारणवश यह कभी हो नहीं पाया। मेरा स्थानान्तरण सिक्किम हो गया। पर आठ महीने वैद्यजी की दवा चली और विमला पूर्णरूप से स्वस्थ हो गई। आज तक उन्हें उसके बाद कोई तकलीफ नहीं हुई। वैद्य जी को सधन्यवाद।

इसी प्रकार जिला गाजियाबाद, ग्राम भदौला के पैरालाइसिस ग्रसित श्री सेवाराम जी का भी उन्होने उपचार किया वह पूर्णतः स्वस्थ हो गए।

वैद्यजी ने कभी पैसे और नाम के लिए कार्य नहीं किया। वह एक शोधार्थी थे, आयुर्वेद जगत के लिए। उन्होंने कभी किसी अध्यापक, सेनाधिकारी से धन नहीं लिया। इनके प्रति वैद्यजी के मन में विशेष प्रेम था।

ऐसे थे हमारे पूज्य वैद्यजी। उन्हें मेरा एवं पूरे परिवार की ओर से शत्-शत् नमन।

लै. कर्नल पटेल सिंह वर्मा (सेवानिवृत्त)
देहरादून


पद्मश्री वैद्य बालेन्दु प्रकाश कृत्
"शशी-चन्द्र रसशाला"
का उद्घाटन
डा० दिनेश कटोच, सलाहकार आयुर्वे
आयुष मंत्रालय, भारत सरका
के कर कमलों द्वारा 14 मई, 20
को सम्पन्न हुआ।



आभार



डॉ किरण गुप्ता
दिल्ली
(पुत्री)



हिमांशु अग्रवाल
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया
(पुत्र)



मिथलेश अग्रवाल
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया
(पुत्रवधू)



वैद्य बालेंदु प्रकाश
देहरादून
(पुत्र)



पुर्णेन्दु गोयल
पुणे (पुत्र)



शशि प्रभा देवी
मुज़फ्फरपुर



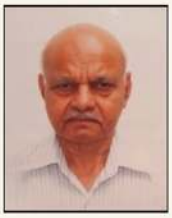
अजय अग्रवाल
मुज़फ्फरपुर



धर्मपाल गोयल
मेरठ (भतीजा)



गोपा इंदु
देहरादून
(पुत्रवधू)



ले.क. पटेल सिंह वर्मा
देहरादून
(पारिवारिक मित्र)



राधा कृष्ण गोयल
मेरठ
(पारिवारिक मित्र)



पृथ्वीराज सिंह
बनारस
(पारिवारिक मित्र)



डॉ रविंद्र अमरीक
दिल्ली
(पारिवारिक मित्र)



जितेंद्र गुप्ता
मेरठ (पड़ोसी)



मुकुल नाग
मुंबई
(पुत्रवधू के भाई)



विमला येरामिलि
मेरठ
(पारिवारिक मित्र)



अंजलि भार्गव
नैनीताल
(पारिवारिक मित्र)



संजय अग्रवाल
मेरठ
(पड़ोसी)



संतोष शर्मा
जयपुर
(पड़ोसी)



मेघा प्रकाश
देहरादून
(पौत्री)

"गीदड़ों को जिमाते रहो
एक दिन शेर भी जीमेंगे.....
– स्व. वैद्य चन्द्र प्रकाश जी"



Efforts never die .....

प्रकाशन
वैद्य चन्द्र प्रकाश कैंसर रिसर्च फाउन्डेशन, देहरादून।

विज्ञापन एवं मुद्रित सिक्का अक्सेसरीज प्रेस, देहरादून। फोन नं० 0135-2715748

चन्द्र स्मृति



स्व. वैद्य चन्द्र प्रकाश